विषय-सूची

रसखान

घनानंद

"इन मुसलमान हरिजनन पै कोटिन हिन्दू वारिये

भूमिका

महानुभाव रसखान जी की अनूठी कविता और अलौकिक प्रेम का वर्णन करने में कौन समर्थ है। बस, इतना ही कहा जा सकता है कि "यथानामस्तथागुणः"; परंतु कठिनाई यह है कि इनकी कविता इस समय दुष्प्राप्य क्या, अप्राप्य हो रही है।

श्री किशोरीलाल गोस्वामी के उद्योग से कभी एक संग्रह 'रसखान शतक' के नाम से खड्गविलास यंत्रालय, बाँकीपुर से निकला था परंतु इस समय वह भी नहीं मिलता। कदाचित् किसी महाशय के पास हो भी तो पता नहीं।

इसके पश्चात् सन् १८९१ ई० में इन्हीं गोस्वामी जी के ही उद्योग से भारतजीवन यंत्रालय से "सुजानरसखान" नामक एक ग्रंथ निकला था जो अब भी प्राप्त होता है। इस ग्रंथ में कवित्त, सवैया, सोरठा और दोहा लेकर इनकी कुल १२८ कविताएँ हैं।

तत्पश्चात् गोस्वामी जी ने इनकी 'प्रेमवाटिका" नाम की एक और छोटी सी पुस्तक निकाली जिसमें केवल ५३ दोहे प्रेम के ही ऊपर कहे हुए हैं। इसका प्रथम संस्करण

तो मेरे हरिप्रकाश यंत्रालय में ही हुआ था फिर दूसरी बार यह हितचिंतक यंत्रालय से प्रकाशित हुआ।

यह दो ग्रंथ तो श्री गोस्वामी जी की कृपा से हस्तगत हुए। इनके अतिरिक्त और भी इनकी रस भरी कविताएँ जहाँ तक इस समय प्राप्त हुईं सबका संग्रह कर प्रेमी पाठकों के अवलोकनार्थ अब 'काशी नागरीप्रचारिणी सभा' की आज्ञा और उत्साह से प्रकाशित किया जाता है।

इसमें कुछ सवैया भी, जो इस ग्रंथ से अतिरिक्त मिलीं, यथास्थान दे दी गई हैं तथा एक इनका हरिकीर्त्तन का पद भी इसमें सम्मिलित कर दिया है जिससे यह स्पष्ट है कि रसखान जी ने कुछ संगीत का विषय भी लिखा है और ये गान विद्या में भी निपुण थे। विशेष इस समय तक कुछ पता नहीं चलता। यदि और भी कुछ प्राप्त हुआ तो यथावसर प्रकाशित किया जायगा। अभी कुछ काल पाठकगण इतने ही रस के आस्वादन से संतोष करें। हाँ, यदि इस रसखान में से और भी कुछ रत्न प्राप्त हुए तो वे भी आप सज्जनों की भेंट किए जायँगे।

पाठकगण! जरा इसको चखिए तो सही। इस प्रेम-रस के आगे षटरस और नवरस सब फीके पड़ जायँगे।

अमीरसिंह

श्री श्रीरसखान जी का संक्षिप्त जीवनचरित्र

रसखान जी के समयनिरूपण में आजकल बहुत मतभेद है, जिसके मन में जो आता है वह लिख देता है पर अब वह संशय मिट गया। "प्रेमवाटिका" के अंतिम दोहे में यह कहा है—

बिधुसागर रस इंदु सुभ बरस सरस रसखानि।
प्रेमवाटिका रचि रुचिर चिर हिय हरष बखानि॥

इससे प्रेमवाटिका बनने का समय 'बिधुसागर रस इंदु' अर्थात् सं० १६७१ वैक्रमीय होता है, बस इसी के ३० या ४० वर्ष पूर्व इनका जन्म मान लिया जा सकता है। इन्होंने कितने ग्रंथ बनाए, इसका ठीक ठीक पता नहीं लगता। और इनकी वैकुंठप्राप्ति का समय भी इसी शताब्दी में माना जाता है, क्योंकि उस समय की एक घटना का वर्णन इनके दोहे में है और उसी में अपनी चरमावस्था का भी आभास दिया है जो प्रेमवाटिका देखने से मालूम होगा। कोई कोई इन्हें पिहानीवाले कहते हैं, पर वास्तव में ये दिल्ली के बादशाही वंश में थे। इनके भक्त होने के विषय में बहुत सी आख्यायिकाएँ प्रचलित हैं, उनमें से कई लिख देते हैं।

एक तो यह है कि ये जिस स्त्री पर आसक्त थे, वह बड़ी अभिमानिनी थी, इनका बड़ा तिरस्कार करती थी, पर ये उसके प्रेमी थे। एक दिन ये श्रीभागवत (जो कि फारसी में अनुवादित है) पढ़ रहे थे। उसमें गोपियों का विरह देखके इन्हें अपनी प्यारी पर घृणा और कृष्ण पर अनुराग हुआ; इन्होंने मन में निश्चय किया कि जिस पर हजारों गोपियाँ मरती हैं उसी से इश्क करेंगे। बस इसी में मस्त होके ये वृंदावन चले आए।

दूसरी यह है कि इन्हें एक प्रेमिनी ने ताना मारा था कि जैसा तुम हमें चाहते हो वैसा यदि उसे चाहते, जिसे लाखों गोपियाँ चाहती हैं, तो तुम कितने पागल हो जाते ? बस रसखान जी को चोट सी लगी और *'सब तजि हरि भज'* के अनुसार ये वृंदावन चले आए।

तीसरी यह है कि कहीं श्रीमद्भागवत की कथा होती थी, वहाँ पर श्रीकृष्णजी का सुंदर चित्र रखा था। उस मूर्त्ति को देखके ये मोहित हो गए और व्यासजी से पूछा कि यह साँवली सूरतवाला कहाँ रहता है ? और इसका नाम क्या है ? व्यास जी ने कहा, इनका नाम रसखान है और श्रीवृंदावन में रहते हैं। बस इतना सुनते ही ये वृंदावन चले आए। परंतु वहाँ जब इन्हें किसी ने मंदिरों में न जाने दिया तब ये अन्न जल छोड़ यमुना जी की रेती में बैठ उनका नाम ले के पुकारने लगे। सब कोई इन्हें पागल जान के दिक करने लगे। वस्तुतः

ये उस समय पागल हो चुके थे। अस्तु, तीसरे दिन भक्त-वत्सल भगवान् ने इन्हें दर्शन दे के कृतार्थ किया। धन्य प्रभो! "जात पाँत पूछै नहिं कोय। हरि को भजै सो हरि को होय॥" फिर बराबर इन्हें गोपी, ग्वाल और श्रीकृष्णजी के दर्शन होते थे। कहते हैं कि इनकी अंत्येष्टि क्रिया भी भगवा_ ही ने की थी। जो हो, पर इस प्रेमकहानी के अधिकारी प्रेमी जन ही हैं, और उन्हीं की समझ में यह बात समाएगी, और वे ही इसका तत्त्व समझ सकेंगे।

श्री राधाचरण गोस्वामी जी ने अपने बनाए 'नवभक्तमाल' में रसखान जी के विषय में इस प्रकार लिखा है—

"दिल्ली नगर निवास बादसा वंस बिभाकर।
चित्र देख मन हरो भरो पन प्रेम सुधाकर॥
श्रीगोवर्द्धन आय जबै दर्शन नहिं पाए।
टेढ़े मेढ़े वचन रचन निर्भय ह्वै गाए॥
तब आप आय सुमनाय कर सुश्रूषा महमान की।
कवि कौन मिताई कहि सकै श्रीनाथ साथ रसखान की॥

मित्रवर बाबू हरिश्चंद्र जी अपने बनाए उत्तरार्द्ध भक्तमाल में कई मुसलमान भक्तों के संग रसखानजी का भी स्मरण करते हैं—

अलीखान पाठानसुता सह ब्रज रखवारे।
सेख नबी रसखान मीर अहमद हरिप्यारे॥
निरमलदास कबीर ताजखाँ बेगम बारी।
तानसेन कृष्णदास बिजापुर नृपति दुलारी॥

पिरजादी बीबी रास्तो पदरज नित सिर धारिए।
इन मुसलमान हरिजनन पै कोटिन हिंदुन वारिए॥

"चौरासी वैष्णव और दो सौ बावन वैष्णव की वार्ता संग्रह' में रसखान जी की जीवनी इस भांति पाई जाती है और श्री राधाचरण गोस्वामी जी के छप्पय में भी इसी जीवनी क सारांश लक्षित होता है—

रसखान सैयद पठान जो एक साहूकार के छोरा प आसक्त हते सो वाके देखे बिना रह्यो न जातो और वा छोरा को जूठो आप खाते पीते। सो जाति के लोग सब निंदा करते, परंतु काहु की सुनैं नाहीं। सो यह प्रकार देख के एक वैष्णव ने माथा हिलायो नाक चढ़ायो। तब वैष्णव ने कह्यो, तुम या छोरा पै आसक्त हौ याते ऐसो मन प्रभु तें लगावते तो तुम्हारो काम ह्वै जातो। तब रसखान ने पूछ्यो, प्रभु कौन हैं? तब वैष्णव ने कही, जाकी यह सब विभूति है। तब रसखान ने पूछी, वे कहाँ रहते हैं? तब कह्यो ब्रज में रहत हैं। फेर वैष्णव ने अपनी पाग में तें एक श्रीजी को चित्र निकारि कै दरसन करायो सो चित्र में मुकुट काछनी को शृंगार हतो। सो दर्शन करत रसखान को मन वा छोरा तें फिरो और चित्र में लग्यो। तब नेत्रन तें आँसू की धारा चली। तब वहाँ तें ब्रज को आए और वा वैष्णव तें श्रीजी को चित्र माँग्यो। सो वैष्णव ने इनकूँ दैवी-जीव जानि चित्र दियो। तब रसखान सब देवालय में जाय दर्शन करो और वा चित्र को देख्यो, पर वा चित्र के समान

स्वरूप कहूँ न देख्यो। तब गिरिराज में आय श्रीजी के मंदिर में जाइवे लगे सो पैारिया ने धका मार निकास दियो, भीतर पैठवे न दियो। तब रसखान ने जान्यो जो महबूब याही मंदिर में है सो गोविंद कुंड पर जाय मंदिर की ओर टकटकी लगाय बैठे, जो बिना दर्शन करे अन्न जल कछु न लेउँगो। सो तीन दिन या भाँति बीते। तब श्रीजी को दया आई, जो यह भूखो मर जायगो, सो चित्र में जैसो शृंगार हुवो तैसो लाय ग्वाल गाय संग लै रसखान को दरसन दियो और वेणुनाद कियो। तब झट रसखान दरसन करत दैार के श्रीजी के पकरिवे को आयो, सो श्रीजी अंतर्धान होय गयो और श्री गुसाईं जी ते आय कह्यो जो एक दैवी-जीव बड़ो जात को तीन दिन तें भूखो गोविंद कुंड पर बैठ्यो है, सो मैंने वाको दर्शन दिए, सो मोकों स्पर्श करिवे को दैाड़्यो सो मैं भाजि आयो, तुमारो अंगीकार करे बिना मैं कैसे वाकूँ स्पर्श करूँ। जाको तुम नाम निवेदन कराओगे ताको मैं अंगीकार करूँगो सो सुनि तुरत श्री गुसाईं जी घोड़ा पै सवार होइके गोविंद कुंड पधारे। तब रसखान नै उठि ठाढ़ो होय श्री गुसाईं जी तें बिनतो कीनी जो या मंदिर में महबूब है सो तुमारो बड़ो मित्र है, तुम कृपा करि दरसन कराय मिलाओ तो बहुत अच्छी है। तब आपने रसखान को न्हाइवे की आज्ञा दीनी। पाछे नाम सुनाय श्रीजी के दरसन कराए। जब बाहर निकसिवे लगे तब श्रीनाथजी ने रसखान जी की बाँह पकरी कह्यो, अरे अब कहाँ जात है? पाछे ता दिन तें श्रीजी गोचारण

को पधारते तब रसखान को संग ले जाते । सो रसखान जैसी लीला के दरसन करते तैसी पर दोहा कवित्त करि सुनावते सो प्रभु प्रसन्न होते । प्रेमी जनन की बात न्यारी है उनकी बलिहारी है । अहा "इन मुसलमान हरिजनन पै कोटिन हिंदुन वारिए" ।

रसखान जी की एक यह भी कथा प्रसिद्ध है कि किसी समय यह अपनी रियासत से कई मुसल्मानों के साथ मक्के मदीने हज्ज करने जा रहे थे, बीच में ब्रज में ठहरे। वहाँ किसी प्रकार से इनको कृष्ण में इश्क हो गया। तब इन्होंने साथियों को यह कहकर कि 'मैं तो अब यहीं रहूँगा, आप लोग हज्ज को तशरीफ ले जायँ' विदा किया । आप वहीं रह गए ।

अस्तु, यह समाचार बादशाह तक पहुँचा और किसी ने उनसे भी आकर कह दिया कि बादशाह से किसी ने चुगली खाई कि वह तो 'काफिर' हो गया इसलिये आप सँभल जाइए, नहीं तो आपकी रियासत छिन जायगी । यह सुन आपने यह दोहा पढ़ा—

"कहा करै रसखान को कोऊ चुगुल लबार ।
जोपै राखनहार है माखन चाखनहार ॥१॥"

और उसी तरह ब्रज में बने रहे, कुछ भी परवाह न की ।

मंगलाचरण

मोहन-छवि रसखानि लखि, अब दृग अपने नाहिं ।
ऍंचे आवत धनुष से, छूटे सर से जाहिं ॥
बंक विलोकनि हँसनि मुरि, मधुर वैन रससानि ।
मिले रसिक रसराज दोउ, हरखि हिए रसखानि ॥
या छवि पै रसखानि अब, वारौं कोटि मनोज ।
जाकी उपमा कविन नहिं, पाई रहे सु खोज ॥
मोहन सुंदर स्याम को, देख्यो रूप अपार ।
हिय जिय नैननि मैं वस्यौ, वह ब्रजराज-कुमार ॥

रसखान

सदा फूली फली और हरी भरी

प्रेमवाटिका

दोहे

प्रेम-अयनि श्रीराधिका, प्रेम-बरन नँदनंद।
'प्रेमवाटिका' के दोऊ, माली-मालिन-द्वंद ॥ १ ॥

प्रेम प्रेम सब कोउ कहत, प्रेम न जानत कोय।
जो जन जानै प्रेम तो, मरै जगत क्यों रोय ॥ २ ॥

प्रेम अगम अनुपम अमित, सागर-सरिस बखान।
जो आवत एहि ढिग, बहुरि, जात नाहिं रसखान ॥ ३ ॥

प्रेम-बारुनी छानिकै, बरुन भए जलधीस।
प्रेमहिं तें बिष पान करि, पूजे जात गिरीस ॥ ४ ॥

प्रेमरूप दर्पन अहो, रचै अजूबो खेल।
यामें अपनो रूप कछु, लखि परिहै अनमेल ॥ ५ ॥

कमलतंतु सो छीन अरु, कठिन खड़ग की धार।
अति सूधो टेढ़ो बहुरि, प्रेमपंथ अनिवार ॥ ६ ॥

लोक-वेद-मरजाद सब, लाज, काज, संदेह।
देत बहाए प्रेम करि, विधि-निषेध को नेह ॥ ७
कबहुँ न जा पथ भ्रम-तिमिर, रहै सदा सुखचंद।
दिन दिन बाढ़तही रहै, होत कबहुँ नहिं मंद ॥ ८।
भले वृथा करि पचि मरौ, ज्ञान-गरूर बढ़ाय।
बिना प्रेम फीको सबै, कोटिन किए उपाय ॥ ९।
श्रुति, पुरान, आगम, स्मृतिहि, प्रेम सबहिं को सार।
प्रेम बिना नहिं उपज हिय, प्रेम-बीज अँकुवार ॥१०।
आनँद-अनुभव होत नहिं, बिना प्रेम जग जान।
कै वह विषयानंद, कै, ब्रह्मानंद बखान ॥११॥
ज्ञान, कर्मऽरु, उपासना, सब अहमिति को मूल।
दृढ़ निश्चय नहिं होत बिन, किए प्रेम अनुकूल ॥१२॥
शास्त्रन पढ़ि पंडित भए, कै मौलवी कुरान।
जुपै प्रेम जान्यों नहीं, कहा कियो रसखान ॥१३॥
काम, क्रोध, मद, मोह, भय, लोभ, द्रोह, मात्सर्य।
इन सबही तें प्रेम है, परे, कहत मुनिवर्य ॥१४॥
बिनु गुन जोबन रूप धन, बिनु स्वारथ हित जानि।
शुद्ध, कामना तें रहित, प्रेम सकल-रस-खानि ॥१५॥
अति सूछम कोमल अतिहि, अति पतरो अति दूर।
प्रेम कठिन सबतें सदा, नित इकरस भरपूर ॥१६॥
जग मैं सब जान्यौ परै, अरु सब कहै कहाय।
पै जगदीसऽरु प्रेम यह, दोऊ अकथ लखाय ॥१७॥

जेहि बिनु जाने कछुहि नहिं, जान्यौं जात बिसेस।
सोइ प्रेम, जेहि जानिकै, रहि न जात कछु सेस ॥१८॥
दंपतिसुख अरु विषयरस, पूजा, निष्ठा, ध्यान।
इनतें परे बखानिए, शुद्ध प्रेम रसखान ॥१९॥
मित्र, कलत्र, सुबन्धु, सुत, इनमें सहज सनेह
शुद्ध प्रेम इनमें नहीं, अकथकथा सविसेह ॥२०॥
इकअंगी बिनु कारनहिं, इकरस सदा समान।
गनै प्रियहि सर्वस्व जो, सोई प्रेम प्रमान ॥२१॥
डरै सदा, चाहै न कछु, सहै सबै जो होय।
रहै एकरस चाहिकै, प्रेम बखानौ सोय ॥२२॥
प्रेम प्रेम सब कोउ कहै, कठिन प्रेम की फाँस।
प्रान तरफि निकरै नहीं, केवल चलत उसाँस ॥२३॥
प्रेम हरी को रूप है, त्यों हरि प्रेमसरूप।
एक होइ द्वै यों लसैं, ज्यौं सूरज अरु धूप ॥२४॥
ज्ञान, ध्यान, विद्या, मती, मत, बिस्वास, बिवेक।
बिना प्रेम सब धूर है, अग जग एक अनेक ॥२५॥
प्रेमफाँस में फँसि मरै सोई जिए सदाहि।
प्रेममरम जाने बिना, मरि कोउ जीवत नाहिं ॥२६॥
जग मैं सबतें अधिक अति, ममता तनहिं लखाय
पै या तनहूँ तें अधिक, प्यारो, प्रेम कहाय ॥२७॥
जेहि पाए बैकुंठ अरु, हरिहूँ की नहिं चाहि।
सोइ अलौकिक, शुद्ध, शुभ, सरस, सुप्रेम कहाहि ॥२८॥

कोउ याहि फाँसी कहत, कोउ कहत तरवार।
नेजा, भाला, तीर, कोउ—कहत अनोखी ढार ॥२९॥
पै मिठास या मार के, रोम रोम भरपूर।
मरत जियै, झुकतो थिरै, बनै सु चकनाचूर ॥३०॥
पै एतो हूँ हम सुन्यो, प्रेम अजूबो खेल।
जाँबाजी बाजी जहाँ, दिल का दिल से मेल ॥३१॥
सिर काटो, छेदो हियो, टूक टूक करि देहु।
पै याके बदले बिहँसि, वाह वाह ही लेहु ॥३२॥
अकथ-कहानी प्रेम की, जानत लैली खूब।
दो तनहूँ जहँ एक भे, मन मिलाइ महबूब ॥३३॥
दो मन इक होते सुन्यो, पै वह प्रेम न आहि।
होइ जबै द्वै तनहुँ इक, सोई प्रेम कहाहि ॥३४॥
याही तें सब मुक्ति तें, लही बड़ाई प्रेम।
प्रेम भए, नस जाहि सब, बँधे जगत के नेम ॥३५॥
हरि के सब आधीन, पै, हरी प्रेम-आधीन।
याही तें हरि आपुहीं, याहि बड़प्पन दीन ॥३६॥
वेद-मूल सब धर्म, यह, कहै सबै श्रुतिसार।
परमधर्म है ताहु तें, प्रेम एक अनिवार ॥३७॥
जदपि जसोदानंद अरु, ग्वालबाल सब धन्य।
पै या जग में प्रेम को, गोपी भईं अनन्य ॥३८॥
वा रस की कछु माधुरी, ऊधो लही सराहि।
पावै बहुरि मिठास अस, अब दूजो को आहि ॥३९॥

श्रवन, कीरतन, दरसनहिं, जो उपजत सोइ प्रेम।
शुद्धाशुद्ध बिभेद तें, द्वै बिध ताके नेम॥४०॥
स्वारथमूल अशुद्ध त्यों, शुद्ध स्वभावऽनुकूल।
नारदादि प्रस्तार करि, कियो जाहि को तूल॥४१॥
रसमय, स्वाभाविक, बिना-स्वारथ, अचल, महान।
सदा एकरस, शुद्ध सोइ, प्रेम अहै रसखान॥४२॥
जातें उपजत प्रेम सोइ, बीज कहावत प्रेम।
जामें उपजत प्रेम सोइ, क्षेत्र कहावत प्रेम॥४३॥
जातें पनपत, बढ़त, अरु, फूलत फलत महान।
सो सब प्रेमहिं प्रेम यह, कहत रसिक रसखान॥४४॥
वही बीज, अंकुर वही, सेक वही आधार।
डाल पात फल फूल सब, वही प्रेम सुखसार॥४५॥
जो, जातें, जामें, बहुरि, जा हित कहियत बेस।
सो सब, प्रेमहिं प्रेम है, जग रसखान असेस॥४६॥
कारज-कारन रूप, यह, प्रेम अहै रसखान।
कर्ता, कर्म, क्रिया, करन, आपहि प्रेम बखान॥४७॥
देखि गदर हित साहबी, दिल्ली नगर मसान।
छिनहिं बादसा-बंस की, ठसक छाँरि रसखान॥४८॥
प्रेमनिकेतन श्रीबनहिं, आइ गोबर्धन-धाम।
लह्यो सरन चित चाहि कै, जुगलस्वरूप ललाम॥४९॥
तोरि मानिनी तें हियो, फोरि मोहिनी-मान।
प्रेमदेव की छबिहि लखि, भए मियाँ रसखान॥५०॥

बिधु, सागर, रस, इंदु सुभ, बरस सरस रसखा
'प्रेमवाटिका' रचि रुचिर, चिर हिय हरख बरा
अरपी ' श्रीहरिचरनजुग, पदुमपराग निह
बिचरहि यामें रसिकवर, मधुकर-निकर अपा

प्रेमपूरन

राधामाधव सखिन सँग, बिहरत कुंज-कुटी
रसिकराज रसखानि जहँ, कूजत कोइल की

श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः

सुजान-रसखान

सवैया

मानुष हौं तो वही रसखानि बसौं ब्रज* गोकुल गाँव के ग्वारन ।
जो पशु हौं तौ कहा बस मेरो चरौं नित नन्द की धेनु मँझारन ॥
पाहन हौं तौ वही गिरि को जो धर्‌यो† कर छत्र पुरन्दर धारन ।
जो खग हौं तौ बसेरो करौं मिलि‡ कालिंदी कूल कदंब की डारन॥१॥

या§ लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूँ पुर को तजि डारौं ।
आठहुँ सिद्धि नवो निधि को सुख नंद की गाइ चराइ बिसारौं ॥
रसखानि¶ कबौं इन आँखिन सों ब्रज के बन बाग तड़ाग निहारौं ।
कोटि‖ करौं कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारौं ॥२॥

मोरपखा सिर ऊपर राखिहौं गुंज की माल गरें पहिरौंगी ।
ओढ़ि पितंबर लै लकुटी बन गोधन ग्वारनि संग फिरौंगी ॥
भावतो वोहि × मेरो रसखानि सो तेरे कहे सब स्वांग करौंगी ।
या मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी ॥३॥

एक समैं मुरली धुनि मैं रसखानि लियो कहुँ नाम हमारो ।
ता दिन तें परि बैरी बिसासिनी झाँकन देती नहीं है दुवारो ॥

पाठांतर—* नित । † किया ब्रज छत्र पुरंदर धारन । ‡ वही ।
§ वा । ¶ ए रसखान जबै इन नैनन तें ब्रज के बनबाग निहारो ।
‖ कोटि कई कलधौत के धाम करील की कुंजन ऊपर वारौं । × है तू ।

होत चवाव बचाओ सु क्योंकरि क्यों अलि भेंटिए प्रान पियारो।
दृष्टि परी तबहीं चटको अटको हियरे पियरे पटवारो ॥ ४ ॥

गावैं गुनी गनिका गंधर्व औ सारद सेस सबै गुन गावत।
नाम अनंत गनंत गनेस ज्यौं ब्रह्मा त्रिलोचन पार न पावत ॥
जोगी जती तपसी अरु सिद्ध निरंतर जाहि समाधि लगावत।
ताहि अहीर कि छोहरियां छछिया भरि छाछ पै नाच नचावत॥५॥

खेलत भाग सुहाग भरी अनुरागहि लालन को धरि कै।
मारत कुंकुम केसरि के पिचकारिन में रँग को भरि कै ॥
गेरत लाल गुलाल लली मनमोहिनि मौज मिटा करि कै।
जात चली रसखानि अली मदमस्त मनी मन को हरि कै ॥६॥

कान्ह भए बस बाँसुरी के अब कौन सखी हमको चहिहै।
निस द्यौस रहै सँग साथ लगी यह सौतिन तापन क्यों सहिहै ॥
जिन मोहि लियो मनमोहन को रसखानि सदा हमको दहिहै।
मिलि आओ सबै सखी भाग चलैं अब तो ब्रज में बँसुरी रहिहै॥७॥

काह कहूँ सजनी सँग की रजनी नित बीतै मुकुंद को हेरी।
आवन रोज कहैं मनभावन आवन की न कबौं करी फेरी ॥
सौतिन भाग बढ्यो ब्रज में जिन लूटत हैं निसि रंग घनेरी।
मो रसखानि लिखी बिधना मन मारिकै आपु बनी हौं अहेरी॥८॥

कौन ठगौरी भरी हरि आजु बजाई है बाँसुरिया रँग* भीनी।
तान सुनी जिनहीं तिनहीं तबहीं† तिन लाज बिदा कर दीनी ॥

पाठांतर— * रस। † सबही।

घूमै घड़ो* घड़ो नंद के द्वार नवीनी कहा कहैं बाल प्रवीनी ।
या ब्रजमंडल में रसखानि सु कौन भटू जो लटू नहिं कीनी ॥९॥
आजु गई हुती भोरही हौं रसखानि रई कहि नंद के भौनहिं ।
वाको जियौ जुग लाख करोर जसोमति को सुख जात कह्यो नहिं ॥
तेल लगाइ लगाइ कै अंजन भौंह बनाइ बनाइ डिठौनहिं ।
डालि हमेलनि हार निहारत वारत ज्यौं चुचकारत छौनहिं॥१०॥
बंसी बजावत आनि कढो सो गली मे अली कछु टोना सो डारै ।
हेरि चितै तिरछी करि दृष्टि चलो गयो मोहन मूठि सी मारै ॥
ताही घरी सो परी धरी सेज पै प्यारी न बोलति प्रानहूँ वारै ।
राधिका जीहै तौ जीहैं सबै न तौ पीहैं हलाहल नंद के द्वारै ॥११॥
एक तैं एक लौं काननि मैं रहैं ढीठ सखा सब लीने कन्हाई ।
आवतही हौं कहाँ लौं कहौं कोउ कैसे सहै अति की अधिकाई ॥
खायो दही मेरो भाजन फोरयो न छोड़त चीर दिवावै दुहाई ।
रसखानि तिहारी सौं एरी जसोमति भागि मरू करि छूटन पाई॥१२॥
लोक की लाज तजी तबहीं जब देख्यो सखी ब्रजचंद सलोनो ।
खंजन मीन सरोजन की छबि गंजन नैन लला दिनहोनो ॥
रसखानि निहारि सकैं जु सम्हारि कै को तिय है वह रूप सुठौनो ।
भौंह कमान सों जोहन को सर बेधत प्राननि नंद को छौनो ॥१३॥
मंजु मनोहर मूरि लखै तबहीं सबहीं पतहीं तज दीनी ।
प्रान पखेरू परे तलफैं वह रूप के जाल में आस अधीनी ॥

पाठांतर—* खरी खरी ।

आँख सों आँख लड़ी जबहीं तब में ये रहैं अँसुआ रँग भीनो
या रसखानि अधीन भईं सब गोपलली तजि लाज नवीनी ॥१४॥
सुन री पिय मोहन की बतियाँ अति ढीठ भयो नहिं कानि करै
निसि बासर औसर देत नहीं छिनहीं छिन द्वारेहि आनि अरै।
निकसौ मति नागरि डौंड़ो बजो ब्रजमंडल में इह कौन भरै।
अब रूप की रौर परी रसखानि रहै तिय कोऊ न माँझ घरै ॥१५॥
आगन काहू को जाओ पिया घर बैठेही बाग लगाय दिखाऊँ।
एड़ी अनार सी मौर रही बहियाँ दोउ चंपे सी डार नवाऊँ ॥
छातिन में रस के निबुआ अरु घूँघट खोलि कै दाख चखाऊँ।
टांगन के रस के चसके रति फूलनि की रसखानि लुटाऊँ ॥१६॥
अंगनि अंग मिलाय दोऊ रसखानि रहे लपटे तरु छाँहीं।
संग निसंग अनंग को रंग सुरंग मनो पिय दै गल बाँहीं ॥
बैन ज्यों मैन सु ऐन सनेह को लूटि रहे रति अंतर जाहीं।
नीबी गहै कुच कंचन कुंभ कहै बनिता पिय नाहीं जू नाहीं ॥१७॥
धूर भरे अति शोभित स्याम जू तैसी बनी सिर सुंदर चोटी।
खेलत खात फिरैं अँगना पग पैजनी बाजती पीरी कछोटी ॥
वा छवि को रसखानि विलोकत वारत काम कला निज कोटी।
काग के भाग बड़े सजनी हरि हाथ सों लै गयो माखन रोटी॥१८॥
आयो हुतो नियरें रसखानि कहा कहूँ तू न गई वह ठैंया।
या ब्रज में सिगरी बनिता सब वारति प्राननि लेत बलैया ॥
कोऊ न काहू की कानि करै कछु चेटक सो जु करयो जदुरैया।
गाइगो तान जमाइगो नेह रिझाइगो प्रान चराइगो गैया ॥१९॥

बारहीं गोरस बेंचि री आजु तूँ माइ कै मूड़ चढ़ै कत मौड़ी ।
आवत जात लौं होयगी साँझ भटू जमुना भतरौंड़ लौं औड़ी ॥
ऐसे में भेंटतही रसखानि ह्वैहैं अँखियाँ बिन काज कनौड़ी ।
एरी बलाइ ल्यों जाइगी बाज अबै ब्रजराज सनेह की डौंड़ी॥२०॥
सोहत हैं चँदवा सिर मोर के जैसियै सुंदर पाग कसी है ।
तैसियै गोरज भाल बिराजति जैसी हिये बनमाल लसी है ॥
रसखानि बिलोकत बौरी भई दृग मूँदि कै ग्वालि पुकारि हँसी है।
खोलि री घूँघट खोलौं कहा वह मूरति नैनन माँझ बसी है ॥२१॥
भौंह भरी सुथरी बरुनी अति ही अधरानि रँगी रँग रातो ।
कुंडल लोल कपोल महाछवि कुंजनि तें निकस्यो मुसिकातो ॥
रसखानि लखे मग छूटि गयो डग भूलि गई तन की सुधि सातो।
फूटि गयो दधि को सिरभाजन टूटिगो नैननि लाज को नातो॥२२॥
अँखियाँ अँखियाँ सों सकाय मिलाय हिलाय रिझाय हियो भरिबो*।
बतिया चितचोरन चेटक सी रस चारु चरित्रन ऊँचरिबो ॥
रसखानि के प्रान सुधा भरिबो† अधरान पै त्यों अधरा धरिबो ।
इतने सब मैन के मोहनी जंत्र पै मंत्र बसीकर सी करिबो॥२३॥
जादिन तें निरख्यो नदनंदन कानि तजी घर बंधन छूट्यौ ।
चारु बिलोकनि की निसि मार सम्हार गई मन मार ने लूट्यौ ॥
सागर कों सरिता जिमि धावत रोकि रहे कुल को पुल टूट्यौ ।
मत्त भयो मन संग फिरै रसखानि सरूप सुधारस घूट्यौ ॥२४॥

पाठांतर—* हरिबो । † धरिबो ।

कल कानन कुंडल मोरपखा उर पै' बनमाल विराजति है।
मुरली कर मैं अधरा मुसकानि तरंग महाछबि छाजति है॥
रसखानि लखै तन पीतपटा मत दामिनी की दुति लाजति है।
वह बाँसुरी की धुनि कान परैं कुलकानि हियो तजि भाजति है॥२५॥
बाँकी बिलोकनि रंग भरी रसखानि खरी मुसकानि सुहाई।
बोलत बैन अमीनिधि चैन महारस ऐन सुने सुखदाई॥
सजनी बन तें पुर बीथिन में पिय गोहन लागो फिरै मेरि माई।
बाँसुरी टेर सुनाइ अली अपनाइ लई ब्रजराज कन्हाई॥ २६॥
एक समै इक गोपबधू भई बावरी नेकु न अंग सम्हारै।
माय सुधाय कै टोना सों ढूँढ़ति सासु सयानी सयानी पुकारै॥
यों रसखानि कहै सिगरो ब्रज आन को आन उपाय बिचारै।
कोऊ न मोहन के कर तें यह बैरिनि बाँसुरिया गहि डारै॥२७॥
ब्रह्म मैं ढूँढ़्यो पुरानन गानन बेद रिचा सुनि चौगुने चायन।
देख्यो सुन्यो कबहूँ न कितूं वह कैसे सरूप औ कैसे सुभायन॥
टेरत हेरत हारि परयो रसखानि बतायो न लोग लुगायन।
देखो दुरो वह कुंजकुटीर मैं बैठो पलोटत राधिका पायन॥२८॥
देखन को सखी नैन भए न सने तन आवत गाइन पाछैं।
कान भए इन बातन के सुनिबे कौं अमीनिधि बोलन आछैं॥
पै सजनी न सम्हारि परै वह बाँकी बिलोकन कोर कटाछैं।
भूलि गयो न हियो मेरी आली जहाँ पिय गोखन काछिनी काछैं॥२९॥
खंजन नैन फँदे पिंजरा छबि नाहि रहै थिर कैसहूँ माई।
छूटि गई कुलकानि सखी रसखानि लखी मुसिकानि सुहाई॥

मित्र कहे से रहैं मेरे नैन न प्रेम कहै मुख दीनी दुहाई।
कैसी करौं जिन जाव अली सब बोलि कहैं यह बावरी आई॥२०॥
उनही के सनेहन सानी रहैं उनही के जु नेह दिवानी रहैं।
उनहीं की सुनें न औ बैन त्यों सैन सों चैन अनेकन ठानी रहैं॥
उनहीं सँग डोलन में रसखानि सबै सुख सिंधु अघानी रहैं।
उनहीं बिन ज्यों जलहीन ह्वै मीन सी आँखि मेरी अँसुवानी रहैं॥२१॥
गनेस महेस दिनेस सुरेसहु जाहि निरंतर गावैं।
जाहि अनादि अनंत अखंड अछेद अभेद सुबेद बतावैं॥
नारद से सुक व्यास रहैं पचि हारे तऊ पुनि पार न पावैं।
ताहि अहीर की छोहरिया छछिया भरि छाछ पै नाच नचावैं।३२।
संकर से सुर जाहि भजैं चतुरानन ध्यान में धर्म बढ़ावैं।
नेक हिये में जो आवतही रसखान महाजड़ मूढ़ कहावैं॥
जा पर सुंदर देववधू नहिं वारत प्रान अवार लगावैं।
ताहि अहीर की छोहरिया छछिया भरि छाछ पै नाच नचावैं।३३।
दोउ कानन कुंडल मोरपखा सिर सोहै दुकूल नयो चटको।
मनिहार गरे सुकुमार धरे नट भेस अरे पिय को टटको॥
सुभ काछनी बैजनी पैजनी पायन आनन मैं न लगी झटको।
वह सुंदर को रसखानि अली जु गलीन मैं आइ अबै अटको॥३४॥
बंक बिलोकनि है दुखमोचन दीरघ लोचन रंग भरे हैं।
घूमत वारुनी पान किये जिमि झूमत आनन रंग ढरे हैं॥
गंडनि पै झिलकै छवि कुंडल नागरि नैन बिलोकि अरे हैं।
रसखानि हरैं ब्रजबालनि को मन ईषत् हासि के पानि परे हैं।३५॥

अति लोक की लाज समूह मैं घेरिके राखि थकी सब संकट सों
पल मैं कुलकानि की मेंड़ नखी नहि रोकी रुकी पल के पट सों
रसखानि सों केतो उचाटि रही उचटी न सँकोच की श्रौचट सों
अलि कोटि कियो हटकी न रही अँटकी अँगिया लटकी लट सों।३
आजु सखी नँदनंदन री तकि ठाढ़ो है कुंजनि की परछाहीं
नैन बिसाल की जोहन को सर बेधि गयो हियरा जिय माहीं।
घाइल घूमि सुमार गिरी रसखानि सँभारत अंगन नाहीं
तापर वा मुसिकानि की डौंड़ी बजी ब्रज मैं अबला कित जाहीं॥३७
जा दिन तें मुसिकानि चुभी उर ता दिन तें जु भई बनवारी।
कुंडल लोल कपोल महा छवि कुंजन तें निकस्यो सुखकारी॥
हौं सखी आवतही बगरै पग पैंड तजी रिझई बनवारी।
रसखानि परी मुसकानि के पानिन कौन गहै कुल कानि बिचारी।३८
मैन मनोहर बैन बजै सु सजे तन सोहत पीत पटा है।
यों दमकै चमकै झमकै दुति दामिनि की मनो स्याम छटा है॥
ए सजनी ब्रजराजकुमार अटा चढ़ि फेरत लाल बटा है।
रसखानि महामधुरी मुख की मुसकानि करै कुलकानि कटा है।३९
सुंदर स्याम सिरोमनि मोहन जोहन मैं चित चोरत है।
बाँके बिलोकनि की अवलोकनि नोकनि कै दृग जोरत है॥
रसखानि महावर रूप सलोने को मारग तैं मन मोरत है।
ग्रहकाज समाज सबै कुल लाज लला ब्रजराज को तोरत है।४०।
नैननि बंकनि साल के बानलि झेलि सकै अस कौन नवेली।
बेधत है हिय तीछन कोर सुमारि गिरीं तिय कोटिक हेली॥

दोहा

जोहन नंदकुमार कों, गई नंद के गेह।
मोहि देखि मुसिकाइ कै, बरस्यो मेह सनेह ॥ ४६ ॥
स्याम सघन घन घेरि कै, रस बरस्यो रसखानि।
भई दिमानी पान करि, प्रेम मद्य मनमानि ॥ ५० ॥

सोरठा

अरी अनोखी बाम, तूं आई गौने नई।
बाहर धरसि न पाम, है छलिया तुव ताक मैं ॥ ५१॥

सवैया

नैन लख्यो जब कुंजन तें बन तें निकस्यो अँटक्यो मटक्यो री।
सोहत कैसो हरा टटकौ अरु जैसो किरीट लग्यो लटक्यो री ॥
रसखानि रहै अँटक्यो हटक्यो ब्रजलोग फिरैं भटक्यो भटक्यो री।
रूप मधै हरि वा नट को हियरे फटक्यो भटक्यो अँटक्यो री॥५२॥

कवित्त

दूध दुह्यो सीरो परो तातो न जमायो करो
जामन दयो सो धरो धरोई खटाइगो।
आन हाथ आन पाइ सबही के तबहीं तें
जबहीं तें रसखानि तानन सुनाइगो ॥
ज्यौंहीं नर त्यौंहीं नारी तैसी ये तरुन वारी
कहिए कहा री सब ब्रज बिललाइगो।
जानिए न आली यह छोहरा जसोमति को
बाँसुरी बजाइगो कि विष बगराइगो ॥५३॥

वा दिन सों कछु टोना सों कै रसखानि हिये में समाइ गयो है।
कोउ न काहु की कानि करै सिगरो ब्रज बीर बिकाइ गयो है ॥५७॥
रंग भरयो मुसकात लला निकरयो कल कुंजनि तें सुखदाई।
मैं तबहीं निकसी घरतें तकि नैन बिसाल की चोट चलाई॥
रसखानि सो घूमि गिरी धरती हरिनी जिमि बान लगे गिरि जाई
टूटि गयो घर को सब बंधन छूटि गो आरज लाज बड़ाई॥५८॥
हेरत बारहीं बार उतै तुव बावरी बाल कहाधौं करैंगी।
जौं कबहूँ रसखानि लखै फिर क्यों हू न बीर री धीर धरैंगी॥
मानि है काहू की कानि नहीं जब रूप ठगी हरि रंग ढरैंगी।
याते कहूँ सिख मानि भटू यह हेरनि तेरेही पैंड़ परैंगी॥५९॥

कवित्त

एरी आजु काल्हि सब लोक लाज त्यागि दोऊ
सीखे हैं सबै बिधि सनेह सरसाइबो।
यह रसखान दिना द्वै में बात फैलि जैहै
कहाँ लौं सयानी चंदा हाथन छिपाइबो॥
आजु हौं निहारयो बीर निपट कलिंदी तीर
दोउन को दोउन सौं मुरि मुसकाइबो।
दोउ परैं पैयाँ दोऊ लेत हैं बलैयाँ इन्हें
भूलि गईं गैयाँ उन्हें गागर उठाइबो॥६०॥

सवैया

आजु भटू इक गोपबधू भई बावरी नेकु न अंग सम्हारै।
मात अघात न देवनि पूजत सासु सयानी सयानी पुकारै॥

यों रसखानि धिरगो सिगरो ब्रज कौन को कौन उपाय विचारै ।
कोउ न कान्हर के कर तें वह वैरिनि बाँसुरिया गहि जारै ॥६१॥
मकराकृत कुंडल गुंज की माल वे लाल लसैं पग पाँवरिया ।
बछरानि चरावन के मिस भावतो दै गयो भावती भाँवरिया ॥
रसखानि बिलोकत ही सिगरी भईं बावरिया ब्रज डावरिया ।
सजनी इहिं गोकुल मैं बिष सो बगरायो है नंदके साँवरिया ॥६२॥
आजु भटू इक गोपकुमार ने रास रच्यो इक गोप के द्वारैं ।
सुंदर बानिक सों रसखानि बन्यो वह छोहरा भाग हमारैं ॥
ए बिधना जो हमैं हँसतीं अब नेकु कहूँ उनके पग धारैं ।
ताहि बदौं फिरि आवै घरै बिनहीं तन औ मन जोवन वारैं ॥६३॥
वा मुसकान पै प्रान दियो जिय जान दियो वह तान पै प्यारी ।
मान दियो मन मानिक के सँग वा मुख मंजु पै जोवन वारी ॥
वा तन को रसखानि पै री तन ताहि दियो नहि ध्यान बिचारी
सो मुह मोहि करी अब का इहा लाल लै आज समाज मैं ख्वारी६४

कवित्त

गोरज बिराजै भाल लहलही बनमाल
आगे गैया पाछे ग्वाल गावैं मृदु तान री ।
तैसी धुनि बाँसुरी की मधुर मधुर तैसी
बंक चितवनि मंद मंद मुसकानि री ॥
कदम बिटप के निकट तटनी के आय
अटा चढ़ि चाहि पीतपट फहरानि री ।

रस बरसावै तन तपन बुझावै नैन
प्रानन रिझावै वह आवै रसखानि री ॥ ६५ ॥

सवैया

वह गोधन गावत गोधन में जबतें इहि मारग ह्वै निकस्यौ।
तब तें कुलकानि कितीय करौ यह पापी हियो हुलस्यो हुलस्यो
अब तौ जु भई सु भई नहि होत है लोग अजान हँस्यो सु हँस्यो
कोउ पीर न जानत जानत सो तिनके हिय में रसखानि बस्यौ ॥ ६
आतुरी नंदलला निकस्यो तुलसी बन तें बन कों मुसकातो
देखे बनै न बनै कहते अब सो सुख जो मुख मैं न समातो
हौं रसखानि बिलोकिबे को कुलकानि को काज कियो हिय हातो
आइ गई अलबेली अचानक ए भटू लाज को काज कहातो ॥ ६७
ए सजनी वह नंद को साँवरो या बन धेनु चराइ गयो है
मोहिनि तानन गोधन गाइ कै बेनु बजाइ रिझाइ गयो है।
ताही घरी कछु टोना सो कै रसखानि हिए में समाइ गयो है
कोऊ न काहू की बात सुनै सिगरो ब्रज बीर बिकाइ गयो है॥ ६८
मेरो सुनो मति आइ अली उहाँ जौनी गली हरि गावत है।
हरि हैं हँ बिलोकत प्रानन कों पुनि गाढ़ परै घर आवत है॥
उन तान की तान तनी ब्रज मैं रसखान सयान सिखावत है।
तकि पाय धरो रपटाय नहीं वह चारो सो डारि फँदावत है ॥ ६९
कछु आज हू हरि सों ब्रज नैन नचाइ नचाइ हँसै।
... बसासनि सी दिनहीं दिन माइ की कांति नसै

घहुँ घोर घटा की सी सोर सुनें मन मेरेऊ आवति रीस कसी ।
पै कहा करों या रसखानि बिलोकि हियो हुलसै हुलसै हुलसी ॥५०॥
बाँकी कटाक्ष चितैबो सिख्यो बहुधा बरज्यो हित कै हितकारी ।
तू अपने हित की रसखानि सिखावनि दै दिनहूँ पचिहारी ॥
कान की सोच सिखी सजनी अजहूँ तजि दै बलि जाऊँ तिहारी ।
नंदन नंद के फंद कहूँ परि जैहै अनोखी निहार निहारी । ५१।
प्रेम पुन्यनि तें चितई जिन वे अँखियाँ मुसकानि भरी जू ।
कोऊ रहीं पुतरी सी खरी कोउ घाट डरी कोउ बाट परी जू ।
जे अपने घरहीं रसखानि कहै अरु हौंसनि जाति मरी जू ।
लाल जे बाल बिहाल करी ते बिहाल करी न निहाल करी जू॥५२॥
धेरिन तो बरजी न रहै अबही घर बाहर बैर बढ़ैगो ।
टोना सो नंद ढुटौना पढ़े सजनी तोहि देखि बिसेष बढ़ैगो ॥
सुनिहै सखि गोकुल गांव सबै रसखानि तबै इह लोक रढ़ैगो
धैर पढे घरहीं रहि धैठि अटानि चढ़े बदनाम चढ़ैगो ॥५३॥

कवित्त

अबहीं गई खिरक गाइ के दुहाइवे कौं
बावरी ह्वै आई डारि दोहनी यौं पानि की ।
कोऊ कहैं छरी कोऊ भौन परी डरी कोऊ
कोऊ कहै मरी गति हरी अँखियान की ॥
सास व्रत ठानै नंद बोलत सयाने धाइ
दौरि दौरि जानै मानो खोरि देवतानि की ।

सखी सब ह्वै सें मुरझानि पहिचानि कहूँ,
देखी मुसकानि वा अहीर रसखानि की ॥७४॥

सवैया

मोहन की मुरली सुनिकै वह बौरी ह्वै आनि अटा चढ़ि झाँकी।
गोप बड़ेन की डीठि बचाइ कै दीठि सों दीठि मिली दुहुघाँकी॥
देखत मोल भयो अँखियान को को करै लाज कुटुंब पिता की।
कैसे छुटाई छुटै अँटकी रसखानि दुहूँ की बिलोकनि बाँकी॥७५॥

कवित्त

ब्याही अनब्याही ब्रजमाहीं सब चाही तासों
दूनी सकुचाई दीठि परै न जुन्हैया की।
नेकु मुसकानि रसखानि को बिलोकत ही
चेरी होत एक बार कुंजनि दिखैया की॥
मेरो कह्यो मानि अंत मेरो गुन मानि हैरी
प्रात खात जात ना सकात सौंह भैया की।
माइ की अँटक तौलौं सासु की हटक तौलौं
देखी ना लटक मेरे दूलह कन्हैया की॥७६॥

सवैया

बेनु बजावत गोधन गावत ग्वालन के सँग गोमधि आयो।
बाँसुरी मैं उन मेरोई नाम सुग्वालिन के मिस टेरि सुनायो॥
ए सजनी सुनि सास के त्रासनि नंद के पास उसासन आयो।
कैसी करौं रसखानि नहीं हित चैन नहीं चित चोर चुरायो॥७७॥

आली पगे जु रँग रँग संवल सोहैं न आवत लालची नैना।
धावत हैं उतहीं जित मोहन रोके रुकैं नहि घूँघट ऐना॥
कानन की कल नाहि परै सखी प्रेम सों भीजे सुनैं बिन बैना।
भई मधु की मखियाँ रसखानि जू नेह को बंधन क्यों हूँ छुटै ना७८
मो मन मोहन को मिलि कै सबही मुसकानि दिखाय दई।
वह मोहनी मूरति रूपमयी सबही चितई तब हौं चितई॥
उन तौ अपने अपने घर की रसखानि भली बिधि राह लई।
कछु मोहि को पाप परयो पल मैं पग पावत पौरि पहार भई७९
मेरो सुभाव चितैबे को माइ री लाल निहारि कै बंसी बजाई।
वा दिन तें मोहि लागी ठगौरी सी लोग कहैं कोई बावरी आई॥
यों रसखानि घिरयो सिगरो ब्रज जानत वे कि मेरो जियराई।
जो कोउ चाहै भलो अपनो तौ सनेह न काहू सों कीजियो माई८०
तेरी गलीन मैं जा दिन तें निकसे मनमोहन गोधन गावत।
ये ब्रज लोग सो कौन सी बात चलाइ कै जो नहि नैन चलावत॥
वे रसखानि जो रीझिहैं नेकु तौ रीझि कै क्यों नवनारि रिझावत।
बावरी जो पै कलंक लग्यो तौ निसंक ह्वै क्यों नहीं अंक लगावत८१
औचक दृष्टि परे कहूँ कान्ह जू तासों कहै ननदी अनुरागी।
सो सुनि सास रही मुख मोरि जिठानी फिरै जिय मैं रिस पागी॥
नीके निहारि कै देखे न आँखिन हौं कबहूँ भरि नैन न जागी।
मो पछितावो यहै जु सखी कि कलंक लग्यो पर अंक न लागी ८२
मोरपखा मुरली बनमाल लख्यौ* हिय मैं† हियरा उमह्यौरी।

पाठांतर—* लखे। † को।

ता दिन तें इन बैरिन को कहि कौन न बोल कुबोल सह्योरी।
तो रसखानि सनेह लग्यो कोउ एक कह्यो कोउ* लाख कह्योरी
और तो रंग रह्यो न रह्यो इक रंग† रंगी सोई रंग रह्योरी ॥८३॥
मोर के चंदन मौर बन्यो दिन दूलह है अली नंद को नंदन।
श्रीवृषभानुसुता दुलही दिन जोरी बनी बिधना सुखकंदन॥
रसखानि न आवत मो पै कह्यो कछु दोऊ फँदे छवि प्रेम के फंदन।
जाहि बिलोकै सबै सुख पावत ये ब्रज जीवन हैं दुखदंद न ॥८४॥
आज अचानक राधिका रूपनिधानि सों भेंट भई बन माहीं।
देखत दृष्टि परे रसखानि मिले भरि अंक दिए गलबाहीं॥
प्रेमपगी बतियाँ दुहुँघाँ की दुहूँ कों लगी अतिही चितचाहीं।
मोहनी मंत्र बसीकर जंत्र हहा पिय की तिय की नहिं नाहीं ॥८५॥
कोई है रास में नैसुक नाचि कै नाच नचाए किए सबको जिन।
सोई है री रसखानि इहै मनुहारिहूँ सूधें चितौत न हो छिन॥
तो मैं धौं कौन मनोहर भाव बिलोकि भयो बस हाहा करी तिन।
औसर ऐसो मिलै न मिलै फिर लंगर मोड़ो कनौड़ो करै किन॥८६॥
आज भटू मुरली बट के तट नंद के साँवरे रास रच्यो री।
नैननि सैननि बैननि मैं नहिं कोऊ मनोहर भाव बच्यो री॥
जद्यपि राखन कौं कुलकानि सबै ब्रजबालन प्रान तच्यो री।
तद्यपि वा रसखान के हाथ बिकान को अंत लच्यो पै लच्योरी॥८७
छोर जो चाहत चोर गहैं ए जू नेहु न केवक छोर अचैहै।
चाखन के मिस माखन माँगत खाहु न माखन केतिक खैहै॥

पाठांतर—* किन। † रंग रँगीले सों रंग।

जानत हौ जिय की रसखानि सु काहे को एतिक बात बढ़ैहौ ।
गोरस के मिस जो रस चाहत सो रस कान्ह जू नेकु न पैहौ ॥८८॥
मोहन के मन भाइ गयो इक भाइ सो ग्वालिन गोधन गायो ।
ताते लग्यो चट चौहट सों दुरवाइ दै गात सों गात छुवायो ॥
रसखानि लही इक चातुरता चुपचाप रही जब लौं घर आयो ।
नैन नचाइ चितै मुसिकाइ सु ओट ह्वै जाइ अँगूठा दिखायो॥८९॥
नागर छैलहि गोकुल में मग रोकत संग सखा ढिग तैहैं ।
जाहि न नाहि दियावत आँखि सु कौन गई अब तोसी करैहैं ॥
हाँसी में हार हर्यो रसखानि जू जो कहुँ नैकु तगा टुटि जैहैं ।
एकही मोती के मोल लला सिगरे ब्रज हाटहि हाट बिकैहैं ॥९०॥
दानी भए नए माँगत दान सुनै जु पै कंस तौ बाँधि के जैहौ ।
रोकत हौ बन में रसखानि पसारत हाथ घनौ दुख पैहौ ॥
टूटै छरा बछरा दिक गोधन जो धन है सु सबै धन दैहौ ।
जैहै अभूषन काहू सखी को तो मोल छला के लला न बिकैहौ॥९१
आज महूँ दधि बेचन जात ही मोहन रोकि लियो मग आयो ।
माँगत दान में आन लियो सु कियो निलजी रसजोबन खायो ॥
काह कहूँ सिगरी री बिथा रसखानि लियो हँसि कै मुसिकायो ।
पाले परी मैं अकेली लली लला लाज लियो सु कियो मन भायो॥९२॥
बिहरैं पिय प्यारी सनेह सने छहरैं चुनरी के फवा फहरैं ।
सिहरैं नवजोबन रंग अनंग सुभंग अपांगनि की गहरैं ॥
बहरैं रसखानि नदी रस की घहरैं बनिता कुलहू भहरैं ।
कहरैं बिरहीजन आतप सों लहरैं लली लाल लिए पहरैं ॥९३॥

वह सोई हुती परजंक लली लला लीनो सु आय भुजा भरिकै
अकुलाय के चौंक उठी सु डरी निकरी चहै अंकनि तें फरिकै।
झटका झटकी में फटो पटुका दरकी अँगिया मुकता झरिकै
मुख बोल कढ़ै रिस सों रसखानि हटो जु लला निबिया धरिकै ८४

लाज के लेप चढ़ाइ कै अंग पची सब सीख को मंत्र सुनाइकै
गारुड़ ह्वै ब्रज लोग थक्यौ करि औषद बेसक सौंह दिवाइ कै।
ऊधौ सो फो रसखानि कहै जिन चित्त धरौ तुम एते उपाइ कै।
कारे बिसारे को चाहैं उतार्यौ अरे विष बावरे राख लगाइ कै ८५

रसखानि यहै सुनि कै गुनि कै हियरा सत टूक ह्वै फाटि गयो है।
सुतो जानत हैं न कछू हम ह्यां उन वा पढ़ि मंत्र कहा धौं दयो है
सुनु साँची कहैं जिय मैं निज जानि कै जानत हौ जस कैसो लयो है
सब लोग लुगाई कहैं ब्रज माँहि अरे हरि चेरी को चेरो भयो है ८६

होती जु पै कुबरी ह्यां सखी भरि लातन मूका बकोटती केती।
लेती निकाल हिए की सबै नक छेदि कै कौड़ी पिराइ कै देती॥
ऐती नचाइ कै नाच वा राँड़ को लाल रिझावन को फल पेती।
सेती सदा रसखानि लिए कुबरी के करेजनि सूल सी भेती ८७

जानै कहा हम मूढ़ सबै समुझी न तबै जबहीं बनि आई।
सोचत हैं मन ही मन मैं अब कीजै कहा बतियाँ जगवाई॥
नीचो भयो ब्रज को सब सीस मलीन भई रसखानि दुहाई।
चेरी को चेटक देखहु री हरि चेरा कियो धौं कहा पढ़ि माई ८८

काहूँसों माई कहा कहिए सहिए जु सोई रसखानि सहावै।
जब प्रेम कियो तब नाचिए सोई जो नाच नचावै॥

चाहत हैं हम श्रौर कहा सखि क्योंहूँ कहूँ पिय देखन पावैं।
चेरिय सों जु गुपाल रच्यो तौ चलोरी सबै मिलि चेरी कहावैं ॥९९

कवित्त

ग्वालन सँग जैबो बन ऐबो सुगाइन सँग
हेरि तान गैबो हाहा नैन फरकत हैं।
ह्याँ के गजमोती माल वारौं गुंजमालन पै
कुंज सुधि श्राए हाय प्रान धरकत हैं॥
गोबर को गारो सुतौ मोहि लगै प्यारो
कहा भयो महल सोने को जटत मरकत हैं।
मंदिर तें ऊँचे यह मंदिर हैं द्वारिका के
ब्रज के खिरक मेरे हिए खरकत हैं ॥१००॥

सवैया

रसखानि सुन्यो है वियोग के ताप मलीन महा दुति देह तिया की।
पंकज सो मुख गो मुरझाइ लगी लपटैं बिस स्वांस हिया की॥
ऐसे में आवत कान्ह सुने हुलसे मरके तरकी श्रँगिया की।
यों जग जोति उठी तन की उसकाइ दई मनौ बाती दिया की१०१
गान वही जु रहैं रिझि वापर रूप वही जिहिं वाहि रिझायो।
सीस वही जिन वे परसे पद श्रंक वही जिन वा परसायो॥
दूध वही जु दुहायो री वाही दही सु सही जो वही ढरकायो।
श्रौर कहाँ लौं कहौं रसखानि री भाव वही जु वही मनभायो१०२
कंचन मंदिर ऊँचे बनाइके मानिक लाइ सदा झलकैयत।
प्रातहीं तें सगरी नगरी गजमोतिन ही की तुलानि तुलैयत॥

जद्यपि दीन प्रजान प्रजा तिनकी प्रभुता मघवा ललचैयत ।
ऐसे भए तो कहा रसखानि जो साँवरे ग्वाल सों नेह न लैयत१०३

कवित्त

कहा रसखानि सुखसंपति सुमार कहा
कहा तन जोगी ह्वै लगाए अंग छार को।
कहा साधे पंचानल कहा सोए बीच नल
कहा जीत लाए राज सिंधु आर पार को॥
जप बार बार तप संजम बयार व्रत
तीरथ हजार अरे बूझत लबार को।
कीन्हों नहीं प्यार नहीं सेयो दरबार चित
चाह्यो न निहार्यो जो पै नंद के कुमार को॥१०४॥

सवैया

संपति सों सकुचाइ कुबेरहि रूप सों दीनी चिनौती अनंगहि।
भोग कै कै ललचाइ पुरंदर जोग कै गंग लइ धरि मंगहि॥
ऐसे भए तो कहा रसखानि रसै रसना जो जु मुक्ति तरंगहि।
दै चित ताके न रंग रच्यो जु रह्यो रचि राधिका रानी के रंगहि१०५

कवित्त

कंचन के मंदिरनि दीठ ठहरात नाहिं
सदा दीपमाल लाल मानिक उजारे सों।
और प्रभुताई अब कहा लौं बखानौं प्रति-
हारन की भीर भूप टरत न द्वारे सों॥

गंगाजी में न्हाइ मुक्ताहलहू लुटाइ वेद
बीस चार गाइ ध्यान कीजत सवारे सौं।
ऐसे ही भए तो नर कहा रसखानि जो पै
चित दै न कीनी प्रीत पीतपटवारे सौं ॥१०६॥

सवैया

द्रौपदी श्रौ गनिका गज गीध अजामिल सों कियो सो न निहारो।
गैातम गेहिनी कैसी तरी प्रहलाद को कैसे हरयो दुख भारो॥
काहे को सोच करै रसखानि कहा करिहैं रविनंद बिचारो।
ता खन जा खन राखिए माखन चाखनहारो सो राखनहारो१०७
देस बिदेस के देखे नरेसन रीभि की कोऊ न बूभ करैगो।
तातें तिन्हैं तजि जान गिरयो गुन सौं गुन औगुन गाँठि परैगो॥
बाँसुरीवारो बड़ो रिभवार है स्याम जो नैकु सुढार ढरैगो।
लाड़लो छैल वही तौ अहीर को पीर हमारे हिए की हरैगो१०८

कवित्त

अंत तें न आयो याही गाँवरे को जायो
माई बापरे जियायो प्याइ दूध बारे बारे को।
सोई रसखानि पहिचानि कानि छाड़ि चाहै
लोचन नचावत नचैया द्वारे द्वारे को॥
मैया कि सौं सोच कछू मटकी उतारे को न
गोरस के ढारे को न चीर चीर डारे को।
यहै दुख भारी गहै डगर हमारी माभ
नगर हमारे ग्वाल बगर हमारे को ॥१०९॥

सवैया

दूर तें आइ दुरेहीं दिखाइ अटा चढ़ जाइ कह्यो तहाँ वारी।
चित्त कहूं चितवैं कितहूँ चित और सों गाहि करैं चखवारी॥
रसखानि कहै यह बीच अचानक जाइ सिढ़ी चढ़ि स्याम पुकारी।
सूरि गई सुकुमार हियो हनि मैन मट्ट कह्यो स्याम सिधारी॥११०
कंस के क्रोध की फैल गई जबहीं ब्रजमंडल बीच पुकार सी।
आइ गए तबहीं कछनी कसिकै नटनागर नंदकुमार सी॥
द्वैरद को रद ऐंचि लियो रसखानि हिये मन आइ बिचार सी।
लागी कुठार लई लखि लोर कलंक तमाल तें कीरत डार सी ११

कवित्त

आपनो सो ढोटा हम सबहीं को जानत हैं
दोऊ प्रानी सबही के काज नित धावहीं।
ते तौ रसखानि अब दूर तें तमासो देखैं
तरनितनूजा के निकट नहिं आवहीं॥
आन दिन बात अनहितुन सों कहैा कहा
हितू जेऊ आए ते ये लोचन दुरावहीं।
कहा कहौं आली खाली देत सब ठाली पर
मेरे बनमाली कौं न काली ते छुड़ावहीं॥११२॥

सवैया

लोग कहैं ब्रज के रसखानि अनंदित नंद जसोमति जू पर।
छोहरा आजु नयो जनम्यो तुमसो कोऊ भाग भरयो नहिं भू पर॥

वारि कै दाम सवाँर करौं अपने अपचाल कुचाल ललू पर ।
नाचत रावरो लाल गुपाल सो काल सो व्याल-कपाल के ऊपर ११३

सार की सारी मो भारी लगै धरिवे कहँ सीस वघंबर पैया ।
हाँसी मो दासी सिखाइ लई हैं वेई जु वेई रसखानि कन्हैया ॥
जोग गयो कुबजा की कलानि मैं री कब ऐहैं जसोमति मैया ।
हा हा न ऊधौ कुढ़ावो हमैं अबहीं कहि दै ब्रज बाजै बधैया ११४

को रिझवारिन कौं रसखानि कहै मुकतानि सों माँग भरौंगी ।
कोऊ कहै गहनो अँग अंग दुकूल सुगंध भरयो पहरौंगी ॥
तू न कहै यों कहैं तो कहौ हूँ कहूँ न कहूँ तेरे पाँय परौंगी ।
देखहु याहि सुफूल की माल जसोमति लाल निहाल करौंगी ११५

देखिहौं आँखिन सों पिय को अरु कानन सों उन बैन कों प्यारी ।
बाके अनंगनि रंगनि की सुरभी न सुगंधनि नाक में डारी ॥
त्यों रसखानि हिए में धरौं वहि साँवरी मूरति मैं न उजारी ।
गाँव भरो कोउ नाव धरौ पुनि साँवरी हौं बनिहौं सुकुमारी ११६

काहू कहूँ रतियाँ की कथा बतियाँ कहि आवत है न कछू री ।
आइ गोपाल लियो भरि अंक कियो मन भायो पियो रस कूँ री ॥
ताही दिना सों गड़ीं अँखियाँ रसखानि मेरे अँग अंग में पूरी ।
पै न दिखाई परै अब बावरो दै के वियोग बिथा की मजूरी ११७

तू गरबाइ कहा झगरै रसखानि तेरे बस बावरो होसै ।
तौहूँ न छाती सिराइ अरी करि झार इतै उतै बाझन कोसै ॥
लालहि लाल किए अँखियाँ गहि लालहि काल सों क्यों भई रोसै ।
ऐ विधिना तू कहा री पढ़ी बस राख्यो गुपालहि लाल भरोसै ११८

एक समै इक लालनि कों ब्रजजीवन खेलत दृष्टि परयौ है।
बालप्रवीन सकै. करिकै सरकाइ कै मोर न चीर धरयौ है॥
यों रसही रसही रसखानि सखी अपनो मनभायो करयौ है।
नंद के लाड़िले ढाँकि दै सीस इहा हमरो वर हाथ भरयौ है॥११९
सोई हुती पिय की छतियाँ लगि बालप्रवीन महा मुद मानै।
केस खुले छहरैं घहरैं कहरैं छवि देखत मैन अमानै॥
वा रस मैं रसखानि पगी रति रैन जगी अँखियाँ अनुमानै।
चंद पै बिंब औ बिंब पै कैरव कैरव पै मुकतान प्रमानै॥१२०॥
आवत लाल गुपाल लिए मग सूने मिली इक नार नवीनी।
त्यों रसखानि लगाइ हिए भटू मौज कियो मनमाहिं अधीनी॥
सारी फटी सुकुमारी हटी अँगिया दरकी सरकी रँगभीनी।
गाल गुलाल लगाइ लगाइ कै अंक रिझाइ बिदा कर दीनी॥१२१॥
लीने अबीर भरे पिचका रसखानि खरो बहु भाय भरो जू।
मार से गोप कुमार कुमार से देखत ध्यान टरो न टरो जू॥
पूरब पुन्यनि हाथ परयौ तुम राज करौ उठि काज करो जू।
ताहि सरौ लखि लाज जरौ इहि पाय पतिव्रत ताख धरो जू१२२

कवित्त

आई खेलि होरी ब्रजगोरी वा किसोरी संग
अंग अंग रंगनि अनंग सरसाइगो।
कुंकुम की मार वा पै रंगनि उछार उड़ै
बुक्का औ गुलाल लाल लाल बरसाइगो॥

छोड़ै पिचकारिन घमारिन बिगोइ छोड़ै
तोड़ै हियहार धार रंग बरसाइगो ।
रसिक सलोनो रिझवार रसखानि आज
फागुन में औगुन अनेक दरसाइगो ॥१२३॥

सवैया

आजु न कोऊ सखी जमुना जल रोकै खड़ो मग नंद को लाला ।
नैन नचाइ चलाइ चितै रसखानि चलावत प्रेम को भाला ॥
मैं जु गई हुती बैरन बाहिर मेरी करी गति टूटि गो माला ।
होरी भई कै हरी भए लाल कै लाल गुलाल पगी ब्रजबाला१२४

कवित्त

गोकुल को ग्वाल काल्हि चौमुँह की ग्वालिन सों
चाँचर रचाइ एक धूमहिं मचाइ गो ।
हियो हुलसाय रसखानि तान गाइ बाँकी
सहज सुभाइ सब गाँव ललचाइ गो ।
पिचका चलाइ और जुवती भिजाइ नेह
लोचन नचाइ मेरे अंगहि बचाइ गो ।
सासहि नचाइ भोरी नंदहि नचाइ खोरी
बैरिन सचाइ गोरी मोहि सकुचाइ गो ॥१२५॥

सवैया

फागुन लाग्यो सखी जब तें तब तें ब्रजमंडल धूम मच्यो है ।
नारि नवेली बचैं नहि एक बिसेख यहै सबै प्रेम अच्यो है ॥

साँझ सकारे वही रसखानि सुरंग गुलाल लै खेल रच्यो है।
को सजनी निलजी न भई अरु कौन भटू जिहि मान बच्यो है१२६
इक ओर किरीट लसै दुसरी दिसि नागन के गन गाजत री।
मुरली मधुरी ध्वनि ओठन पै उत डामर नाद से बाजत री॥
रसखानि पितंबर एक कँधा पर एक बघंबर राजत री।
कोउ देखहु संगम लै बुड़की निकसे यह भेग विराजत री १२७
यह देख धतूरे के पात चबात औ गात सों धूली लगावत हैं।
चहुँ ओर जटा अँटकैं लटकैं फनि सेंक फनी फहरावत हैं॥
रसखानि जेई चितवै चित दै तिनके दुख दुंद भजावत हैं।
गजखाल कपाल की माल विसाल सो गाल बजावत आवत हैं१२८
वैद की औषधि खाइ कछू न करै वह संजम री सुनि मोसें।
ते जलपानि कियो रसखानि सजीवन जानि लियो सुख तोसें॥
एरी सुधामयी भागीरथी नितपथ्य यहै न सनै तुहि पोसें।
आक धतूर चबात फिरैं विष खात फिरैं सिव तेरे भरोसें १२९
बैन वही उनको गुन गाइ औ कान वही उन बैन सों सानी।
हाथ वही उन गात सरैं अरु पाइ वही जु वहीं अनुजानी॥
जान वही उन प्रान के संग औ मान वही जु करै मनमानी।
त्यों रसखानि वही रसखानि जुहै रसखानि सो है रसखानी१३०

दोहा

बिमल सरल रसखानि मिलि, भई सकल रसखानि।
सोई नव रसखानि, को, चित चातक रसखानि॥१३१॥

सरस नेह लवलीन नव द्वै "सुजान रसखानि"।
ताके श्रास बिसास सौं पगे प्रान रसखानि ॥१३२॥

श्री रसखानजी की पदरचना का एक ही उदाहरण हस्तगत हुआ है वह यहाँ दिया जाता है—

धमार (राग सारंग)

मोहन हो हो हो हो होरी।
काल्ह हमारे आँगन गारी दै आयो सो कोरी॥
अब क्यों दुरि बैठे जसुदा ढिग निकसो कुंजबिहारी।
उमग उमग आईं गोकुल की वे सब भईं धनवारी॥
तबहिं लाल ललकार निकारे रूपसुधा की प्यासी।
लपटि गईं घनश्याम लाल सों चमक चमक चपला सी॥
काजर दे भजि भार भरवा के हँसि हँसि ब्रज की नारी।
कहैं रसखान एक गारी पर सौ आदर बलिहारी॥१३३॥

भूमिका

उठहु उठहु चातक रसिक, ह्वै प्रसन्न करि चेत।
लेहु लाहु आनंदघन, बरषत तुम्हरे हेत ॥ १ ॥
छकनि छकहु मन भाँवती, तुम्हरे पोषन प्रान।
स्वाती बूँदनि बरषि कै, सागर भरयो सुजान ॥ २ ॥

हे आनंदघन के काव्य-रस-स्वाति-तृषित चातकगण! आज आप लोगों के चिरशुष्क कंठ तर करने का अवसर आया कि स्वाति बूँदों से परिपूर्ण यह 'सुजान सागर', जिसे 'घनआनंद' बरसकर भर गए थे, सुलभ हुआ है। घनानंद की कविताएँ दुष्प्राप्य हो गई थीं, धन्यवाद है मित्रवर बाबू जगन्नाथदास जी रत्नाकर बी० ए० को जिन्होंने बड़े परिश्रम से ढूँढ़ खोजकर सन् १८९७ ई० में मेरे हरिप्रकाश यंत्रालय में छपवाकर इनको प्रकाशित कराया। उक्त संस्करण के निःशेष हो जाने से कवितारसिक उनके काव्यामृत के आस्वादन से वंचित हो गए थे। अब काशी नागरीप्रचारिणी सभा के अनुग्रह और सहायता से यह पुनः प्रकाशित किया जाता है।

इसके सिवा इनके कुछ संगीत काव्य का भी पता चलता है परंतु अभी तक कोई ग्रंथ मिला नहीं। हाँ, कुछ पद प्राप्त हुए हैं जो इसी के साथ प्रकाशित कर दिए जाते हैं।

यदि इनका कोई संगीत का ग्रंथ भी प्राप्त हुआ तो वह भी प्रकाशित कर दिया जायगा। तब तक इस सागर में डुबकी लगाइए और इसमें से भावरूप रत्नों को काढ़ काढ़ उनके अवलोकन से आनंद लाभ कीजिए।

आरंभ ही में पहिली और दूसरी सवैया के अंतिम चरण पर ध्यान दीजिए कि कैसी बारीकी है—

"समुझै कविता घनआनँद की जिन आँखिन ने- की पीर तकी।"

यहाँ 'नेह' शब्द में श्लेष है। इसके २ अर्थ हैं—१ ते: २ प्रेम। आशय यह है कि कडुवे तेल से आँजने से प्रथम : क्लेश होता है—आँख कडुवाती है पश्चात् उससे दृष्टि बढ़ती और सब स्पष्ट सूझने लगता है; वैसे ही जिसने प्रेम-तेल से अप अंतश्चक्षु को आंजकर वह पीर 'तकी' अर्थात् देखा या सह है वही इस कविता-सागर के भाव-रत्नों की जाँच कर सकेगा

इसी प्रकार इनकी प्रत्येक कविता में कोई न कोई अनूठ बात अवश्य ही पाई जाती है।

अमीरसिंह

घनानंदजी की संक्षिप्त जीवनी

घनानंदजी को प्रायः सभी कवितारसिक जन जानते होंगे और इनकी कवितामृतवर्षा की कुछ न कुछ बूँदें रसिक जनों के हृदयस्थल पर अवश्य ही पड़ी होंगी। इन कायस्थकुलावतंस महानुभाव का जीवनचरित्र तो कहीं प्राप्त नहीं हुआ परंतु हमारे मित्र लाला भगवानदीन महाशय ने बड़े अनुसंधान से संग्रहकर जो कुछ लक्ष्मी मासिक पत्र में छापा है उतना ही प्राप्त है; उसे ही यहाँ प्रकाशित कर देना उचित जान पड़ता है।

वे लिखते हैं,—आनंदघनजी का जन्म लगभग संवत् १७१५ के प्रतीत होता है। और इनकी परलोकयात्रा संवत १७९६ में जान पड़ती है। ये महानुभाव दिल्लीनिवासी भटनागर कायस्थ थे। वह समय मुसलमानों का ही समय था और उनके राज्य के कारण मुसलमानी ही देश भी हो रहा था। वंशपरंपरा से नौकरी पेशा चला आने के कारण समयानुसार इन्होंने पूर्व में फारसी भाषा की शिक्षा पाई और उस भाषा का अच्छा पांडित्य प्राप्त किया था। ऐसा कर्णगोचर होता है कि ये महानुभाव फारसी भाषा में प्रसिद्ध अबुलफजल के शिष्य थे। बस इसी से इनकी फारसी भाषा की विज्ञता का परिचय मिलना मेरी जान में कुछ कठिन न होगा।

ऐसा भी अवगत होता है कि फारसी भाषा में भी इनकी कुछ कविता है पर वह दृष्टिगोचर नहीं हुई।

पूर्व में ये पादशाह के दफ्तर में किसी अल्पाधिकार पर नियत किए गए थे। तदनंतर अपनी सुयोग्यता, स्वामिभक्ति और परिश्रम के प्रभाव से दिल्लीश्वर मुहम्मदशाह के खास कलम (प्राइवेट सेक्रेटरी) हो गए।

यह भी सुनने में आता है कि आनंदघनजी को बाल्यावस्था ही से श्रीकृष्ण की रासलीला देखने का अत्यंत प्रेम था। बहुधा जब कभी कोई रासमंडली दिल्ली में आ निकलती तो ये उसके व्यय का भार अपने सिर ले महीनों रख लिया करते थे। ये उससे रास कराते और स्वयं भी उन लीलाओं में कोई अंश अपने सिर ओढ़ लेते। इससे इनको हिंदी भाषा के पद सीखने और संगीत का व्यसन लगा। फिर क्या था, तब तो इन्होंने इतनी कुशलता प्राप्त की कि ये स्वयं लीलाओं के पदों की रचना करने लगे। इन्होंने ऐसे भाव भरे पद रचे कि अद्यावधि इनके कतिपय पद रासधारियों में गाए जाते हैं।

इस रास की भावना का इन पर ऐसा प्रभाव पड़ा और श्रीकृष्ण के अलौकिक प्रेम में ये ऐसे लवलीन हो गए कि शाही नौकरी छोड़ घर गृहस्थी से नाता तोड़ संसार से मुँह मोड़ व्रज की ओर चल पड़े और वहीं का वास स्वीकार कर लिया। व्रज में आते ही व्यासवंश के किसी साधु से दीक्षा ले ये उपासना में दृढ़ और मग्न हो गए।

ये प्राय: कहीं न कहीं बंसीवट के आस पास ही में रहा करते थे और वहाँ किसी वृक्ष के तले आसन जमाए ध्यानमग्न कभी कभी तो कई कई दिन समाधि ही में बिता देते, खाने पीने आदि की सुधि भी भूल जाते थे। इन महानुभाव ने सुजानसागर ग्रंथ की रचना भी ब्रजवास ही के अवसर में की है। वाह! निःसंदेह यह सुजानसागर प्रेमामृत के जल से पूर्ण समुद्र ही है। यह साभिमान कहा जा सकता है कि यदि कोई भी इसकी ४१५ तरंगों (कवित्तों) में डुबकी मारे (आशय समझकर पढ़े) तो उसके नेत्रजलधर इसके अमृत को पानकर अवश्य ही बरसने लगेंगे—यह तो संभव ही नहीं कि वह गद्गद न हो। इन्होंने अपनी शृंगाररस की कविता के वियोग विभाग में करुणा विरह को कैसा झलकाया है कि उससे अधिक और कोई क्या विशेष कहेगा कुछ ध्यान में नहीं आता। यदि कोई कहे कि तुम पक्षपात करते हो, सो नहीं किंतु इनके विषय में अनेक विद्वानों ने क्या कहा है उससे आप लोग जाँच सकते हैं—

शिवसिंहसरोज के कर्त्ता अपने उसी ग्रंथ में लिखते हैं कि 'इनकी कविता सूर्य के समान भासमान है।'

एवं इसी सुजानसागर ग्रंथ से ११८ कवित्त और दोहे छाँटकर भारतेंदु श्रीहरिश्चंद्र ने संवत् १९२७ में सुजानशतक नाम से प्रकाशित किए जो अब तक भी अनेक प्रेमियों के पास प्राप्त होते हैं। उसी में एक छोटी सी भूमिका भी स्वयं भारतेंदुजी ने अपने करकमलों से लिखी है। उसमें वे लिखते हैं

कि "आनंदघनजी × × × × गानविद्या तथा कविता दोनों ही में बड़े कुशल थे और सच्चे प्रेमी भी थे।" इनकी कविता का सागर यह पूरा 'सुजानसागर' ग्रंथ इनके हार्दिक प्रेम का परिचय देने के लिये आज रसिक जनों के सम्मुख निवेदित है।

फिर बाबू जगन्नाथदासजी बी० ए० (रत्नाकर) इस ग्रंथ की भूमिका में यों लिखते हैं कि "सुजानसागर के विषय में इतना ही कहना बहुत है कि यह सागर घनानंदजी के कवितामृत से परिपूरित है"।

"भाषा काव्यरसिकों में ऐसा कौन है जिसको इस आनंद घन की कतिपय बूँदों का, जो कि भारतवर्ष में जहाँ तहाँ सुलभ हैं, आस्वादन करके इस रस की अमृततृषा से तृषित हो विशेषत: तृप्त होने की उत्कंठा न हुई होगी।"

रीवाधिपति श्रीरघुराजसिंहजू देव अपने भक्तमाल (रामरसिकावली) में इन्हीं आनंदघनजी की सच्चे प्रेमी भक्तों में गणना कर यों लिखते हैं—

"घन आनंद के विपुल कवित्ता। अवली हरत कविन के चित्ता।"

ये सच्ची भावना के उपासक और विरह के सच्चे भावुक थे। इसी हेतु इनकी कविता में यह प्रत्यक्ष प्रभाव है कि कोई कैसा भी कठोर-चित्त क्यों न हो पर इनके कवित्त पढ़ या, सुनकर गद्गद हो जाता है और नेत्र डबडबा ही पड़ते हैं।

संवत् १७९६ में जब नादिरशाह ने मथुरा को लूटा उसी

महाराज रघुराजसिंहजी इनके मारे जाने का हाल यों वर्णन करते हैं—

"घनानंदजी वंसीवट के नीचे भावना में विराज रहे थे उसी समय यवनों ने आनकर इन पर कई वार खड्गाघात किया, पर इनका बाल भी बाँका न हुआ, केवल ध्यान भंग हो गया। तब करुणाविरह में भर आपने अपने प्रभु श्रीकृष्ण से यों प्रार्थना की—

"मोकों भूरि भार है देहू। यत्न किये छूटत नहिं केहू॥
कौन हेतु राखत संसारा। क्यो न बुलावै नंदकुमारा॥"

इस प्रकार अपने प्रभु से प्रार्थना कर उस घातक यवन से कहा कि 'ले अब वार कर'। उसने भी आज्ञानुसार फिर तलवार मारी। सिर तो उस आघात से भूमि पर आकर नाचने लगा परंतु उनके रुंड से एक बूँद भी रक्तपात न हुआ। यवन भी देखकर चकित हो रहे और उन्होंने प्रत्यक्ष नेत्रों से देखा कि ऊपर से विमान उतरा और वे उस पर चढ़ गोलोक को पधारे।

अस्तु! इतना तो अवश्य ही मानना होगा कि घनानंदजी नादिरशाह की लूट में मारे गए। अतः संवत् १७१५ के समीप उनका जन्म और संवत् १७९६ में उनकी गोलोक-यात्रा तो निश्चित है। इस हिसाब से उन्होंने अनुमान ८१ वर्ष की आयु भोगी।

घनानंद

श्री १०८ परस्पर चंद्रचकोराभ्यां नमः

सुजानसागर

सवैया

नेही महा ब्रजभाषाप्रवीन औ सुंदरतानि के भेद कों जानै ।
जोग वियोग की रीति मैं कोविद भावना भेद स्वरूप कौं ठानै ॥
चाह के रंग मैं भींज्यो हियो बिछुरें मिलें प्रीतम सांति न मानै ।
भाषा प्रवीन सुछंद सदा रहै सो घनजी के कवित्त बखानै ॥१॥
प्रेम सदा अति ऊँचो लहै सु कहै इहि भांति की बात छकी ।
सुनि कैं सबके मन लालच दौरै पै बौरे लखैं सब बुद्धि चकी ॥
जग की कविताई के धोखे रहैं ह्यां प्रवीननि की मति जाति जकी ।
समुझै कविता घनआनँद की हिय आंखिन नेह की पीर तकी ॥२॥

कवित्त

लाजनि लपेटी चितवनि भेद भाय भरी
लसति ललित लोल चख तिरछानि मैं ।
छबि को सदन गोरो बदन रुचिर भाल
रस निचुरत मीठी मृदु मुसक्यानि मैं ॥

दमन दमक फैलि हियें मोती माल होत ·
पिय सों लड़कि प्रेम पगी बतरानि मैं।
आनँद की निधि जगमगति छबीली बाल
अंगनि अनंग रंग दुरि मुरजानि मैं ॥ ३ ॥

सवैया

झलकै अति सुंदर आनन गौर छके दृग राजत काननि छ्वै।
हँसि बोलनि मैं छबि फूलन की बरषा उर ऊपर जाति है ह्वै॥
लट लोल कपोल कलोल करैं कल कंठ बनी जलजावलि द्वै।
अँग अंग तरंग उठै दुति की परिहै मनौ रूप अबै धर च्वै ॥४॥

कवित्त

छबि को सदन मोद मंडित बदन चंद
तृषित चषनि लाल कबधौं दिखायहौ।
चटकीलौ भेष करें मटकीली भाँति सौंही
मुरली अधर धरें लटकत आयहौ।
लोचन दुराय कछू मृदु मुसिक्याय नेह
भीनी बतियानि लड़काय बतरायहौ।
बिरह जरत जिय जानि आनि प्रान प्यारे
कृपानिधि आनँद को घन बरसायहौ ॥ ५ ॥

वहै मुसकानि वहै मृदु बतरानि वहै
लड़काली बानि आनि उर मैं अरति है।
वहै गति लैनि औ बजावनि ललित बैन
वहै हँसि दैन हियरा तें न टरति है॥

वहै चतुराई सों चिताई चाहिबे की छवि
वहै छैलताई न छिनक बिसरति है।
आनँदनिधान प्रानप्रीतम सुजानजू की
सुधि सब भाँतिन सौं बेसुधि करति है ॥ ६ ॥

जासों प्रीति ताहि निठुराई सों निपट नेह
कैसें करि जिय की जरन सो जताइए।
महा निरदई दई कैसें कै जिवाऊँ जीव
वेदन की बढ़वारि कहाँ लौं दुराइए ॥
दुख के बखान करिबे कौं रसना कैं होति
ऐपै*! कहूँ वाकौ मुख देखन न पाइए।
रैन दिन चैन को न लेस कहूँ पैयै भाग
आपनेही ऐसे दोष काहि धौं लगाइए ॥ ७ ॥

सवैया

भोर तें साँझ लौं कानन ओर निहारति बावरी नेकु न हारति।
साँझ तें भोर लौं तारनि ताकिबो तारन सौं इक तार न टारति ॥
जौ कहूँ भावतो दीठि परै घनआनँद आंसुनि औसर गारति।
मोहन सौहन जोहन की लगियै रहै आँखिन के मन आरति ॥८॥

कवित्त

भए अति निठुर मिटाय पहिचान डारी
याही दुख हमैं जक लगी हाय हाय है।

* आश्चर्य पद है।

तुम तौ निपट निरदई गई भूलि सुधि
हमैं सूल सलनि सों केहूँ न भुलाय है ॥
मीठे मीठे बोल बोलि ठगी पहिलैं तौ तब
अब जिय जारत कहौ धौं कौन न्याय है।
सुनी है कै नाहीं यह प्रगट कहावति जू
काहू कलपाय है सु कैसें कल पाय है ॥ ९ ॥

सवैया

हीन भए जल मीन अधीन कहा कछु मो अकुलानि समाने।
नीरस नेही को लाय कलंक निरास ह्वै कायर त्यागत प्रानै ॥
प्रीति की रीति सु क्यों समझै जड़ मीत के पानै परे को प्रमानै*।
या मन की जु दसा घनआनद जीव की जीवन जान ही जानै॥१०॥
मीत सुजान अनीति करौ जिन हा हा न हूजिए मोहि अमोही।
दीठि कौं और कहूँ नहिं ठौर फिरी दृग रावरे रूप की दोही॥
एक बिसास की टेक गहें लगि आस रहे बसि प्रान बटोही।
हौ घनआनँद जीवनमूल दई कित प्यासनि मारत मोही ॥११॥
पहिलें घनआनँद सींचि सुजान कहीं बतियाँ अति प्यारपगी।
अब लाय वियोग की लाय बलाय बढ़ाय बिसास दगानि दगी ॥
अँखियाँ दुखयानि कुबानि परी न कहूँ लगैं कौन घरी सु लगी।
मति दौरि थकी न लहै ठिक ठौर अमोही के मोह मिठास ठगी१२
क्यों हँसि हेरि हरयो हियरा अरु क्यों हित कै चित चाह बढ़ाई।
काहे कों बोलि सुधासने बैननि चैननि मैननि सैन चढ़ाई॥

* नतीजा।

सो सुधि मो हिय मैं घनआनँद सालति केहूँ कढ़ै न कढ़ाई ।
मीत सुजान अनीति की पाटी इते पै न जानिए कौन पढ़ाई ॥१३॥

कवित्त

प्रीतम सुजान मेरे हित के निधान कहैा
कैसें रहैं प्रान जो अनखि अरसाय हैा ।
तुम ती उदार दीन हीन आनि पर्‍यो द्वार
सुनिऐ पुकार याहि कौ लैां तरसाय हैा ॥
चातक है रावरो अनोखो मोहि आवरो सु-
जान रूप बावरो बदन दरसाय हैा ।
बिरह नसाय दया हिय मैं बसाय आय
हाय कब आनँद को घन बरसाय हैा ॥ १४ ॥

सवैया

तब तौ छवि पीवत जीवत हे अब सोचनि लोचन जात जरे ।
हित पोप के तोपतु प्रान पले बिललात महा दुख दोप भरे ॥
घनआनँद मीत सुजान बिना सबही सुख साज समाज टरे ।
तब हार पहार से लागत हे अब आनि कै बीच पहार परे॥१५॥
पहिले अपनाय सुजान सनेह सों क्यों फिर नेह को तोरिए जू ।
निरधार अधार दै धार मँझार दई गहि बाह न बोरिए जू ॥
घनआनँद आपने चातक कों गुन बाँधिलै मोह न छोरिए जू ।
रस प्याय कै ज्याय बढ़ाय कै आस बिसास मैं यों विप घोरिए जू १६
रावरे रूप की रीति अनूप नयो नयो लागत ज्यों ज्यों निहारिए ।
त्यों इन आँखिनि बानि अनोखी अधानि कहूँ नहीं आन तिहारिए ॥

एकही जीव हुतौ सु तौ वारयो सुजान सकोच औ सोच सहारिए।
रोकी रहै न दहै घनआनँद बावरी रीझ के हाथनि हारिए॥१७॥

कवित्त

आसही अकास मधि अवधि गुनै बढ़ाय
चोपनि चढ़ाय दीनौ कीनौ खेल सो यहै।
निपट कठोर एहो ऐंचत न आप ओर
लाड़ले सुजान सों दुहेली दसा को कहै॥
अचिरजमई मोहि भई घनआनँद यों
हाथ साथ लाग्यो पै समीप न कहूँ लहै।
बिरह समीर की झकोरनि अधीर नेह
नीर भीज्यो जीव तऊ गुड़ी लों उड्यो रहै॥ १८॥

सवैया

घनआनँद जीवन मूल सुजान की कौंधन हूँ न कहूँ दरसैं।
सु न जानिए धौं कित छाय रहे दृग चातिक प्रान तपै तरसैं॥
बिन पावस तो इन्हें थ्यावस हो न सु क्यों करि ये अब सो परसैं।
बदरा बरसै ऋतु मैं घिरि कै नितही अँखियाँ उघरी बरसैं॥१९॥

कवित्त

कैसो पट सोपौ पै न पाऊँ कहाँ आहि सो धौं
को धौं जीव आरै अटपटी गति दाह की।

धूम को न धरै गात सीरो परै ज्यों ज्यों जरै
ढरैं नैन नीर बीर हरै मति आह की ॥
जतन बुझैहैं सब जाकी झर आगें अब
कबहूँ न दबै भरी भभक उमाह की ।
जब ते' निहारे घनआनँद सुजान प्यारे
तब तें अनोखी आगि लागि रही चाह की ॥ २० ॥

आँखें जो न देखैं तो कहा हैं कछु देखति ये
ऐसी दुखहाइनि की दसा आय देखिए ।
प्रानन के प्यारे जान रूप उँजियारे बिना
तिहारे मिलन इन्हैं कौन लेखे लेखिए ॥
नीर न्यारे मीन औ चकोर चंदहीन हूँ तैं
अतिही अधीन दीन गति मति पेखिए ।
हौ जू घनआनँद ढरारे रसभरे भारे
चातिक बिचारे सों न चूकनि परेखिए ॥ २१ ॥

जहाँ तैं पधारै मेरे नैननि हीं पाँव धारै
वारै ये बिचारे प्रान पैंड़ पैंड़ पैं मनौ ।
आतुर न होहु हाहा नेकु फैंट छोरि बैठो
मोहि वा बिसासी को है ब्योरो बूझिबो घनौ॥
हाय निरदई कों हमारी सुधि कैसें आई
कौन बिधि दीनी पाती दीन जानि कै भनौ ।
झूठ की सचाई छाक्यो त्यों हित कचाई पाक्यो
ताके गुन गन घनआनँद कहा गनौ ॥ २२ ॥

सोरठा

घनआनँद रस ऐन, कहौ कृपानिधि कौन हित।
मरत पपीहा नैन, दरसौ पै बरसौ नहीं ॥ २३ ॥
पहचानै हरि कौन, मोसे अनपहचान को।
त्यौं पुकार मधि मौन, कृपा कान मधि नैन ज्यौं ॥ २४ ॥

कवित्त

आसा गुन बाँधिकैं भरोसो सिल धरि छाती
पूरे पन सिंधु मैं न बूड़त सकायहौं।
दुख दव हिय जारि अंतर उदेग आँच
निरंतर रोम रोम त्रासनि तचायहौं ॥
लाख लाख भाँतिन की दुसह दसानि जानि
साहस सहारि सिर आरे लौं चलायहौं।
ऐसे घनआनँद गही है टेक मन माहिं
एरे निरदई तोहिं दया उपजायहौं ॥ २५ ॥

सवैया

अंतर आँच उसास तचै अति अंग उसीजै उदेग की आवस।
ज्यों कहलाय मसूसनि ऊमस क्योंहूँ कहूँ सु धरै नहिं थ्यावस ॥
नैन उघारि हियें बरसै घनआनँद छाई अनोखिए पावस।
जीवनमूरति जान को आनन है बिन हेरें सदाई अमावस ॥२६॥
जान के रूप लुभायकै नैननि बेचि करी अधबीच ही लौंड़ी।
फैलि गई घर बाहिर बात सु नीकें भई इन काज कनौंड़ी ॥

क्योंकरि थाह लहै घनआनँद थाह नदी तट ही अति औड़ो।
हाय दई न विसासी सुनै कछु है जग बाजति नेह की डौंडी ॥२७॥

दोहा

जानराय जानत सबै, अंतरगत की बात।
क्यों अजान लौं करत फिर, मो घायल पर घात॥ २८॥

सवैया

लै ही रहे हौ सदा मन और को देवो न जानत जान दुलारे।
देख्यो न है सपनेहूँ कहूँ दुख त्यागे सकोच औ सोच सुखारे॥
कैसो सँजोग वियोग धौं आहि फिरौ घनआनँद ह्वै मतवारे।
मो गति बूझि परै तबहीं जब होहु घरीकहूँ आप तें न्यारे॥२९॥
रोय दई सुधि सोय गई सुधि रोय हँसै उनमाद जग्यो है।
मौन गहै चकि चाकि रहै चलि बात कहै तन दाह दग्यो है॥
जानि परै नहिं जान तुम्हैं लखि ताहि कहा कछु आहि खग्यो है।
सोचनिहीं पचिए घनआनँद हेत पग्यो किधौं प्रेत लग्यो है॥३०॥

कवित्त

घेरि घबरानी उबरानिही रहति घन
आनँद आरत राती साधनि मरति हैं।
जीवन अधार जान रूप के अधार बिन
व्याकुल विकार भरी खरी सुजरति हैं॥
अतन जतन तें अनखि अरसानी पीर
परी पीर भीर क्योंहूँ धीर न धरति हैं।

देखिए दसा असाध अँखियाँ निपेटिनि की
भसमी बिथा पै नित लंघन करति हैं ॥ ३१ ॥

बिकच* नदिन लखैं सकुचि मलिन होति
ऐसी कछू आँखिन अनोखी उरझनि है।
सौरभ समीर आयें बहकि दहकि जाय
राग भरे हिय मैं बिराग मुरझनि है॥
जहाँ जान प्यारी रूप गुन को दीप न लहै
तहाँ मेरे ज्यों परै बिषाद गुरझनि है।
हाय अटपटी दसा निपट चपटै टीसौ
क्यों हूँ घनआनँद न सूझै सुरझनि है॥ ३२।

तब ह्वै सहाय हाय कैसें धौं सुहाई ऐसी
सब सुख संग लै बियोग दुख दै चले।
साँचे रस रंग अंग अंगनि अनंग सौंपि
अंतर मैं बिषम बिषाद बेलि बै चले॥
क्यों धौं ये निगोड़े प्रान जान घनआनँद के
गौहन न लागे जब वे करि बिजै चले।
अतिही अधीर भई पीर भीर घेरि लई
हेली मनभावन अकेली मोहिं कै चले॥ ३३ ॥

रोम रोम रसना ह्वै लहै जो गिरा के गुन
तऊ जान प्यारी निबरैं न मैन आरतैं† ।

---

* बिकसित। † दुःख।

ऐसे दिनदीन दीन की दया न आई दई
लोहि विष भो यो विषम वियोगसर मारतैं ॥
दरस सुरस प्यास भांवरे भरत रहौं
फेरिए निरास मोहिं क्यों धों यों बछार* तैं।
जीवन अधार घनआनँद उदार महा
कैसें घनसुनौ करी चातक पुकार तैं ॥ ३४ ॥
चातिक चुहल चहुँ ओर चाहै स्वातिही कों
सूरे पन पूरे जिन्हें विष सम अमी है।
प्रफुलित होत भान के उदोत कंज पुंज
ता बिन बिचारनिहीं जोतिजाल तमी है॥
चाहौ अनचाहौ जान प्यारे पै आनँदघन
प्रीति रीति विषम सुरोम रोम रमी है।
मोहि तुम एक तुम्हैं मो सम अनेक आहिं
कहा कछु चंदहिं चकोरन की कमी है ॥ ३५ ॥

सवैया

जीवन हौ जिय को सब जानत जान कहा कहि बात जतैए।
जो कछु है सुख संपति सौंज सु नैंसिक की हँसि दैन मैं पैए॥
आनँद के घन लागै अचंभो पपीहा पुकार तें क्यों अरसैए।
प्रीतिपगी अँखियानि दिखाय कै हाय अनीति सुदीठि छिपैए ॥३६॥

---

* बौछार।

कवित्त

चोप चाह चावनि चकोर भयो चाहतहौं
सुखमा प्रकास मुख सुधाकर पूरे कौ।
कहा कहौं कौन कौन विधि को बँधनि बँध्यो
सुरझ्यो न उरझ्यो बनाव लरि जूरे कौ॥
जाही जाही अंग परयो ताही गरि गरि सरयो
हरयो बल बापुर अनंग दल चूरे कौ।
अब बिन देखें जान प्यारी यौं अनंदघन
मेरो मन भयो भट्ट पात है बघूरे कौ॥ ३७॥

दोहा

मोही मोह जनाय कै, अहे अमोही जोहि।
सो हौं मो ही सो कठिन, क्योंकरि सोहौं तोहि॥ ३८॥

कवित्त

बिधु लौं बिगारयो तब कै बिगासी आपधारयो
आन्यो हुतौ मन मैं सनेह कछु रोस सो।
अब ताकी ज्वाल में पजरिबो रे भली भाँति
नीकैं आदि असह उदेग दुख सोस सो॥
तप बढ़ि तुरत परोस लौं सकल सुख
परयो आय सोषक वियोग बैरी ओस सो।
रुचि हौं के राजा जान प्यारे यौं अनंदघन
होत कहा हेरें रंक मान लीनी मोस सो॥ ३९॥

सूझै नहीं सुरझ उरझि नेह गुरझनि
मुरझि मुरझि निस दिन डाँवाँडोल है।
थाह को न थाह दैया कठिन भयो निबाह
चाह के प्रवाह बोरयो दारुन कै लोल है॥
वे तौ जान प्यारे निधरक हैं अनंदघन
तिनकी धौं गूढ़ गति मूढ़मति को लहै।
आगें न विचारयो अब पाछें पछताएँ कहा
जान मेरे जियरा वनी को कैसो मोल है॥ ४०॥
अंतर उदेग दाह आँखिन प्रवाह आँसू
देखौ अटपटा चाह भीजनि दहनि है।
सोइबौ न जागिबौ हूँ हँसिबौ न रोइबौ हूँ
खोय खोय आपही मैं चेटक लहनि है॥
जान प्यारे प्राननि बसत पै अनंदघन
विरह विषम दसा मूक लौं कहनि है।
जीवन मरन जीव मीच बिना बन्यो आय
हाय कौन विधि रची नेही की रहनि है॥ ४१॥

सवैया

हनिधान सुजान समीप तौ सींचतही हियरा सियराई।
ाई किधौं अब और भई दई हेरतही मति जाति हिराई॥
विपरीति महा घनआनँद अंबर तें धर कों झर आई।
ारति अंग अनंग की आंचनि जोन्ह नहीं सु नई अँव लाई॥४२॥

कवित्त

नैननि मैं लागै आय जागै सु करेजे बीच
वा बस है जीव धीर होत लोटपोट है।
रोम रोम पूरि पीर व्याकुल सरीर महा
घूमैं मति गति भासैं प्यास की न टोट है॥
चलत सजीवन सुजान दृग हाथनि तैं
प्यारे अनियारी रुचि रखवारी वोट है।
जब जब आवै तब तब अति मन भावै
महा कहा विषम कटाच्छ सर चोट है॥ ४३॥

पाती मधि छाती छत लिखि न लिखाए जाहिं
काती लै विरह घाती कीने जैसे हाल हैं।
आँगुरी बहकि तहीं पाँगुरी किलकि होति
ताती राती दसानि के जाल ज्वाल माल हैं॥
जान प्यारे जौ न कहूँ दीजिये सनेसौ तौ न
आवा मम कीजिए जु कान तिहि काल हैं।
नेह भीजी बातैं रसना पै उर आँच लागैं
जागैं घनआनँद ज्यौं पुंजनि मसाल हैं॥ ४४॥

सवैया

कंत रमैं उर अंतर मैं सु लहै नहीं क्यों सुख रासि निरंतर।
दंत रहैं गहैं आँगुरी ते जु वियोग के तेह तचे परतंतर॥
जो दुख देखत हौं घनआनँद रैन दिना विन जान सुतंतर।
जानैं बेई दिन राति बखाने तें जाय परै दिन राति कौ अंतर॥४५॥

चंद चकोर की चाह करै घनआनँद स्वाति पपीहा को धावै।
त्यों त्रस रैन के ऐन बसै रवि मीन पै दीन ह्वै सागर आवै॥
मोसों तुम्हैं सुनौ जान कृपानिधि नेह निबाहिबौ यों छवि पावै।
ज्यौं अपनी रुचि राचि कुबेर सु रंकहि लै निज अंक बसावै॥४६॥

ज्यों बुध सों सुघराई रचै कोऊ सारदा कों कविताई सिखावै।
मूरतिवन्त महालछमी उर पोत हरा रचि लै पहिरावै॥
रागबधू चित चोरन के हित सोधि सुधारि कै तानहि गावै।
त्योंहीं सुजान तियैं घनआनँद मो जिय-चोर ई रीति (?) रिझावै ४७

कवित्त

हिये मैं जु आरति सु जारति उजारति है
मारति मरोरे जिय झारनि कहा करौं।
रसना पुकारि कै विचारी पचिहारि रहै
कहै कैसें अकह उदेग रुँधि कै मरौं॥
हाय कौन वेदनि विरंचि मेरे बाँट कीनी
निघटि परौं न क्योंहूँ ऐसी विधि ह्वौं गरौं।
आनँद के घन हौ सजीवन सुजान देखो
सीरी परी सोचनि अचंभे सों जरौं भरौं॥ ४८॥

सवैया

पाप के पुंज सकेलि सु कौन धों आनि घरी में विरंचि बनाई।
रूप की लोभनि रीझ भिजाय कैं हाय इतें पैं सुजान मिलाई॥
क्यों घनआनँद धीर धरैं बिन पांख निगोड़ी मरैं अकुलाई।
प्यास भरीं बरसैं तरसैं मुख देखन कों अँखियाँ दुखहाई॥४९॥

साधनहा मरिए भरिए अपराधनि बाधनि कें गुन छावत।
हेरे कहा सपनेहूँ न देखत नैन यों रैन दिना झर लावत॥
जौ कहूँ जात लखैं घनआनँद वो तन नेकु न औसर पावत।
कौन वियोग भरे अँसुवा जु सँजोग में आगेंई देखन धावत॥५०॥

कवित्त

उठि न सकत ससकत नैन बान बिंधे
इतेहूँ पै विषम विषाद जुर लू बरें।
सूरे पन पूरे हेत खेत तें टरें न कहूँ
प्रीति बाँक बापुरे भए हैं दबि कूबरे॥
संकट समूह में विचारे घिरे घुटैं सदा
जानो न परत जान कैसें प्रान ऊबरे।
नेही दुखियान को यहै गति अनंदघन
चिंता मुरझानि सहै न्याय रहैं दूबरे॥ ५१॥
सुखनि समाज साज सजे चित सेवैं सदा
जित नित नए हित फन्दनि गसत हौ।
दुखतम पुंजनि पठाय दै चकोरनि पैं
सुधाधर जान प्यारे भलें ही लसत हौ॥
जीव सोच सूखै गति सुमिरें अनंदघन
कितहूँ उपरि कहूँ घुरि कै रसत हौ।
उजरनि बसी है हमारी अँखियानि देखौ
सुबस सुदेस जहाँ भावते बसत हौ॥ ५२॥

तपति उसास औधि रूँधिए कहाँ लौं देया,
बात बूझे सैननिहीं उतर उचारियै।
उड़ि चल्यो रंग कैसें राखियै कलंको मुख
अनरेखे कहाँ लौं न घूँघट उघारियै॥
जरि बरि छार हूँ न जाय हाय ऐसी बैस
चित चढ़ी मूरति सुजान क्यों उतारियै।
कठिन कुदाँय आय घिरी हौं अनँदघन
रावरी बसाय तौ बसाय न उजारियै॥ ५३॥

सवैया

अकुलानि के पानि परयो दिन राति सु ज्यों छिनकौ न कहूँ बहरै।
फिरबोई करै चित चेटक चाक लौं धीरज को ठिक क्यों ठहरै॥
भए कागद नाव उपाव सबै घनआनँद नेह नदी गहरै।
बिन जान सजीवन कौन हरै सजनी बिरहानल की लहरै॥५४॥

कवित्त

राति द्यौस कटक सजेही रहै दहै दुख
कहा कहौं गति या वियोग बजमारे की।
लियो घेरि औचक अकेलौ कै बिचारौ जीव
कछु न बसाति यौ उपाय बलहारे की॥
जान प्यारे लागौ न गुहार तौ जुहार करि
जूझि है निकसि टेक गहे पन धारे की।
हेत खेत धूरि चूरि चूरि ह्वै मिलैगो तब
चलैगी कहानी घनआनँद तिहारे की॥ ५५॥

जान प्यारी हौं तौ अपराधनि सौं पूरन हौं
कहा कहौं ऐसी गति आवत गरो रुक्यो ।
साध मारै सुधा तो सुभाइ किमि गसै ताकों
आसा लै दहति मैं चरन कंज सों ढुक्यों ॥
इतै पै जो रोस कै रसीली हियो पोढ़ो करो
तौ न कहूँ गैर जी को वेहू झगरो चुक्यो ।
ऐसें सोच आँचनि अनँदघन सुधानिधि
लपट कढ़ै न नेकौ हाहा जात ज्यों फुक्यो ॥ ५६॥
सुधा तें स्रवत विष फूल में जमत सूल
तम उगिलत चद भई नई रीति है ।
जल जारै अंग और राग करै सुरभंग
संपति बिपति पारै बड़ी बिपरीति है ॥
महागुन गहै दोषै औषधि हूँ रोग पोषै
ऐसें जान रस माहि बिरस अनीति है ।
दिननि को फेर मोहि तुम मन फेरि डारयो
अहो घनआनँद न जानौ कैसी बानि है ॥ ५७ ॥
गरल गुमान की गरावनि दसा को पान
करि करि सांस रैन प्रान घटि घोटिबो ।
हेत खेत धूरि चूरि चूरि साम पाव रारि
विष समुहेगवान आगें उर ओटिबो ॥
जान प्यारे जो न मन आनै तौ आनँदघन
मूरति तू न सुमिरि परेखें धरा घोटिबो ।

तिन्हैं यों सिराति छाती तोहि वै लगति ताती
तेरे बाँटें आयो है अँगारनि पै लोटिबो ॥ ५८ ॥

बिकल बिषाद भरे ताही की तरफ तकि
दामिनि हूँ लहकि बहकि यों जरयो करै।
जीवन अधार घन पूरित पुकारनि सों
आरत पपीहा नित कूकनि-करयो करै ॥
अथिर उदेग गति देखिकैं आनंदघन
पौन पीड्यो सो बन बीथनि ररयो करै।
बूँद न परति मेरें जान जान प्यारी तेरे
बिरही को हेरि मेघ आँसुनि भरयो करै ॥ ५९ ॥

सवैया

सोयें न सोइबो जागें न जाग अनोखियै लाग सु आँखिन लागी।
देखत फूल पै भूल भरी यह सूल रहै नित ही चित लागी ॥
चेटक जान सजीवनमूरति रूप अनूप महा रस पागी।
कौन बियोग दसा घनआनँद मो मति संग रहै अति खागी ॥६०॥
मरिबौ बिसराम गनै वह तौ यह बापुरौ मीत तज्यो तरसै।
वह रूप छटा न सँभारि सकै यह तेज तबै चितवै बरसै ॥
घनआनँद कौन अनोखो दसा मति आवरी बावरी ह्वै थरसै।
बिछुरें मिलें मीन पतंग दसा कहा मो जिय की गति कों परसै ६१

कवित्त

तेरे देखिबे कों सबही सें अनदेखी करी
तू हूँ जो न देखै तो दिखाऊँ काहि गति रे।

सुनि निरमोही एक सोही सों लगाव मोही
सोही कहि कैसें ऐसी निठुराई अति रे ॥
विष भी कथानि मानि सुधा पान करो जान
जीवननिधान ह्वै विसासी मारि मति रे।
जाहि जो भजै सो ताहिं तजै घनश्रानँद क्यों
हति कै हितूनि कहो काहू पाई पति रे ॥ ६२ ॥
लगी है लगनि प्यारे पगी है सुरति तो सौं
जगी है विकलताई टगि सी मदा रहै ।
जियरा उड्यो सो डोलै हियरा धकयोई करै
पियराई छाई तन सियराई दौ दहै ॥
ऊनो भयो जीवो अब सूनो सब जग दीसै
दूनो भयो दुख एक एक छिन मैं सहै ।
तेरे जी न लेखो मोहि मारत परेखो महा
जान घनश्रानँद पेपोइ बौलहल हैं (?) ॥६३॥
कौन की सरन जैयें आपु त्यों न काहू पैयें
सूनो सो चितैयें जग दैया किव कूकियै ।
सोचनि समैयें. मति हेरत हिरैयें उर
आसुनि भिजैयें ताप तैयें तन सूकियें ॥
क्योंकरि बितैयै कैसे कहा धौं रितैयें मन
विना जान प्यारे कब जीवनि तें चूकियें ।
बनी है कठिन महा मोहि घनश्रानँद यों
मीचौ मरि गई आसरो न जित ढूकियै ॥ ६४ ॥

अधिक बधिक तें सुजान रीति रावरी है
कपट चुगौ दै फिरि निपट करौ बरी।
गुननि पकरि लै निपाख करि छोरि देहु
मरहि न जीयै महा विषम दया छुरी॥
हौ न जानौं कौन धौं है या मैं सिद्धि स्वारथ की
लखी क्यौं परति प्यारे अंतर कथा दुरी।
कैसे आसा द्रुम पै बसेरौ लहै प्रान खग
बनक निकाई घनआनँद नई जुरी॥ ६५॥

मेरो मन तोहि चाहै तू न तनको उमाहै
मीन जल कथा है कि याहू ते विसेखिए।
ता बिन सो मरै छूटि परै जड कहाँ टरै
मरौं हौं न मरौं जान हिए अवरेखिए॥
पल को बिछोह आगे कलपो अलप लागै
बिलपौं सदाई नेक तलफनि देखिए।
सूनो जग हेरौं रे अमोही कहि काहि टेरौं
आनँद के घन ऐसी कौन लेखें लेखिए॥ ६६॥

मुरझाने सबै अंग रह्यो न तनक रंग
बैरी सु अनंग पीर पात्रै झरि गयो ना।
इते पै बसंत सो सहायक समीप याके
महा मतवारौ कहूँ काहू ते जु नयो ना॥
तीखे नए नीके जी के गाहक सरनि
बेधै मन कौ कपूत

पवन गवन संग प्राननि पठाय द्वै तौ
जान घनआनँद को आवन जौं भयो ना ॥ ६७ ॥

सवैया

निस द्यौस खरी उर माँझ अरी छवि रंग भरी मुरि चाहनि की।
तकि मोरनि त्यों चख ढोरि रहैं ढरिगो हिय ढोरनि बाहनि की॥
चट दै कटि पै बट प्रान गए गति सों मति मैं अवगाहनि की।
घनआनँद जान लख्यो जब तें जक लागियै मोहि कराहनि की॥६८॥
किहि नेह विरोध बढ्यो मन सों उर आवत कौन के लाज गई।
जिहि के भरि भार पहार ढ्यै जग माँझ भई तिन तें हरई॥
दृग काहि लगे जु कहूँ न लगैं मन मानिक ही अनखानि ठई।
घनआनँद जान अजौं नहिं जानत कैसे अनैसे है हाय दई॥६९॥
इन बाट परी सुधि रावरे भूलनि कैसे उराहनो दीजियै जू।
अब तौ सब सीस चढ़ाय लई जु कछू मन भाई सु कीजियै जू॥
घनआनँद जीवन प्रान सुजान तिहारियै बातनि जीजियै जू।
नित नीके रहौ तुम चाडु*कहाय असीस हमारियौ लीजियै जू ७०
बधिकौ सुधि लेत सुन्यो छतिकै गति रावरी केहूँ न बूझि परै।
मति आवरी बावरी ह्वै जकि जाय उपाय कहूँ किन सूझि परै॥
घनआनँद यों अपनाय तजी इन सोचनि हीं मन मूर्झि परै।
दिन रैन सुजान वियोग के बान सहै जिय पापी न जूझि परै॥७१॥

---

* चाडु = चतुर। † मूर्झि परै = मोहित होता है।

कवित्त

एरे बीर पौन तेरो सबै ओर गौन वारी
तो सो और कौन मनै ढरकौहीं बानि दै ।
जगत के प्रान ओछे बड़े सो समान घन-
आनँद निधान सुख दान दुखियानि दै ॥
जान उजियारे गुन भारे अति मोही प्यारे
अब ह्वै अमोही बैठे पीठि पहिचानि दै ।
बिरह बिथा की मूरि आँखिन मैं राखौं पूरि
धूरि तिन पायनि की हाहा नैकु आनि दै ॥ ७२ ॥

एकै आस एकै बिसवास प्रान गहैं वास
और पहिचानि इन्हें रही काहू सौं न है ।
चातक लौं चाहैं घनआनँद तिहारी ओर
आठौ जाम नाम लै बिसारि दोनी मौन है ॥
जीवनअधार प्रान सुनिए पुकार नेक
अनाकानी दैबो दैया घाय कैसो लौन है ।
नेहनिधि प्यारे गुन भारे ह्वै न रूखे हूजै
ऐसो तुम करौ तौ बिचारन कें कौन है ॥ ७३ ॥

सवैया

रंग लियो अबलानि के अंग तैं च्वाय कियो चित चैन को चोवा ।
और सबै सुख सौंधे सकेलि मचाय दियो घन आनँद ढोवा ॥
प्रान अबीरहि फैंट भरें अति छाकयो फिरै मति की गति खोवा ।
स्याम सुजान बिना सजनी ब्रज यौं बिरहा भयो फाग बिगोवा ॥७४॥

कवित्त

पीरी परी देह छीनी राजत सनेह भीनी
कीनी है अनंग अंग अंग रंग बोरी सी।
नैन पिचकारी ज्यों चल्योई करै रैन दिन
बगराए बारनि फिरति झकझोरी सी॥
कहाँ लौं बखानौं घनआनँद दुहेली दसा
फागमयी भई जान प्यारी वह भोरी सी।
तिहारे निहारे बिन प्राननि करत होरा
बिरह अँगारनि मगरि* हिय होरी सी॥ ७५॥

कहाँ एतो पानिप बिचारी पिचकारी धरै
आँसू नदी नैननि उमगियै रहति है।
कहाँ ऐसी राँचनि हरद केसू केसरि मैं
जैसी पियराई गात पगियै रहति है॥
चाँचरि चौपही हू तौ औसरही माचति पै
चिंता की चहल चित लगियै रहति है।
तपनि बुझे बिन आनँदघन जान बिन
होरी सी हमारे हियें लगियै रहति है॥ ७६॥

दसन बसन बोलौ भरियै रहै गुलाल
हँसनि लसनि त्यों कपूर सरस्यो करै।
साँसनि सुगंध सोंधे कोरिक समोय धरे
अंग अंग रूप रंग रस बरस्यो करै॥

---

* मगरि = छोकड़ी।

जान प्यारी तो तन अनंदघन हित नित
अमित सुहाग राग फाग दरस्यो करै।
इतै पै नवेली लाज अरस्यो करै जु प्यारो
मन फगुवा दै गारी हूँ को तरस्यो करै ॥ ७७ ॥

सवैया

घरही घर चौचँद चाँचरि दै बहु भाँतिनि रंग रचाय रह्यो।
भरि नैन हिये हरि सूझि सम्हार सबै करि नाक नचाय रह्यो॥
घनआनँद पै ब्रजगोरिनि कौं नख तें सिख लों चरचाय रह्यो।
लखि सूनौ सकै कित रावरो ह्वै बिरहा नित फाग मचाय रह्यो ७८

कवित्त

फागुन महीना की कही ना परैं बातैं दिन
रातैं जैसी बीतत सुनै तें डफ घोर कों।
कोऊ उठै तान गाय प्रान बान पैठि जाय
चित बीच परी पै न पाऊँ चितचोर कों॥
मची है चुहल चहूँ ओर चोप चाँचरि सों
कासों कहौं महीं हौं बियोग झकझोर कों।
मेरो मन आली वा बिसासी घनमाली बिनु
बावरे लौं दौरि दौरि परै सब ओर कों ॥ ७९ ॥

सवैया

सौंधे की बास उसासहिं रोकत चंदन दाहक गाहक जी को।
नैननि वैरी सो है री गुलाल अबीर उड़ावत धीरज ही को॥

राग विराग धमार त्यों धार सी लौटि परयो ढँग यों सबही कौ।
रंग रचावन जान बिना घनआनँद लागत फागुन फीकौ ॥८०॥
सुन री सजनी रजनी की कथा इन नैन चकोरनि ज्यों बितई।
मुख चंद सुजान सजीवन कौ लहि पायें भई कछु रीति नई॥
अभिलाषनि आतुरताई घटा तब ह्वाँ घनआनँद आनि छई।
सु बिहात न जानि परी भ्रम सों कबहूँ बिसवासिनि बीति गई ८१
मन जैसें कछू तुम्हैं चाहत है सु बखानिए कैसें सुजान ह्वौ हौ।
इन प्राननि एक सदा गति रावरे बावरे लौं लगियै नित लौ॥
बुधि औ सुधि नैननि बैननि मैं करि बास निरंतर अंतर गौ।
उघरी जग छाय रहे घनआनँद चातक त्यों तकियै अब तौ॥८२॥
लगियै रहै लालसा देखन की किहि भाँति भटू निसि द्यौस कटै।
करि भीर भरी यह पीर महा बिरहा तनिकौ हिय तें न हटै॥
घनआनँद जान सँयोग समै बिसमै बुधि एकही बेर बटै।
सपनो सो टरै फिरि सौगुनौ चेटक बाढ़त डाढ़त घोटि घटै॥८३॥
अति सूधो सनेह को मारग है जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं।
तहाँ साँचे चलैं तजि आपन पौ झझकैं कपटी जे निसाँक नहीं॥
घनआनँद प्यारे सुजान सुनौ यहाँ एक तें दूसरौ आँक नहीं।
तुम कौन धौं पाटी पढ़े हौ कहौ मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं॥८४॥

कवित्त

करुवो मधुर लागै वाको विसु अंग भयें
याहि देखें रसहूँ में कटुता बसति है।

वाके एक सुख ही ते बाढ़त विकार तन
यह सरबंग आनि प्राननि गसति है ॥
सुंदर सुजान जू सजीवन तिहारो ध्यान
तासों कोटि गुनी ह्वै लहरि सरसति है ।
पापिनि इरारी भारी सापिनि निसा बिसारी
वैरिनि अनोखी मोहि डाहनि डसति है ॥८५॥
कारी कूर कोकिल कहाँ को वैर काढ़ति री
कूकि कूकि अबहीं करेजो किन कोरि लै ।
पैंड़ परे पापी ये कलापी निस द्यौस ज्योंहीं
चातक घातक त्योंही तुहूँ कान फोरि लै ॥
आनँद के घन प्रान जीवन सुजान बिना
जानि कै अकेली सब घेरौ दल जोरि लै ।
जौ लौं करैं आवन बिनोद बरसावन वे
तौ लौं रे डरारे बजमारे घन घोरि लै ॥८६॥

सवैया

बैरी बियोग को हूकनि जारत कूकि उठै अचका अधिरातक ।
बेधतु प्रान बिनाहीं कमान सु बान से बोल सों कान ह्वै घातक ॥
सोचनि हीं पचियै बचिए कित डोलत मो तन लाए महा तक ।
वे घनआनँद जाय छए उत पैंडे परो इत पातकी चातक ॥८७॥

कवित्त

अंतर मैं वासी पै प्रवासी कैसो अंतर है
मेरी न सुनत दैया आपनीयौ ना कहै ।

लोचननि तारे ह्वै सुझावो सब सूझौ नाहि
बूझी न परति ऐसो सोचनि कहा दहौ ॥
हौ तौ जानराय जाने जाहु न अजान या ते
आनँद के घन छाया छाय उघरे रहौ।
मूरति मया की हा हा सूरति दिखैए नेकु
हमैं खोय या बिधि हो कौनधौं लहा लहौ ॥८८॥

सवैया

कित को ढरिगो वह ढार अहो जिहि मो तन आँखिन ढोरत हे।
अरसानि गही वहि बानि कछू सरसानि सों आनि निहोरत हे॥
घनआनँद प्यारे सुजान सुनौ तब यों सब भाँतिनि भोरत हे।
मन माहिं जो तोरन हौ तो कहौ बिसवासी सनेह क्यों जोरत हे ८९
घनआनँद प्यारे सुजान सुनौ जिहि भाँतिनि हौं दुख सूख सहौं।
नहीं आवनि औधि न रावरी आस इतेक पै एक सी बाट चहौं॥
यह देखि अकारन मेरी दसा कोऊ बूझै तौ उत्तर कौन कहौं।
जिय नेकु बिचारि कै देहु बताय हहा पिय दूरि तैं पाय गहौं॥९०॥
बिरहा रवि सों घट व्योम तच्यो बिजुरी सी खिवैं इकली छतियाँ(?)
हिय सागर तें दृग मेघ भरे उघरे बरसैं दिन औ रतियाँ॥
घनआनँद जान अनोखी दसा न लखौ दई कैसे लिखौं पतियाँ।
नित सावन डीठि सु बैठक मैं टपकै बरुनी तिहि ओलतियाँ॥९१॥
इन बाँयनि आँवरे औरं भरैं उत पायनि चाहि चकोर चकैं।
निसि बासर फूलनि सूलनि मैं अति रूप की बान न क्योंर मकैं॥

घनआनँद घूँघट ओट भए सब बावरे लौं चहुँ ओर तकैं।
पिय तौ मुख को तुम (?) देखि सखी निज नैन विसेष सुजान छकैं ८२

कवित्त

मोहन अनूप रूप सुंदर सुजान जू को
ताहि चाहि मन मोहि दसा महा मोह की।
अनोखी हिलग दैया बिछुरैं तौ मिल्यो चाहै
मिलेंहू में मारैं जारैं खरक बिछोह की॥
कैसैं धरौं धीर बीर अतिही असाध पीर
जक्ष हीन रोग याहि नीकैं करि टोह की।
देखैं अनदेखैं तहाँ अटक्यो अनंदघन
ऐसी गति कहौ कहा चुंबक औ लोह की॥८३॥

सवैया

क्योंहूँ न चैन परै दिन रैन सु पैंडे पर्यो बिरहा बजमारौ।
क्यों बहरै न कहूँ छन एकहू चाहै सुजान सजीवन प्यारौ॥
ऐसी चढ़ी घनआनँद वेदनि दैया उपाय तैं आवै तैंवारौ।
हौंहीं भरौं अकली कहौं कौन सों जा विध होत है साँझ सवारौ८४

कवित्त

जोई रात प्यारे संग बातनि न जात जानी
सोई अब कहाँ तैं बढ़नि लिएँ आई है।
जोई दिन कंत साथ जीवन को फल लाग्यो
सोई बिन अंत देत अंतक दुहाई है॥

इनकी तौ रहौ मेरे अंग अंग औरै भए
सूखी सुख लता झालरति मुरझाई है।
आली घनआनँद सुजान सौं बिछुरि परें
आयौ न मिलत महा विपरीति छाई है ॥६५॥

सवैया

जिन आँखिनि रूप चिन्हारि भई तिनको नित नींद हो जागनि है।
हित पीर सौं पूरित जो हियरा फिर ताहि कहौ कहुँ लागनि है॥
घनआनँद प्यारे सुजान सुनौ जियराहिं सदा दुख दागनि है।
सुख मैं मुख चंद बिना निरखे नख तें सिख लौं विष पागनि है ॥६६॥

कवित्त

घर बन वीथिन मैं जित तित तुम्हैं देखौं
इतेहू पैं मैं न भई नई बिरहा-मई।
विषम उदेग आगि लपटै अवर लागें
कैसैं कहौं जैसैं कछू तचनि महा तई ॥
फूटि फूटि टूक टूक ह्वै कै वहि जाय हियौ
बचिबो अचंभो मीचौ निदर करै गई।
आनँद के घन लखें अनलखें दुहूँ ओर
दई मारी हारी हम आप हौ निरदई ॥६७॥

सवैया

बिरच्यो किहिं दोस न जानि सकौं जु गयो तजि मो मन रोसन तैं।
जिय ता बिन यों अब आतुर क्यों तब तौ तनकौ विरमायो न तैं॥

घनआनँद आन अमोही महा अपनाय इतै पर त्यागि हतै ।
मध बीच परो दुख ज्वाल अरे सबको सुख को हठि छारद (?) दै ९८
पूरन प्रेम को मंत्र महा पन जा मधि मोधि सुधार है लेख्यो ।
ताही के चारु चरित्र विचित्रनि यो पचि कै रचि राखि बिसेख्यो ॥
ऐसो हियो हित पत्र पवित्र जु आन कथा न कहूँ अवरेख्यो ।
सो घनआनँद जान अजान लौं टूक कियो पर बाँचि न देख्यो ।९९।
जीव की बात जनाइए क्योंकरि जान कहाय अजाननि आगौ ।
तीरनि मारि कै पीर न पावत एक सो मानत रोइबो रागौ ॥
ऐसी बनी घनआनँद आनि जु आन न सूझत सो किन त्यागौ ।
प्रान मरैंगे भरैंगे बिथा पै अमोही सों काहू को मोह न लागौ १००
तोहि तौ खेल पै मो हिय सेल सो एरे अमोही बिछोह महा दुख ।
जाहि जु लागै सु ताहि सहैगो दहैगो परो लहि तू तौ सदा सुख॥
एकही टेक न दूसरी जानत जीवन प्रान सुजान लिए रुख ।
ऐसी सुहाय तौ मेरी कहा बस देखिहौं पीठि दुरायहौ जो मुख ॥१०१॥

छप्पय

महो दूध सम गनै हंस बक भेद न जानै ।
कोकिल काक न ज्ञान काँच मनि एक प्रमानै ॥
चंदन ढाक समान राँग रूपौ सम तौलै ।
बिन विवेक गुन दोष मूढ़ कवि ब्योरि न बोलै ॥
प्रेम नेम हित चतुरई जे न बिचारत नैक मन ।
सपनेहूँ न बिलंबियै छिन तिन ढिग आनंदघन ॥१०२॥

कहिए काहि जवाय हाय जो मो मधि बीतै ।
जरनि बुझी दुग ज्वाल घरी निस बामरही वै॥
दुसह सुजान वियाग बसो वाही सँयोग नित ।
बहरि परेँ नहिं समय गयेँ जियरा जित को वित॥
अहो दई रचना निरखि रीझि खीझि मुरझौ सु मन ।
ऐसी बिरचि बिरंचि को कहा सरयो आनँदघन ॥१०३॥

सवैया

प्यार को सो सपनो हँसि हेरनि ऐसी चितौनि कहौ कहाँ पाई।
बंक महा विस मोदन प्रान सुधाई सनी मुसकानि सुघाई॥
यों घनआनँद चेटक मूरति लै जब अंतर ज्वाल वसाई।
कैसे दुराइहै जान अमोही मिलाप में एतियै ऊपमताई ॥१०४॥

कवित्त

मिलत न कहूँ भरे रावरे अमिलताई
हिए मैं किए विसाल जे विछोह छत हैं।
प्रीतम अनेरे मेरे घूमत घनेरे प्रान
विष-मोए विषम बिसास बान हत हैं॥
प्यार में परम पूरी सुन्योहू न हो सो देख्यो
जान परी जान ये अमोहिन के मत हैं।
पैान को प्रवेस हो न जहाँ घनआनँद यों
तहाँ लै कहाँ तैं बीच पारे परवत हैं ॥१०५॥
आनाकानी आरसी निहारिबो करौगे कौ लों
कहा मो चकित दसा त्यों न दीठि डोलिहै।

मौनहू सौं देखिहौं कितेक पन पालिहौ जू
कूक भरी मूकता बुलाय आप बोलिहै ॥
जानि घनआनँद यौं मोहि तुम्हैं पैज परी
जानियैगो टेक टरैं कौन धौं मलोलिहै ।
रुई दिए रहौगे कहा लौं बहराइबे की
कबहूँ तौ मेरियै पुकार कान खोलिहै ॥१०६॥

सवैया

घनआनँद जान सुनौ चित दै हित रीति दई तुम पै सजि कै ।
इत साहस सों घन संकट काटिक आप समाजनि को गजि कै ॥
मन कैं पन पूरन पूरि रह्यौ सु तजै किन या बिधि सों भजि कै ।
यह देखि सनेह बिदेह दसा अति हीन ह्वै दीन गए लजि कै ॥१०७॥

कवित्त

रूप उजियारे जान प्रानन के प्यारे कब
करौगे जुन्हैया दैया बिरह महा तमैं ।
सुखद सुधा सों हँसि हरनि बिथाउ हिय
जियहि जिवाइ मारिहौ बड़ेग सोग मैं ।
सुंदर सुदेस आँगै चहूँयो बनाय आय
बसिहौ हवेली अँगो हुलसि हिए रमैं ।
ह्वै है सोऊ घरी भाग उघरी अनंदघन
सुरस बरसि लाल देखिहौ हरी हमैं ॥१०८॥

सवैया

किंसुक पुंज से फूलि रहे सु लगी उर दौ जु वियोग बिहारें।
मावो फिरै न घिरै अबलानि पैं जान मनोज यों डारत मारें॥
ह्वै अभिलाषनि पातनि पात कढ़ै हिय सूख उसासनि हारें।
है पतझार बसंत दुहूँ घनआनँद एकहि बार हमारें॥१०९।
जीवनिमूरति जान सुनौ गति जौ जिय रावरो पार न पावतौ।
संगम रंग अनंग उमंगनि झूमिन आनँद अंबुद छावतौ॥
लाड़िलौ जोबन रयों अधरासव चाँपनि लोभी मनै नहिं भावतौ।
तौ परदाहक प्राननि गाहक रूखे भए कौ परेखो न आवतौ॥११०

कवित्त

तेरी बाट हेरत हिराने औ पिराने पल
थाके ये विकल नैना ताहि नपि नपि रे।
हिए मैं उदेग आगि लागि रही रात द्यौस
तोहि कों अराधौं जान माधौं तपि तपि रे॥
जान घनआनँद यों दुसह दुहेली दसा
बीच परि परि प्रान पिसे चपि चपि रे।
जीवे तें भई उदास तऊ है मिलन आस
जीवहि जिवाऊँ नाम तेरो जपि जपि रे॥१११॥
तोहि सब गावैं एक तोही कों बतावैं बेद
पावैं फल ध्यावैं जैसी भावनानि भरि रे।
जल थल व्यापी सदा अंतरजामी उदार
जगत में नाम जानराय रह्यौ परि रे॥

एते गुन पाय छाय छाय घनआनँद यों
कैधों मोहि दीस्यो निरगुन हो नघरि रे ।
जरौं बिरहागिनि मैं करौं हौं पुकार कासों
दई गयो तुहूँ निरदई ओर ढरि रे ॥११२॥
चंदहि चकोर करै सोऊ ससि देह धरै
मनसा हू रहै एक देखिबे को रहै ह्वै ।
ज्ञानहूँ तें आगे जाकी पदवी परम ऊँची
रस उपजावै तामें भोगी भोगजात (?) ह्वै ॥
जान घनआनँद अनोखो यह प्रेम पंथ
भूले ते चलत रहैं सुधि के थकित ह्वै ।
बुरो जिन मानौ जौ न जानौ कहूँ सीख लेहु
रसना के छाले परैं प्यारे नेह नावँ लै ॥११३॥

सवैया

घनआनँद जीवन रूप सुजान ह्वै पावत क्यों दरप्यास नहीं ।
मन फूलि रहै कुसुमाकर मैं सुकहूँ पहिचान की बास नहीं ॥
रसिकाई भरे अपने मन पैं सपने रस आस हूँ पास नहीं ।
पचि कैसे बिरंचि रचे हौ कहौ जु हियूनि हतौ हिय त्रास नहीं ११४
एले परे दृग मौन सुजान जे तें बहुरें कब आय दगायहौ ।
मोचन हीं गुरभूरी पिय जौ हिय सो सुग सींचि पहेग नमायहौ ॥
दाघ दई घनआनँद ह्वै करि कौनों बियोग के ताप तपायहौ ।
ये हो हँसी जिन जानौ हहा हमैं रुवाव कहौ अब काहि हँसायहौ ११

कवित्त

जहाँ तैं पधारे मेरे नैननहीं पाव धारे
　　बारे ये बिचारे प्रान पैंड़ पैंड़ पै मनौ।
आतुर न होहु हाहा नेकु फेंट छोरि बैठौ
　　मोहि वा बिसासी को है ब्यौरो बूझिबे घनौ॥
हाय निरदई को हमारी सुधि कैसें आई
　　कौन बिधि दीनौ पानी दीन जानि कै भनौ।
झूठ की सचाई छाक्यौ त्यौं हित कचाई पाक्यौ
　　ताके गुन गन घनआनँद कहा गनौ ॥११६॥

निबही अपूरब सुधाधर बदन आछो
　　मित्र अंक आए जोति ज्वालनि जगतु है।
अमित कलानि ऐन रैन द्यौस एक रस
　　केस तम सम रंग रावनि पगतु है॥
सुनि जान प्यारी घनआनँद तें दूनो दिपै
　　लोचन चकोरनि सों चोपनि खगतु है।
नीठि डीठि परें खरकत सो किरकिरी लौं
　　तेरे आगे चंद्रमा कलंकी सो लगतु है॥११७॥

उघरि नचे हैं लोकलाज ते बचे हैं पूरी
　　चोपनि रचे हैं सुदरस लोभी रावरे।
जके हैं थके हैं मोह मादिक छके हैं अन-
　　बोले पै बके हैं दसा चितै चित चावरे॥

गाढ़े भुजदंडनि के बीच उर मंडन कौं
घारि घनआनंद यों सुखनि समेटिहौं।
मथत मनोज सदा मो मन पै हौंहूँ कब
प्रानपति पास पाय तासु मद फेटिहौं ॥१२२॥
सोए बहुतेरौ मेरौ सोचहूँ निबेरौ हेरौ
हौं न जानौं कबधों उनींदे भाग जागेंगे।
पीर भरे लोचन अधीर हौं न जानत जू
कौन घरी रूप के रसोत जगमगेंगे॥
अंग अंग तुम्हें कौलौं दहैगो अनंग कहूँ
रंग भरी देह जानि प्यारे संग खगेंगे।
चलौ प्रान पलो परे दूरि यौं कलमलौ क्यों
बिना घनआनद कितेक दुख दगेंगे॥१२३॥

सवैया

दृग नीर सों दीठिहिं देहुँ बहाय पै वा मुख कौ अभिलाषि रही।
रसना बिष बोरि गिराहि गसौ वह नाम सुधानिधि माषि रही॥
घन आनँद जान सुबैननि त्यों रचि कान बचे रुचि साखि रही।
निज जीवन पाय पलौ कबहूँ पिय कारन यों जिय राखि रही॥१२४॥

कवित्त

मुख दीनी पीठि दीठि कीनी सनमुख याने
तुम पैंड़े परे राखि रह्यो यह प्रान कौं।

सवैया

अँसुवानि तिहारे वियोगही सों बरषा रितु बैल सी वाल भई।
हिय पोपनि चोपनि कोपनि झालरि लाज के ऊपर छाय गई॥
घनआनँद जान सदा हित झूमनि घूमनि देखिए नित्त नई।
बलि नेकु मया करि हेरौ इहा अबला किधों फूलि रही तुरई॥१२८॥

घनआनँद मीत सुजान इहा सुनिए विनतों कर जोरि करें।
अरसाहु न नेक रिझाहु अहो धरि ध्यानहि दूरि सो पाय परें॥
मन भायो वियोग में जारिबो ज्यो तौ तिहारी सौं नीकें जरैं रु मरें।
पै तुम्हें सब कोऊ कहै हित हीन सु या दुख बीच अमीच मरें॥१२९॥

हम एक तिहारियै टेक गहै तुम छैल अनेकनि सों सरसौ।
हम नाम अधार जिवावत ज्यो तुम दै बिसवास बिसै बरसौ॥
घनआनँद मीत सुजान सुनौ तब गौं गहि क्यों अब यों अरसौ।
तकि नेकु दई त्यों दया ढिग ह्वै सु कहूँ किन दूरहूँ तें दरसौ॥१३०॥

पर-काजहि देह को धारि फिरौ परजन्य जथारथ ह्वै दरसौ।
निधि-नीर सुधा की समान करौ सबही बिधि सज्जनता सरसौ॥
घनआनँद जीवनदायक हौ कछू मेरियौ पीर हिएँ परसौ।
कबहूँ वा बिसासी सुजान के आंगन मो अँसुवानिहिं लै बरसौ॥१३१

मानस को बन है जग पै बिन मानस के बन सो दरसै सो।
जे बन मानस ते सरसे तिन सों मिलि मानस क्यों सरसै हो॥
छाय दई ढरि नेकु इतै सु कितै परसै जिहि ज्यो बरसै जो।
चातक प्रान जिवाय दै ज्यान इहा घनआनँद को बरसै जो॥१३२॥

हित घातिक प्रान सजीवन जान रचे विधि आनँद के घन हीं
दरसौ परसौ घरसौ मरसौ मन लैहू गए पै बसौ मनहीं ॥१३६॥
भावन आवन हेरि मरौं मनभावन आवन चोप विसेखी।
छाए कहूँ घनआनँद जान सम्हारि की ठौर लै भूल न लेखौ॥
बूँदें लगे सब अंग दगे उलटी गति आपने पापनि पेखी।
पौन सों जागत आगि सुनी ही पै पानी सों लागत आँखिनि देखी १३७
हमसों हित कै कित को हितहीं चित बीच बियोगहिं बोय चले।
सु अखैवट बीज लौं फैलि परयो बनमाली कहाँ धौं समोय चले॥
घनआनँद छाए बितान तन्यो हमें ताप के आतप खोय चले।
कबहूँ तिहि मूल तौ बैठिए आय सुजान ज्यों हाय कै रोय चले १३८
चितवै जिहि भाँति मकौ सहि क्यों रहि क्यों हूँ सकै नहिं तात हियो।
सु न जानति जीवति कौनि सी आस बिसास में प्रेम को नेम लियो।
घनआनँद कैसे सुजान हौ जू जेहिं सूखन सौं चिति छाहँ छियो।
करी बावरी रावरी बोलनि हीं कहि प्यारी बनाय कै प्यार कियो१३९

कवित्त

जाहि जीय चाहै सो तहाँ पै ताहि दाहै
वाहि ढूँढ़त ही मेरी गति मति गई खोय है।
करौं कित दौर और रहौं तौ लहौं न ठौर
घर को उजारि कै बसत बन जोय है॥
घनी आनि ऐसी घन आनँद अनैसी दसा
जीवो जान प्यारे बिन जागें गयो सोय है।

रोम रोम रही भोय रोइ परौ साँस भरौं
चौंकत चकत मुरझानि अधिकाति है ॥
जान प्यारी दूरिही तें चेटक चरितकोटि
मति उपचारनि की हेरत हिराति है ।
तेरी गति चौगुनी कै सौगुनी चुरैल हूँ सों
लगी अलगी सी कछु बरनी न जाति है ॥१४

सवैया

किहि ठान ठनी है सुजान मनों गति जानि सकै सु अजान करो
इहि सोच समाय उदेगन माय विछोह तरंगनि पूरि भरो
सु सुनौ मनमोहन ताकी दसा सुधि साँचनि आँचनि बीच ररो
तुम तौ निहकाम सकाम हमें घनआनँद काम सों काम परो ॥१४

कवित्त

गति सुनि हारी देखि थकनि में चली जाति
थिर चर दसा कैसी ढकी उघरति है ।
कल न परति कहूँ कल जो परति होइ
परनि परी हौं जानि परी न परति है ॥
हाय यह पीर प्यारे कौन सुनै काहो कहौं
सहौ घनआनँद क्यों अंतर अरति है
भूलनि तिहारि दोऊ है न हो हमारे तातें
बिसरनि रावरी हमैं लै बिसरति है ॥१४॥

सवैया

मो अबला तकि जान तुम्हैं बिन यों बल कै बलकै जु बलाहक।
त्यौं दुख देखि हँसै चपला अरु पौनहूँ दूनौं बिदेह तें दाहक॥
चंदमुखी सुनि मंद महा सम राहु भयो यह आनि अनाहक।
प्रानहरौ घर है घनआनँद लेहु न तौ अब लेहिंगे गाहक॥१४८॥

कवित्त

मूरति सिंगार की उजारी छबि आछी भाँति
दीठि लालसा के लोयननि लै लै आँजिहौं।
रति रसना सवाद पाँवड़े पुनीतकारी
पाय चूमि चूमि कै कपोलनि सों माँजिहौं॥
जान प्यारे प्रान अंग अंग रुचि रंगनि मैं
बोरि सब अंगनि अनंग दुख भाँजिहौं।
कब घनआनँद ढरौहीं बानि देखै सुधा
हेत मन घट दरकनि सु बिराजिहौं॥१४९॥

सवैया

मो बिन जो तुम्हैं और रुच्यो सो रुचै न तुम्हैं बिन मोहि जियो जू।
आँखिन में ढरिआई रहै सु दहै दुखिया गहि आस हियो जू॥
सूल भयो गुन जो हित हि अंग की दोष सो बारि बियोग दियो जू।
हाय सुजान सनेही कहाय क्यों मोह अनाथ कै द्रोह कियो जू॥१५०॥
हाय सनेही सनेह सो रूसे रुसाई सो है चिकने चित सो है।
आपुनपो यह आपहु तें करि हाते हुतो घनआनँद को है॥

कौन घरी बिछुरे हौ सुजान जू एक घरी मन तें न बिछोहौ।
मोह की बात तिहारी असूझ पै मो हिय को वो अमो हियौ माहौ।।१५१।।
आ हित मात को नाम जसोदा सुबंस को चंदकला कुलधारी।
सोभा समूह भई घनआनँद मूरति रंग अनंग जिवारी।।
जान महा सहजै रिझवार उदार बिलास में रासबिहारी।
मेरो मनोरथ हू बहिए अरु हैं मो मनोरथ पूरनकारी।।१५२।।
अंक भरौं चकि चौंकि परौं कबहूँक लरौं छिनहीं में मनाऊँ।
देखि रहौं अनदेखे दहौं सुख सोच महौं जु लहौं सुनि पाऊँ।।
जान तिहारी सौं मेरी दसा यह को समुझै अरु काहि सुनाऊँ।
यों घनआनँद रैन दिना न बितीवत जानिए कैसे बिताऊँ।।१५३।।
गई सुधि अंग भई मति पंगु नई कछु बात जनावति है न
दुराव किएँ कहा होत सखी रँग औरै भयो ढँग उत्तर कौ न।।
हिए धरको तन स्वेद जग्यो अरु ऐसी जँभानि की बानि हु तौ न।
बढ़ाइहै बेदनि साँच कहौ घनआनँद जान चढ़े चित जौ न।।१५४।।

कवित्त

कहीं जो सँदेसो ताको बड़ोई अँदेसो आहि
तन मन वारे की कहैब को सुनै सुकौन।
निधरक जान अलबेले निधरक ओर
दुखिया कहैब कहा तहा की उचित है न।।
पर दुखदल के दलन को प्रभंजन है
दरकौहैं देखि कै बिबस बकि परी मौन।

इत की असम दसा लै दिखाय सकत जू
लालन सुवास सो मिलायहू सकत पौन ।।१५५।।

सवैया

मुख नेह रुखाई दिखाई मरौं इत की तो चिन्हारि रही न उतै ।
रचि कौन से घाट लियो है हियो बिन हेरें न जीव बिचार गुनै ।।
घनआनँद ऐसी दसानि घिरो दुखिया जिय सोचनि सीस धुनै ।
अब कैसी भई बन जान दुई दई कूक करौं पै न कोऊ सुनै।।१५६।।

कवित्त

अंतर मैं रहति निरंतर जगी सुजान
तहाँ तुम कैसे सोइबे को घर कै रहे ।
गुपत लपट जाकी तन हीं प्रगट करी
जतननि बाढ़े गुर लोग भरि कै रहे ।।
सीरी परि जात रोम रोम घनआनँद हो
और याके कोटिक बिकार भरि कै रहे ।
बारिद सहाय सो दवागिनि दबति देखो
बिरह दवागिनि सों नैना झरि कै रहे ।।१५७।।

सवैया

आन छबीले कहा तुमहीं जो न दीसौ सो आँखिनि काढ़ि दिखाऊँ ।
कौन सुघाई भनी बतियानि बिना इन कानिनि लै कहा प्याऊँ ।।
हाय मरयो मन पीर हैं प्रीतम या दुखियाहि कहा परचाऊँ ।
चाहत जीव धरयो घनआनँद रावरी सौं कहूँ ठौर न पाऊँ।।१५८।।

कौन घरी बिछुरे हौ सुजान जू एक घरी मन तें न बिछो
मोह की बात बिहारी असूझ पै मो हिय को तो अमे। हियै मोहै।
जा हित मात को नाम जसोदा सुबंस को चंदकला कुलधा
सोभा समूह भई घनआनँद मूरति रंग अनंग जिवार
जान महा सहजै रिझवार उदार बिलास में रासबिहा
मेरो मनोरथ हू बहिए अरु हैं मो मनोरथ पूरनकारी ॥१५
अंक भरों चकि चौंकि परों कबहूँक लरों छिनहीं में मना
देखि रहौं अनदेखे दहौं सुख सोच सहौं जु लहौं सुनि पाऊँ
जान तिहारी सौं मेरी दसा यह को समुझै अरु कादि सुनाऊँ
यों घनआनँद रैन दिना न बितीतत जानिए कैसे बिताऊँ। १५
गई सुधि अंग भई मति पंगु नई कछु बात जनावति हौ न
दुराव किएँ कहा होत सखो रँग औरै भयो ढँग बेतर को न
हिए धरको तन स्वेद जग्यो अरु ऐसी जँभानि की बानि हुती न
बढ़ाइहै बैदनि साँप कहौं घनआनँद जान पढ़े चित जौन ॥१५४

कवित्त

कहाँ जो सँदेसो वाको यहाँ अँदेसो आहि
तन मन वारे की कहैब को सुनै सुकौन।
निधरक जान अनदेखें निधरक ओर
दुखिया कहैय कहा तहा की उचित हौ न॥
पर दुखदन के दलन को प्रभंजन हौ
दरकौहैं देखि कै बिषम बकि परी मौन।

गूढ़ गति धारिबे की भूलियै सुरति मोहि
रात द्यौस छाए घनआनँद घटा रहैं।
सुधि कबहूँ न आवै भूलेऊ तनक नाहिं
सुधि बिनहो मैं तेई सुधि में सदा रहैं ॥१६३॥

सवैया

जब तैं तुम आवन आस दई तब तें तरफों कब आयहौ जू।
मन आतुरता मनही मैं लखौ मनभावन जान सुभाय हौ जू ॥
बिधि के दिन लौं छिन बाढ़ि परे यह जानि वियोग बितायहौ जू।
मरसौ घनआनँद ह्वै रस कों जु रसा रस सो बरसायहौ जू ॥१६४॥
अभिलाखनि लाखनि भाँति भरीं बरुनीन रुमाँच ह्वै काँपति हैं।
घनआनँद जान सुधाधर मूरति चाहनि अंक मैं चाँपति हैं ॥
टक लाय रहीं पल पाँवड़े कै सु चकोर की चोपहि झाँपति हैं।
जब तें तुम आवन औधि बदी तब तें अँखियाँ मग माँपति हैं॥ १६५॥
मग हेरत दीठि हिराय गई जब तें तुम आवन औधि बदी।
बरसौ कितहूँ घनआनँद प्यारे पै बाढ़ति है इत सोच नदी ॥
हियरा अति औंटि उदेग की आँचनि च्वावत आसुन मैन मदी।
कब आयहौ औसर जान सुजान बहीर* लौं बैस तौ जाति लदी १६६।
तुमही गति हौ तुमही मति हौ तुमही पति हौ अति दीनन की।
नित प्रीति करौ गुन-हीननि सों यह रीति सुजान प्रवीनन की ॥
बरसौ घनआनँद जीवन को सरसौ सुधि चातक छीनन की।
मृदु तौ चित के पन पै इत के निधि हौ हित के रुचि मीनन की॥१६७॥

---

* बहीर = फौजी असबाब।

निस द्योस उदास उसास थकौं न सकौं तजि आस बिसास जकी ।
घनआनँद मीत सुजान बिना अँखियान की सूझत एक टकी ॥
इत की गति कौन कहै को सुनै मनहीं मन मैं यह पीर पकी ।
मरिए केहि भाँति कहा करिए अब गैल मैं देसनहू की थकी॥१५६॥
प्यारे सुजान के पानि की मंडन खंडन दैद असंक कला को ।
ज्यों तरस्यो जयहीं दरस्यो बरस्यो घनआनँद हेत भला को ॥
सूछम सो पै मरो अतुलै सुख रंग थिमी जुग नैन पला को ।
प्रीतम लै हिय राखन हाथ बिछोह मैं ज्यावत मोह छला को ।१६०॥
घूमत सीस लगै कथ पायनि घायनि चित्त मैं चाह घनेरी ।
आँखिन प्रान रहे करि थान सुजान सुमूरति माँगत तेरी ॥
रोमहि रोम परी घनआनँद काम की रोर न जाति निबेरी ।
भूलनि जीतति आपुनपौ बलि भूलै नहीं सुधि लेहु सबेरी ॥१६१॥
ललचौंहीं लगौंहीं भई तुम सोंहीं इतै अँखियाँ सुख साध भरी ।
उत आप निकाई निधान सुजान ये बावरी ह्वै अरराय परीं ॥
घनआनँद जीवन प्रान सुनौ बिछुरैं मिलैं गाढ़ जँजीर जरीं ।
इनकी गति देखन जोग भई जु न देखन मैं तुम्हैं देखि मरीं॥१६२॥

कवित्त

सुरति करौं तौ बिसरे जो होहि आन प्यारे
वे तौ चित चढ़े रंग मूरति महा रहैं ।
सुधि करै वेई सुधिहू की ऐसी भूलि जाइ
वे सुधि छिपे से सुधि माँझ या प्रकार हैं ॥

चिरजीजै दीजै सुख कीजै मन भायो मेरी
मेरी अभिलाखन की निधि को धरत है ॥
चाह बेली सफल करन घनआनँद यों
रस दै दै उर आलबालहि भरत है।
प्यारे सैंधि कीहीं ढरकौहीं मृदुबानि बस
विवस ह्वै आपही तैं मोपर ढरत है ॥१७१॥

सवैया

सुख चाहन कों चित चाहत है चख चाहनि ठौरहि पावति ना।
अभिलाखनि लाखनि भाँति भरे हियरा मधि सास सुहावति ना॥
घनआनँद जान तुम्हैं बिन यों गति पंगु भई मति धावति ना।
सुधि दैन कही सुधि लैन चही सुधि पाए बिना सुधि आवति ना१७२

कवित्त

रसिक रसीले हौ लचीले गुन गरबीले
रंगनि ढरीले हौ छकीले मद मोह तें।
जीवन सरस घनआनँद दरस आछौ
सरस परस सुख सींच्यो हँसि जोह तें॥
अचिरज निधि हौं तिहारी सब विधि प्यारे
कृपा होति फलति ललित लता छोह तें।
मिलन तै ज्यौंही बिछुरन करि डार्यो वारी
त्योंही किन कीजै हा हा मिलन बिछोह तें॥१७३॥

अति दीनन की गति हीनन की प्रति लीननि की रति कं मन हौ।
सबही विधि जान करौ सुख दान जिवावत प्रान कृपावन हौ॥
घनआनँद चातक पुंजनि पोखन तोपन रंक महा धन हौ।
जन सोच विमोचन सुंदर लोचन पूरन काम भरे पन हौ॥१६८॥

अनंगशेखर

सदा कृपानिधान हौ कहा कहौं सुजान हौ
अमानि-दान मान हौ समान काहि दीजिए।
रसाल सिंधु प्रीति के भरे खरे प्रतीति के
निकेत नीति रीति के सुदृष्टि देखि जीजिए॥
ठगी लगी निहारियै सु आप त्यौं निहारियै
समीप ह्वै विहारियै उमंग रंग भीजिए।
पयोद मोद छाइए विनोद को बढ़ाइए
विलंब छाड़ि आइए किधौं बुलाय लीजिए॥१६६॥

सवैया

चेटक रूप रसीले सुजान दई बहुतैं दिन नैक दिखाई।
कौंध मैं चौंध भरे चख हाय कहा कहौं हेरनि ऐसें हिराई॥
ताती बिलाय गई रसना पै हियो उमग्यो कहि एकौ न आई।
साँच कि संभ्रम हौ घनआनँद सोचनि ही मति जाति समाई॥१००॥

कवित्त

मौंरहि जिवाय नीके आनन सुजान प्यारे
याही गुन नामहिं अभाग्य करत हौ।

चिरजीजै दीजै सुख कीजै मन भायो मेरी
मेरी अभिलाखन की निधि को धरत है।।
चाह बेली सफल करन घनआनँद यो
रस दै दै उर आलवालहि भरत है।
प्यारे सौंध कौहीं ढरकौहीं मृदुबानि बस
बिवस ह्वै आपही तैं मोपर ढरत है।।१७१।।

सवैया

सुख चाहन कों चित चाहत है चख चाहनि ठौरहि पावति ना।
अभिलाखनि लाखनि भाँति भरे हियरा मधि सास सुहावति ना।।
घनआनँद जान तुम्हें बिन यों गति पंगु भई मति धावति ना।
सुधि देन कही सुधि लैन यही सुधि पाए बिना सुधि आवति ना१७२

कवित्त

रसिक रसीले हौ लचीले गुन गरबीले
रंगनि ढरीले हौ छकीले मद मोह तें।
जीवन बरस घनआनँद दरस आछौ
सरस परस सुख सींच्यो हँसि जोह तें।।
अधिरज निधि हौ बिहारी सब बिधि प्यारे
कृपा होति फलति ललित लता छोह तें।
मिलन तें ज्योंही बिछुरन करि डारो बारी
त्यों ही किन कीजै हा हा मिलन बिछोह तें।।१७३।।

सवैया

कहा कहिए सजनी रजनी गति चंद कढ़ै कि जिये गहि काढ़ै।
अमीनिधि पै विष सार भयै हिम जोति जगाय कै अंगनि डाढ़ै॥
सु या पति संग न जानति है घनआनँद जान बिछोह की गाढ़ै।
बियोग मैं बैरिनि बाढ़ति जैसी कछू न घटै जु सँजोगहू बाढ़ै।१७४।
जान सुप्यारे रहौ रहि आप हौ होत रही है सदा चित चोंती।
हैं हमहीं धुर की दुखदाई बिरंच बिचारि कै जात रची ती॥
प्रान पपीहन के घन हौ मन दै घनआनँद कीजै अनीती।
जानौ कहा अनुमानौ हियें हित की गति कौ सुख सो नित बीती१७५
जित धाइव हौ तित जाय मिलैं चित रावरौ कोविद केलि कला।
जिनको तुम भोरि बिसास करौ सु न सौंम भरै बपुरी अबला॥
घनआनँद जान रहौ उनए से नए बरसौ नित नेह झला*।
नँदनायक लायक सायक हौ गति पाय परै न बिहारी लला।१७६।

कवित्त

मेरो मन चाहै घनआनँद सुजान कों पै
टकी लाग आग की लपेटै जीवही सहै।
वे तौ गौ गरेले हौ गहाऊँ सो गहैं न गैल
रहैं छैल भए नए लेस वाहू को न है॥
पावनि वकत मूल भूले फिरैं फूले अथा
आली बनमाली जू के फल हो कहा कहै।

* झला = झड़ी।

बावरी ह्वै बावरी तू बावरी परति काहे
तैं ह्यां घर बसे ह्यां उजारि बसि को रहै ॥१७७॥
उघरि दुरे हौ नीके मिलत दुरे हौ गाढ़े
रंगनि घुरे हौ घनआनँद सुजान जू।
उर बैठि चाहत हौ चाहनि मैं चाहत हौ
घात ह्यौं निबाहत हौ प्राननि के प्रान जू ॥
हँसि हँसि रुवावत हौ छांहौ नहीं छ्वावत हौ
जागि जागि ख्वावत हौ आए हू तें आन जू।
सूझत हौ बूझत हौ चाहत हौ भापत हौ
रहत हौ राखत हौ मौन हौ बखान जू ॥१७८॥

सवैया

नीके नए अति जी के लगीहैं सुधारे हैं तून प्रसून के सायक।
चौगुनी चोपनि तैसोई चाप चढ़ौरि दै हाथ सज्यो भट नायक ॥
पौन तुरंग चढ्यो बनि यों बनितानि अहेरै कढ्यो दुख दायक।
है घनआनँद जान कहा रितुराज भयो रतिराज सहायक। १७९॥
नित लाज भरे हित दार ढरे निखरे सुखरे सुखदायक हौ।
घनआनँद भूमि कटाच्छिन सों रसपान त्रिपादि सहायक हौ॥
जिय बेधन की अनियारी महा पै सुधादि सुधारन सायक हौ।
पिरि घूंघट पैठत जान हिए निपटै निबटै नटनायक हौ ॥१८०॥
सब ठौर मिले पर दूरि रहौ भरि पूरि रहौ जिहि रंग भिजौ।
इहि लायक हौ यदुनायक हौ सुखदायक हौ पुनि पाय रिझौं ॥

घनआनँद मीत सुजान सुनौं कहूँ ऊपिल से कहू हेत हिलौ।
हम और कछू नहिं चाहति हैं छनको किन मानसरूप मिलौ॥१८१॥
हिय की गति जानन जोग सुजान हौ कौन सी बात जु आहि दुरी।
पटक्योई परै हिय अंकुर आसलौ ऐसो कछू रस रीति पुरी॥
बिछुरे कित सौति मिलैंहूँ न होति छिदौ छवियाँ भकुआनि छुरी।
तुमही बिहि माधि सुनौ घनआनँद प्यार निगोड़े की पीर बुरी।१८२।
नाहिं पुकार करै सुनि आहि न को कित है कहि दोस लगैयै।
संग भए बिछुरे मरिए यहि भाँतिनि क्यों जियराहि जरैयै॥
ओटनि चोटनि चूर भयो चित मो बिन हो किन बाहिर ऐयै।
है घनआनँद मीत सुजान कहा अब हेत सुखेत सुखैयै।।१८३॥
आवतही मन जान सजीवन ऐसो गयो जु करी नहिं लोटनि।
थोस कछू न सुहाय सखी अरु रैन बिहाय न हाय करोटनि॥
संग भए पियरे पट लों सुरझै बिन ढंग अनंग मरोटनि।
हौ सुपते घनआनँद पै हमैं मारत है बिरहागिनि औटनि॥१८४॥
कैसे करौ गुन रूप बखान सुजान छबीले भरे हिय देव हौ।
औसर आस लगे रहैं प्रान कहा अब जो सुधि भूलि न लेव हौ॥
चेटक हौ सब भाँतिन जू घनआनँद पीवत चातक चेत हौ।
रावरी रीझि न बूझि परै तन कौ मिलि क्यों बहुतै दुख देत हौ।१८५।
जान हौ रजू जनाऊँ कहा न गए कितहूँ जू कहौ इत आवहौ।
दोसों दुरे तर दाहन क्यों घर तें कढ़ि यों उर मैं कब छावहौ॥
मोसों भिखारि कै मोहि मया करि मो मधि रावरे सूधे सुभावहौ।
ऐसी बियोग दवागिनि कों घनआनँद आय मैं आग सिरावहौ॥१८६॥

आननि प्रान है। प्यारे सुजान है। बोलो इतेहू पर कहीं क्यों ।
चेटक चाव दुरौ उघरौ पुनि हाथ लगे रहौ न्यारे गहौ क्यों ।।
मोहन रूप सरूप पयोद सों सींचहु जो दुख दाह दहौ क्यों ।
नाव धरे जग में घनआनँद नाव सम्हारो तो नाव सहौ क्यौं ।।१८७।

कवित्त

वेई कुंज पुंज जिन तरें तन आढ़तु है।
तिन छाहैं आएँ अवगहन सो गहिगो ।
सरित सुजान चैन बीचिन सों सींचा जिन
वही जमुना पैं हेली वह पानी वहिगो ।।
वहै सुख श्रम स्वेद समै को सहाय पौन
नाहिं छियें देह देया महा दुख दहिगो ।
वेई घनआनँद जू जीवन को देते तिनही
को नाम मारिनि कै मारिबे को रहिगो ।।१८८।।
इते अनदेखे देरिवेई जोग दसा भई
तेतो अनाकानी हो सों साँध्यो ढीट तार है ।
जान घनआनँद बिनाई सु चनक हेरैं
धीरज हिराय सोच सूखत बिचार है ।।
छीन अति दीनन को मोहन अमोही रच्यो
महा निरदई हमैं मिल्यो करतार है ।
तेरैं पहरावनि हई है कान पाँच हाय
बिरही बिचारिनि की मौन मैं पुकार है ।।१८९।।

सवैया

मोहि निहारिहै तू जु घरीक मैं मेरो निहोरिबोई किन मानति
जासो नहीं टहरै ठिक मान को क्यों हठ कै सब रूठनो ठानति।
कैसी अजान भई है सुजान हे मित्र के प्रम चरित्र न जानति
सो मुरली घनआनँद की नित तान भरी कित भौंहनि तानति॥१८०
कही कछु और करी कछु और गही कछु और लखावत औरै।
मिली सब रंगनहूँ नहि संग तिहारी तरंग लखें मति बौरै॥
गही अतियानि मड़ी पतियानि बढ़ी छतियानि निदान की ठौरै।
महाछल छाय मुलैं हौ बनाय किते घनआनँद चातक दौरै॥१८१॥
व्रजनाथ कहाय अनाथ करी कित है हित रीति में भांति नई।
न परेखो कछू पै रह्यो न परै ठकुराइनि प्रीति अनीतिमई॥
घनआनँद जानहि को सिखवै सुघई रस सींचि जु बेली बई।
सुधि भूल सबै हिय मूल सलै हमसों हरि ऐसे भए ए दई॥१८२॥

कवित्त

बासर बसंत के अनंत ह्वै कै अंत लेत
ऐसे दिन पारै जु निहारैं जिय राति है।
लतनि की फूलनि तमालनि की भूलनि कौ
हेरि हेरि नई नई भाँति पियराति है॥
प्यारे घनआनँद सुजान सुनौ बाल दसा
चंदन पवन तें पजरि सियराति है।
औसर सम्हारो न तौ अनआइबे के संग
दूरि देस जाइबो कौं प्यारी नियराति है॥१८३॥

दोहा

गोरी तेरे सरस दृग किधों श्याम घन श्राप।
दावानल सों पान यें करत बिरह संताप ॥ १८४ ॥

सवैया

घनआनँद रूप सुजान सनेही पै श्रापुही आपुन त्यों थरसौ।
इत मो मधि मेरिए रीति रची उत वाहि निवाहिनि सों सरसौ॥
रसनायक नाइक लाइक हौ कितहूँ झर लाय कहूँ तरसौ।
अब हौं जु कहौं सु तौ दूसरे को तुमही मन रंग मिलै दरसौ॥१८५॥
इक तौ जग माँझ सनेही कहाँ पै कहूँ जो मिलाप की बास खिलै।
तिहि देखि सकै न बड़ो बिधि क्रूर बियोग समाजहि साज पिलै॥
घनआनँद प्यारे सुजान सुनौ न मिलौ तो कहौ मन काहि मिलै।
श्रमिलें रहिबो लौं मिले तौ कहा यह पीर मिलाप में धीर गिलै॥१८६॥
मनमोहन तौ घनमोद करौ यह मोहित होत फिरै सु कहा।
श्ररु जौ श्रपटार टरै न टरै गुन त्यों तकि लागत दोष महा॥
घनआनँद मीत सुजान सुनौ चित दै इतनी हित बात इहा।
जिय जाचक ह्वै जस देत बड़ो जिन देहु कछू किन लेहु लहा॥१८७॥
अंतर हौ किधों अंत रहौ दृग फारि फिरौं कि अभागनि भीरौं।
आगि जरौं अकि पानि परौं अब कैसी करौं हिय का बिधि धीरौं॥
जो घनआनँद ऐसी रुची तौ कहा बस है अहो प्राननि पीरौं।
पाऊँ कहाँ हरि हाय तुम्हैं धरनी में धँसौं कै अकासहि चीरौं॥१८८॥
मनमोहन नाँव रहै सो कहौ पन को पटिहै यह जो घटि(?)है।
बहु औरनि लै भटकावत यों श्रटकावत क्यों न कहा पटिहै॥

घनआनँद मीत सुजान सुनौ अपनी अपनी दिस कों इटि है
तुमहीं तन पारि लगाइदै जू टग मोरि कै जो हम त्यों डटि है ॥१९
हमसों पिय साँचियै बात कहौ मन ज्यों मन त्यों अरु नाहि कहूँ
कपटी निपटै हिय दाहत हौ निरदै जु दई डरु नाहि कहूँ।
सबही रँग मैं घनआनँद पै बस बात परे यह नाहि कहूँ
उघरौ बरसौ सरसौ दरसौ सब ठौर बसौ घरु नाहि कहूँ ॥२००।

कवित्त

कौन कौन अंगनि के रंगनि मैं राँचै मन
मोहन हो सोई सुख दुख पुनि ल्यावई।
भौन माहिं बात है समुझि कहि जानैं जान
अमी काहू भाँति को अचंभै भरि प्यावई ॥
सोवनि जगनि याकी मूरछा सचेत सदा
रीझि घनआनँद निबेरै याहि न्यावई।
कहै को ऽय मानै पहिचानै कान नैन आके
बात की भिदनि मोहि मारि मारि ज्यावई॥२०१॥

सवैया

आँखिन मूँदिबो बात दिखावतु सोवनि जागनि याहि पेखिलै।
बात सरूप अनूप अरूप है भूल्यो कहा तू अलेखहि लेखिलै ॥
बात की बात सुबात बिचारियै है समता सब ठौर बिसेखि लै।
नैननि काननि बाँधि बसै घनआनँद मौन बखान सु देखि लै ।२०२।

कवित्त

सुधि करैं भूल की सुरति जब आय जाय
तब सब सुधि भूलि फूकौ गहि मौन कों।
जातें सुधि भूलै सो कृपा तें पाइयत प्यारे
फूलि फूलि भूलौं या भरोसें सुधि हौन कों॥
मेरो सुधि भूलहि बिचारिए सुरतिनाथ
चातक उमाहै घनआनँद अचौन कों।
ऐसी भूलहू सों सुधि रावरी न भूलै क्यों हूँ
ताहि जो बिसारौ तौ सम्हारौं फिरि कौन कों॥२०३॥

सवैया

जगि सोवनि मैं जगियै रहै चाह बहै बरराय उठै रतियाँ।
भरि अंक निसंक ह्वै भेंटन कों अभिलाख अनेक भरो छतियाँ॥
मन तें मुख लैं नित फेर बड़ो कित ओर सकौं हित की बतियाँ।
घनआनँद जीवन प्रान लखौं सु लिखौ किहि भाँति परै पतियाँ॥२०४॥
प्रेम की पीर अधीर करै हिय रोवनि कों दृग आँसुनि ढारत।
चाहनि चोप उमाह उमंग पुकारहिं यों नित प्रान पुकारत॥
हौ घनआनँद छाय रहे कित यों असम्हारहि नाहिं सम्हारत।
एजू सुजान जनाऊँ कहा बिन मारति हौ अति या बिधि आरत।२०५।
हम आपनो सो बहुतेरो करैं कि बचैं अवलोकनै एकौ घरी।
न रहै बसु नैंसिक तान भिदै छिदै कान ह्वै प्रान सुतीखी खरी॥
घनआनँद बौरति दौरति रौरति छूट यों पैयत लाजन री।
कित जाहि कहा करैं कैसैं भरैं यह कान्ह की बाँसुरी बैर परी॥२०६॥

रस रंग भरी मृदु बोलनि को कब काननि पान करायहौ जू।
गति हंस प्रसंसित सो कबधौं सुख लै अँखियानि मैं आयहौ जू॥
अभिलाषनि पूरति ह्वै उफन्यो मन तें मनमोहन पायहौ जू।
चित चातक के घनआनँद हौ रटना पर रीझनि छायहौ जू॥२०७॥
पलको कलपै कलपी पलकै सम होत सँजोग वियोग दुहूँ।
बिपरीति भरी हित रीति खरी समझौ न परै समझै कछु हूँ॥
घनआनँद जानत जीवन सों कहिए ते सबै लहिए न सुहूँ।
तिन हेरे अँधेरोई दोसै सबै बिन सूझ तें पूज्यो अबूझ कुहूँ॥२०८॥
तीछन ईछन बान बखान सो पैनी दसाहि लै सान चढ़ावत।
प्रानन प्यारे भरे अति पानिप माइल घाइल चोप चढ़ावत॥
यों घनआनँद छावत भावत जान सजीवन और तें आवत।
लोग है लागि कवित्त बनावत मोहि तो मेरे कवित्त बनावत॥२०९॥
चलि आई सदा रस रीति यहै किधौं मो निरमोही को मोह नयो।
घनआनँद प्रान हरै हँसि जान न जानि परै उघरो अनयो॥
चित चाह निबाह की बात रहै हित कै नित ही दुख दाह दयो।
उर आस विसास न त्रास तजै बसि एक ही बास बिदेस भयो॥२१०॥

कवित्त

मोर चंद्रिका सों सब देखन कों धरे रहैं
सूछम अगाध रूप साध उर आनहीं।
जाहि सूझति न हू सो देख भूली ऐसी दसा
ताहि ते बिचारे जड़ कैसे पहिचानहीं॥

जान प्रानप्यारे के बिलोकें अविलोकिबे कौ
हरष विखाद स्वाद वाद अनुमानहीं ।
चाह मीठी पीर जिन्हें उठति अनंदघन
तेई आखैं साखैं और पाखैं कहा आनहीं ॥२११॥

भूलनि करी है सुधि जान ह्वै अजान भए
खुलि मिले कपट सों निपट रसाल हौ ।
त्यागहि आदर दीन्यो मन सनमान कीन्यौ
अनुचित चित धारि उचित लहा लहौ ॥
जहाँ जब जैसें तहाँ तैसें नीके रहौ अजू
सब विधि प्रानप्यारे हित आलबाल हौ ।
मन तुम मोह्यो ताहि नैंकु राखे रहिए जू
एहो घनआनँद जू गरें गुन माल हौ ॥२१२॥

सवैया

जो उहि ओर घटा घनघोर सों चातक मोर उछाहनि फूलते ।
त्यों घनआनँद औसर साजि सँजोगिन झुंड हिंडोरनि झूलते ॥
ग्रीषम तें हरई जु लता द्रुम अंकनि लागतीं ह्वै रस मूल ते ।
तौ सजनी जियज्यावन जान सु क्यों इतकी हित की सुधि भूलते।२१३।

कवित्त

उठे बड़े भोर चैन चोर लाड़ साड़ दोऊ
मति गति ठगे न सकत चलि गेह कौं ।
छाई पियराई और विथा हियराई जानै
जके थके बैन नैन निदरत मेह कौं ॥

दुसह दसाहि देखें सबै बिसमय होत
खग मृग द्रुम बेली बिसरत देह कों।
जान घनआनँद अनोखो अनियारो नेह
दुहूँ दिसि विषम रच्यो बिरंच चेह कों ॥२१४॥

सवैया

आन लई न कछू सुधि हाय गए करि बैरी बियोगहि सौंपनि।
जाय भुलाय रहे तितहीं जित धाइ भई हैं नई नित चौंपनि॥
नाहर आइ बसंत भयो नख कंसु रचौहैं कियो हिय कौंपनि।
क्यों घनआनँद यों बचिये जिय जातु बिथ्योअनियारियैकौंपनि॥२१५॥

कवित्त

आरसी उसास ज्यों तुमार ताम रस त्योंहीं
आतप के ताप रंग ढंग नवनीत कों।
पावक तें पारो काँजी छिए हूँ बिचारो छीर
तेरुनी (?) रैं सुचि जैसे लेखौ कफ गीत कौं॥
ऐसे घनआनँद बिचार वारपार नाहिं
जानै एक जीव जान प्रीतम पुनीत कों।
सूछम महा है ताकी तौल को कहा है
राखिजानिबो लहा है यों दुहेलो मन मीत कों।२१६।

सवैया

चाव के देस तें दूरि परे नियरे सियरे हियरे दुख दाहै।
चित्र कों आँखनि लीनौ बिचित्र महा रस रूप सवाद सराहै॥

नेह कथै सब नीर मथै हट कै कऊ प्रेम को नेम निबाहै।
क्यों घनआनँद भीजे सुजाननि यों अमिले मिलिबो फिर चाहै २१७।
प्यारे सुजान को प्रान पियारे बस्यो जब कान सनेसो सुहायो।
कोटि सुधाहू के सार को सोधिकैं पान किए तें महासुख पायो॥
जीव जिवावन साप सिरावन हैं रस में घनआनँद छायो।
ये गुनि क्यों न रचै सजनी उनि रंग रचे अधरानि रचायो। २१८॥
आँखिन आनि रहे लगि आस कि बेल बिलास निहारियैं हूँगे।
कानन बीच बसैं भरि प्यास अमी निधि बैननि पारियै हूँगे॥
यों घनआनँद ठौरहीं ठौर सम्हारत हैं सु सम्हारियै हूँगे।
प्रान परे उरझैं सुरझैं कि कहूँ कबहूँ हम वारियै हूँगे॥ २१९॥
रूप सुधारस प्यास भरी नितहीं अँसुवा ढरिबोई करैंगी।
पीवन साध असाध भई इहि जीवन को मरिबोई करैंगी॥
हाय महादुख है सुख दैन बिचारो हिए भरिबोई करैंगी।
क्यों घनआनँद मीत सुजान कहा अँखियाँ बरिबोई करैंगी। २२०॥
तुम्हें प्रान लगे तुम प्रानन हूँ मनमोहन सोहन मानिएजू।
निठुराई सों कौलों निबाहिएगो कबहूँ तो दया उर आनिएजू॥
दरसे तें कहौ हो कहा घटिहै घनआनँद चातक दानियै जू।
बरसौ सरसो अरसो न दई जग-जीवन हौ जग जानियै जू। २२१॥
रस आरस भोय उठी कछु सोय लगी लसैं पीक पगी पलकैं।
घनआनँद ओप बढ़ो मुख औरै सुफैलि भईं सुथरी अलकैं॥
अँगरात जँभात लसैं सब अंग अनंगहि अंग दिपैं झलकैं।
अधरानि मैं आधिय बात धरैं लड़कानि की आनि परैं छलकैं॥२२२॥

बंक बिसाल रँगीले रसाल छबीले कटाच्छ कलानि मैं पंडित ।
साँवल सेत निकाई निकेत हियैं हरि लेत हैं आरस मंडित ॥
बेधि के प्रान करै फिरि दान सुजान खरे भरे नेह अखंडित ।
आनँद आसव घूमरे नैन मनोज के चोजनि चोज प्रचंडित ॥२२३॥
देखि धौं आरसी लै बलि नैकु लसी है गुराई मैं कैसी ललाई ।
मानो उदोत दिवाकर की दुति पूरन चंदहिं भेंटन आई ॥
फूलत कंज कुमोद लखें घनआनँद रूप अनूप निकाई ।
तो मुख लाल गुलालहिं लायकै सौतिन के हिय होरी लगाई ।२२४।
रूप धरे धुनि लौं घनआनँद सूझति बूझ की डीठि सुतानौ ।
लोयन लेत लगायकै संग अनंग अचंभे की मूरति मानौ ॥
है किधौं नाहिं लगी अलगी सो लखी न परै कवि केहूँ प्रमानौ ।
सो कटि भेदहि किंकिनि जानति तेरी सौं एरी सुजान हौं जानौ ।२२५।
रूप के भारन होति है सौंहीं लजौहियैं डीठि सुजान यों झूली ।
लागिए जाति न लागो कहूँ निसि पागी तहाँ पलकौ गति भूली ॥
पैठियैं जो हिय पैठति आजु कहा उपमा कहिए सग तूली ।
आए हौ भोर भए घनआनँद आरिन माँझ तो साँझ सी फूली २२६

कवित्त

रति रँग राते प्रीति पागे रैन जागे नैन
आवत लगैं घूमि झूमि छवि सौं छकें ।
सहज बिलास परे केलि की कलोलनि मैं
कबहूँ उमगि रहैं कबहूँ अकें थकें ॥

नीकी पलकनि पीक लीक झलकनि सोहै
रस थलकनि उनमद न कहूँ सके।
सुखद सुजान घनआनँद पोषत प्रान
अधरनि खान उघरेंहूँ लाज सों ढके ॥२२७॥

केलि की कला-निधान सुन्दरि सुजान महा
आनन समान छवि छाँह पैसो छिपै सौनि(?)।
माधुरी मुदित मुख मुद्रित सुसील भाल
चंचल विसाल नैन जाल भोजिये वितौनि ॥
पिय अंग संग घनआनँद उमंग हिय
सुरति तरंग रस विवस उर मिलौनि।
झूलनि अलक आधी खुलनि पलक श्रम
स्वेदहि झलक भरि ललक सिथिल हौनि ॥२२८॥

सवैया

रति साँचे ढरी अछवाई * भरी पिंडुरीन गुराई यैं पेखि पगै।
छवि घूमि घुरै न मुरै मुरवानि सों लोभी खरो रस भूमि खगै॥
घनआनँद एँडिनि आनि मिड़ै तरवानि तरें तें भरें न डगै।
मन मेरो महाउर चाइनि च्वै तुव पाइन लागि न हाथ लगै॥२२९॥
रूप चमूप सज्यो दल देखि भज्यो तजि देसहि धीर मवासी।
नैन मिलें उर के पुर पैठतै लाज लुटी न छुटी तिनका सी॥
प्रेम दुहाई फिरी घनआनँद बाधि लिए कुल नेम गुडासी।
रीझि सुजान सची पटरानी बची बुधि बापुरी ह्वै करि दासी।२३०।

* अछवाई = सुंदरता।

कवित्त

भाई है दिवारी चीते काज निजि वारी प्यारो
खेलें मिलि जूवा पैज पूरे दाव पावहीं।
हारहि उतारि जीतें मीत धन पल छिन
चोप चढ़ें चैन चैन चहल मचावहीं॥
रंग सरसावें वरसावें घनआनंद
उमंग ओपे अंगनि अनंग दरसावहीं।
हियरा जगाय जागें पिय पाय तिय रागें
हियरा लगाय हम जोगहि जगावहीं॥२३१॥

बैस की निकाई सोई रितु सुखदाई तामें
तरुनाई उलहत मदन मैमंत है।
अंग अंग रंग भरे दल फल फूल राजें
सौरभ सरस मधुराई को न अंत है॥
मोहन मधुप क्यों न लट्टू ह्वै सुभाय भट्ट
प्रीति को तिलक भाल धरे भागवंत है।
सोभित सुजान घनआनंद सुहाग सीच्यो
तेरे तन बन सदा बसत बसंत है॥२३२॥

पल दल संपुट मैं मुँदे मन मोद मानौ
आरस बिभावरी ह्वै होत भौरहाई है।
द्वै सरोज बाच एक बसत रसत कैसे
लसत सु ऐसे अचिरज अधिकाई है॥

बाहिर तें रूप मकरंद पान करै पुन्य
बड़ो भूतागति हेरे मो मति हिराई है।
नयोई रसिक घनश्रानँद सुजान यह
किधों प्यारी तेरे नैन सैन की निकाई है ॥२३३॥
घर गति व्यारिबे को सुंदर सुजान जू को
लाख लाख विधि सों मिलन अभिलाषियै।
बातैं रिस रस भीनी कसि गसि गाँस झीनी
बीनि बीनि श्राछी भाँति पाँति रचि राखियै॥
भाग जागै जो कहूँ विलोकैं घनश्रानँद तौ
ता छिन के छाकनि के लोचनहा साखियै।
भूली सुधि सातौ दसा विवस गिरत गातौ
रीझि बावरे ह्वै तब औरै कछु भाखियै ॥२३४॥
रूप गुन मद उनमद नेह तेह भरे
छल बल श्रातुरी चटक चातुरी पढ़े।
घूमत घुरत अरबीले न मुरत क्योंहूँ
प्रानन सों खेलैं अलबेले लाड़ के बढ़े॥
मीन कंज खंजन कुरंग मान भंग करैं
सींचे घनश्रानँद लुले सकोच सों मढ़े।
पैने नैन तेरे से न हेरे मैं अनेरे कहूँ
पानी बड़े कानी लिए छाती पै रहैं चढ़े॥२३५॥
ललित उमंग बेली आलवाल अंतर तें
आनँद के घन सींची रोम रोम मैं चढ़ी।

आगम उमाह चाह छायो सु उछाह रंग
अंग अंग फूलनि दुकूलनि परै कढ़ो ॥
बोलत बधाई दौरि दौरि कै छबीले दृग
दसा सुभ सगुनौती नीकें इन पै पढ़ो।
कंचुकी तरकि मिलै मरकि उरज भुज
फरकि सुजान चौप चुहल महा बढ़ो ॥२३६॥

सवैया

तेरी निकाई निहारि छके छबिहू को अनूपम रूप ठक्यो है।
ईठहू डीठि पै नीठि कटाछनि भाय मनोज को चोज कढ़्यो है॥
आनँद के घन राग सों पागि सुजान सुहागहि भाग बढ़्यो है।
लाड़ ते लाड़िली होति है औरपै तो तन लाड़हि लाड़ चढ़्यो है।२३७

कवित्त

पौढ़े घनआनँद सुजान प्यारी परजंक
धरे धन अंक तोऊ मन रंक गति है।
भूषन उतारि अंग अंगहिं सम्हारि नाना
रुचि के विचार सों समोय सीझी मति है॥
ठौर ठौर लै लै राखै और और अभिलाषै
बनत न भाषैं तेई जानैं दसा अति है।
मोद मद छाके घूमैं रीझि भीजि रस झूमैं
गहैं चाहि रहैं चूमैं अहा कहा गति है ॥२३८॥

सवैया

अंजन लोरहि वाक्यो करै नित पान लसै मुख त्यौं गॅग चाइनि ।
मैारी सिंगार सदा घनआनँद चाहैं उमाह सों आपने दाइनि ॥
तू अलबेली सरूप की रासि सुजान विराजत सादे सुभाइनि ।
ऐपर(?)नाचकै साँचछक्यो जुलटू भयोलाग्योफिरैंतुवपाइनि २३९
मिहँदी रँग पाइनि रंग लहै सुठि सोंधो सु अंगनि संग बसै ।
तरुनाई पै कोक पढ़ै सुघराई सिखावति है रसिकाई रसै ॥
घनआनँद रूप अनूप भरो हित फन्दनि मैं गुन ग्राम बसै ।
सब भाँति सुजान न आनसमान कहा कहौं आपते आप लसै॥२४०॥

कवित्त

रूप की उझलि आछे आनन पै नई नई
तैसी तरुनई तेह ओपी अरुनई है ।
उलहि अनंग रंग की तरंग अंग अंग
भूषन बसन भरि आभा कल गई है ॥
महा रस भौंर परैं लोचन अधीर तरैं
आछी वोक धरैं प्यास पीर सरसई है ।
कैसे घनआनँद सुजान प्यारी छवि कहौं
डीठि तैा चकित औ थकित मति भई है ॥२४१॥
नीकी नासा पुटहो की उचनि अचंभे भरी
मुरि कै इचनि सों न क्यों हूँ मन ते मुरै ।
रूप लाड़ जोबन गरूर चोप चटक सों
अनखि अनोखी तान गावै लै मिहीं सुरै ॥

सहज हँसौहीँ छबि फबति रँगीले मुख
दसननि जोति जाल मोती माल सी ढरै।
सरस सुजान घनआनँद भिजावै प्रान
गरबीली मीवा जब आन मान पै दुरै ॥२४२॥

सवैया

दृग छाकत है छबि छाकतही मृगनैनी जबै मधुपान छकै।
घनआनँद भीजि हँसै सु लसै झुकि झूमति घूमति चौंकि चकै॥
पल खोलि ढकै लगि जात जकै न सम्हारि सकै बलकै(?) बकै।
अलबेली सुजान के कौतुक पैं अति रीझि इकौसो ह्वै लाज थकै २४३

पानिप मोती मिलाय गुही गुन पाट पुही सु जुही अभिलापी।
नीकै सुभाय के रंग भरी हित जोति खरी न परैं कछु भाषो॥
बाल है बाँधी दै प्रीति कि गाँठि सु है घनआनँद जोबन साषी।
नैननि पान बिराजति जान सुराबरै रूप अनूप की राखी।।२४४।।

सोभा सुमेर की सिंधुवटी किधौं सोभित मान मवास की घाटी।
कै रसराज प्रवाह को मारग चैनी बिहार सों यों दृग दाटी॥
काम कलाधर ओप दई मनों प्रीतम प्यार पढ़ावन पाटी।
आन की पीठि लखें घनआनँद आनन आन दें होत उचाटी।।२४५।।

कवित्त

तैं मुँह लगाई वावें मोहिं मैनहों की कथा
रसना के घर एक रस रही बसि है।
तेरी सौंह जान सोई जाने जिनि जोही छबि
क्योंधौ इन नैननि तैं नींद गई नसि है॥

छोरि छोरि धरे जे जे भूषन विदूषन से
तहाँ तहाँ लगि लोभी मन गयो गसि है।
भारस रसीली घनआनँद सुजान प्यारी
ढीली दसा हीं सों मेरी मति लीनी कसि है ॥२४६॥
चलदल पात की प्रभा को है निपात जातें
यातें धाय वावरी डराय काँपिबो करै।
धोरी थिर गुन में विराजै चिर आभा ऐन
नैन हेरें हेरनि हिए में भूप लै भरै॥
नैको सनमुख भएँ दीजै सब तन पीठ
नीठि हाथ लागै मन पायन कहूँ परै।
ताकें तौ उदर घनआनँद सुजान प्यारी
बोली उपमानि को गरूर भौरे लौं गरै ॥२४७॥

सवैया

साँच के सान धरे सुरबान पै छूटैं बिना ही कमान सों जोटैं।
दीसैं जहाँ के तहाँ सो चलें अति घूमति है मति या चख चोटैं॥
घाव को चाव बढ़े घनआनँद चाउनि लै उर आड़न ओटैं।
प्रान सुजान के गान बिधे घट लोटैं परे लगि तान की चोटैं ॥२४८॥
जोवन रूप अनूप सरीर सों अंगहि अंग लसै गुन ऐंठी।
चातुरी चोप मनोज के चोजनि घूघरि कारि पै ऊठ (?) अमैठी॥
सूधे न चाहै कहूँ घनआनँद सोहै सुजान गुमान गरैंठी।
पैठत प्रान परी अनपीली सुनाक चढ़ाएइ डोलत ऐंठी ॥२४९॥

गोरे भवा पहुँचानि बिलोकत रीझि रँग्यो लपटाय गयो है।
पन्नानि की पहुँचीन लसें इन ग्राभा तरंगनि संग रयो है॥
नील मनीनि हिएँ लवनी रुचि रूप मनी सुपनों न छयो है।
चारु घुरीनि चितै घनग्रानँद चित्त सुजान के पानि भयो है।२५०।

तेरी धिनाईं बनाय की यानिक जाँते सचो रति रूप मलापन।
को कवि सो छवि को बरनै रचि राखति अंग सिंगार कलापन॥
कान ह्वै तान को रूप दिखावति जान जबै कछू लागो अलापन।
नाचहि भाव को भेद बतावतु है घनग्रानँद मौंद चलापन।२५१।

कवित्त

रूप मतवारी घनग्रानँद सुजान प्यारी
घूमर कटाछि घूम करै कौन पै धिरैं।
नाच की चटक लसै अंगनि मटक रंग
लाडिली लटक संग लोइन लगे फिरैं॥
अभित निकाई निरखवईं बिकाई मति
गति भूली डोलै सुधि सौंधी न लहैं हिरैं।
राते तरवानि तरें चूरे चोप चाड़ पूरे
पाँवड़े लों प्रान रीझि कनावड़े ह्वै गिरैं।२५२॥

सवैया

नाच लट्टू है लग्यो फिरै पाइनि चाइनि चाहि लड़ीं लियै ढोलनि।
त्यों सुर साँच सवाद सनें मन भूठियैं लागति ग्रान की बोलनि॥
नैकु हँसें सु करोरिक चंदनि चेरो करै दुति दंत अमोलनि।
ऐसी सुजान लखें घनग्रानँद नैन परैं रसमैन कलोलनि।२५३॥

माधिक रूप रसीले सुजान को पान किए छिनकौ न छकै कौ ।
मूल कौ सौंपि तवै जु सवै सुधि काहू की कानि कनौड़त कैकौ ॥
प्रान निवारि निवारि कौ लाजहि ऐसी बनै विन काज सकै कौ ।
बावरे लोगन सों घनआनँद रीझनि भीजिकैखीजि थकै कौ ॥२५४॥

कवित्त

चोप चाह चाँवरि चुहल चोप चटकीली
झटक निवारैं टारैं कुलकानि कोचि कै ।
घात लै अनूठी भरें वे तक चितौन मूठी
घूँघरि चिलक चौंध बीज कौंध सौं टिकै ॥
भींजे घनआनँद सुजान के खिलार दृग
नैसिक निहारैं जिनकी निकाई पै बिकै ।
रूप अलवेली सु नवेली एरी तेरी आखें
ताकि छाकि मारैं हरिहाइन कहूँ छिकै ॥२५५॥

सवैया

कोऊ न देखै न काहू दिखावत आपनो आनन जान अमैड़े ।
वै विसभा मधि न्यारे रहैं पुनि रोकत चेटक लों दृग पैंड़े ॥
कौन पत्याय कहै घनआनँद है सब सूधे सयान सी ऐंड़े ।
रूप अनूपम को पुर दूरि सु बावरे नैनन के मग बैंड़े ॥२५६॥
नैन किए अति आरति ऐन सुरैनि दिना चित चोंप विसेखै ।
नीके सुधानिधि रूप छक्यो रचि आरि चुरौ सब त्यागि परेखै ॥
जैसे सुजान लखैं घनआनँद नेही न आनि हियै अवरेखै ।
ऐसे उजागर हैं जग मैं परि चन्दहि एक चकोरहि देखै ॥२५७॥

कवित्त

नेही की बिलोकनि बिलोइ सार सोधि लेइ
रूप रिझवार जानि काढ़े गुन दब के।
चाड़ सिर चढ़तु चढ़तु अति लाड़िलो ह्वै
कैसे गनै बनै जेब ओटपाय* तब के॥
खेल अलबेले हियो खूँदै घनआनँद यो
जान प्यारे मतवारे भारे सुगरब के।
कहिबे को कोऊ कित देखो न परेखो वे तो
चाँदिनी को चोर मोर पच्छ अच्छ सब के॥२५८॥

सवैया

सोए हैं अंगनि अंग समोए सुभोए अनंग के रंगनि स्यों करि।
केलिकला रस आलस आसव पान छके घनआनँद योंकरि॥
प्रेमनिसा मधि रागत पागत लागत अंगनि जागत क्यों करि।
ऐसे सुजान बिलास निधान हो सोयें जगे कहि ध्यों रियै क्यों करि॥२५९॥
आतुर ह्वै रस आतुर होहु न बात सयान की आत क्यों चूकै।
ऐसियै ठाननि ठानत हौ कित धीर धरौ न परौ जिन ढूकै॥
देखि जियौ न छियौ घनआनँद कोंरे अंग सुजान बधू के।
चोली चुनावट चीन्हैं चुभैं चपि होत उजागर हात नखू के॥२६०॥
मृदु मूरति लाड़ दुलार भरी अँग अंग बिराजति रंग मई।
घनआनँद जोबन माती दसा छबि छाकनि मति छाक दई॥

* ओटपाय = उत्पात।

नवल सनेह साने आरसनि सरसाने
बिधिना बनाय बाने अंग अंग लसे हैं ॥
छबि निखरे ह्वै खरे नीकेई लगत मोहिं
आनँद के घन गूढ़ गाँसनि सों गसे हैं।
भोर भए आए भाँति भाँति मेरे मन भाए
एहो घरबसे आज कौन घर बसे हैं ॥२६४॥
रूप गुन आगरि नवेली नेह नागरि तू
रचना अनूपम बनाई कौन बिधि है।
चलनि चितौनि बंक भौंहनि चपल हौनि
बोलनि रसाल मैन मंत्रहू को सिधि है ॥
अंग अंग केलि कला संपति बिलास घन
आनँद उज्यारी मुख सुख रंग रिधि है।
जब जब देखिए नई सो पुनि पेखिए यों
जानि परी जान प्यारी निकाई की निधि है ॥२६५॥
सहज उजारो रूप जगमगी जान प्यारो
रति पैं रतीक आभा है न रोम रीस की।
चीकने चिहुर नीके आनन बिथुरि रहे
कहा कहौं सोभा सुभ भरे भाल सीस की॥
बीच बीच मंजुल मरीचि रुचि फैलि फबी
केलि समै उपमा लसति बिसे बीस की।
मानो घनआनँद सिंगार रस सों सँवारी
चिक में बिलोकति बहनि रजनीस की ॥२

मीत मनभावन रिझावन कौ जान प्यारो
आई घनआनँद घुमंडि आछौ बनि है ।
मंजन कै, अंजन दै भूषन बसन साजि
राजि रही भृकुटी जुटीही बंक तनि है ॥
अंग अंग नूतन निकाई उझलनि छाई
औन भरि चली सोभा नदी लौं उफनि है।
देखनि दुलार भोई बोलनि सुधा समोई
मुख की सुबास सास निसरति सनि है ॥२६७॥

सवैया

भावते के रस रूपहिं सोधि लै नीके भरो उर कै कजरौटो ।
रोमहि रोम सुजान विराजत सोचि सचै मति की मति औटो ॥
प्रेमवती न करै सु कहा घनआनँद नेम गली गति लौटो ।
मीत मराल सरोवर तो मन तैं पिय को हिय कीनो कसौटो २६८
आनन की सुघराई कहा कहौं जैसी विराजति है जिहि औसर।
चंद तो मंद मलीन सरोरुह एकहू रंग [illegible] ओसर ॥
नैन अन्यारे तिरोछी चितौनि मैं [illegible] म को सर ।
[illegible] आन [illegible] ओसर २६९

लाड़ लसी लहकै महकै अँग रूपलता लगि डोठ झकोरै।
हास बिलास भरे रस कन्द सु आनन त्यों चख होत चकोरै॥
मौन भली कहि कौन सकै घनआनँद जान सु नाक सकोरै।
रीझि बिलोएई डारति है हिय मोहत टोहत प्यारी अकोरै२७१

कवित्त

रूप गुन ऐंठी सु अमैठी उर पैठी बैठी
लाडनि निरैंठी मति मुरनि हरै हरी।
जोबन गहेली अलबेली अतिही नवेली
हेली है सुरति बौरी आँचर टरै टरी॥
परम सुजान भोरी बातनि छ्वाए प्रान
भावति न आन बेई हियरा अरै अरी।
फंद सी हँसनि घनआनँद दृगनि गरें
मुख सुखकंद मंद उघरि परै परी॥२७२॥
चारु चामीकर चंद चपला चंपक चोखी
केसरि चटक कौन लेखै लेखियति है।
उपमा बिचारी न बिचारी नहि जान प्यारी
रूप की निकाई औरै अवरेखियति है॥
सरस सनेह सानी राजति रमानी दस(?)
तरुनाई तेज अरुनाई पेखियति है।
मंडित अखंड घनआनँद उजास लिएँ
तेरे तन दीपति दिवारी देखियति है॥२७३॥

सवैया

प खिलार दिवारी किए नित जोयन छाकि न सूझे निहारै।
नैननि सैन छलै चित सों चित चाव भरो निज दाव विचारै॥
जीविहीं को चसका घनआनंद चेटक जान मयान बिसारै।
जीव बिचारौ परयो अति सोचनि हारि रह्यो सु कहा फिरि हारै२७४

पानिप पूरी खरी निखरी रस रासि निकाई की नीवहिं रोपैं।
लाज लड़ो बड़ी सील गसीली सुभाय हँसीला चितै चित लोपैं॥
अंजन अंजित सी घनआनँद मंजु महा उपमानिहूँ लोपैं।
तेरी सों परो सुजान तो आँखिनि देखिए आँखि न आवति मोपैं२७५

कवित्त

कंठ काँच घटी तें वचन चोखो आसव लै
अधर पियालें पूरि राखति सहेत है।
रूप मतवारो घनआनँद सुजान प्यारो
काननि ह्वै प्राननि पिआय पीवै चेत है॥
छकेंई रहत रैन द्योस प्रेम प्यास आस
कीनी नेम धरम कहानी उपनेत है।
ऐसे रस बस क्यों न सोवै और स्वाद कहौ
रोम रोम जाग्योही करतु मीनकेतु है॥२७६॥

सवैया

उर भौन में मौन को घूघट कै दुरि बैठो बिराजति बात बनी।
मृदु मंजु पदारथ भूपन सो सुलसै हुलसे रस रूप मनी॥

छाड़ छसी छहकै महकै अँग रूपलता लगि डीठ भकोरै।
हास बिलास भरे रस कन्द सु आनन लों चख होत चकोरै॥
मौन भली कहि कौन सकै घनआनँद जान सु नाक सकोरै।
रीझि बिलोएई हारति है हिय मोहत टोहत प्यारो अकोरै२७१

कवित्त

रूप गुन ऐंठी सु अमैंठी उर पैठी बैठी
लाडनि निरैठी मति मुरनि हरै हरी।
जोबन गहेली अलबेली अतिही नवेली
हेली ह्वै सुरति बौरी आँचर टरै टरी॥
परम सुजान मोरी बावनि छवाए प्रान
भावति न आन बेई हियरा अरै अरी।
फंद सी हँसनि घनआनँद हगनि गरें
मुख सुखकंद मंद उघरि परै परी॥२७२॥
चारु चामीकर चंद चपला चंपक चोखी
केसरि चटक कौन लेखै लेखियति है।
उपमा बिचारी न बिचारी नहि जान प्यारी
रूप की निकाई औरै अवरेखियति है॥
सरस सनेह सानी राजति रमानी दस(?)
तरुनाई तेज अरुनाई पेखियति है।
मंडित अखंड घनआनँद उजास लिएँ
तेरे तन दीपति दिवारी देखियति है॥२७३॥

सवैया

रूप खिलार दिवारी किए नित जोवन छाकि न सूझे निहारै ।
नैननि सैन छलै चितसों चित चाव भरयो निज दाव बिचारै ॥
जीविही को चसको घनआनँद चेटक जान सयान बिसारै ।
जीव विचारो परयो अति सोचनि हारि रह्यो सु कहा फिरि हारै २७४
पानिप पूरी खरीं निखरीं रस रासि निकाई की नीवहिं रोपैं ।
लाज लड़ो बड़ी सील गसीली सुभाय हँसीली चितै चित लोपैं ॥
अंजन अंजित सी घनआनँद मंजु महा उरमानिहूँ लोपैं ।
वैरी सौं परो सुजान तो आँखिनि देखिद आँखि न आवतिं मोपै २७५

कवित्त

कंठ काँच घटी तें वचन चोखो आसव लै
अधर पियालें पूरि राखति सहेत है ।
रूप मतवारो घनआनँद सुजान प्यारो
काननि ह्वै प्राननि पिवाय पीवै चेत है ॥
छकेई रहत रैन द्योस प्रेम प्यास आस
कीनी नेम धरम कहानी उपनेत है ।
ऐसे रस बस क्यों न सोवै और स्वाद कहौ
रोम रोम जाग्योही करतु मीनकेतु है ॥२७६॥

सवैया

उर भौन में मौन को घूघट कै दुरि बैठी बिराजति बात बनी ।
मृदु मंजु पदारथ भूषन सों सुलसै हुलसै रस रूप मनी ॥

रसना अली कान गली मधि ह्वै पधरावति लै चित सेज ठनी।
घनआनँद बूमनि अंक बसै बिलसै रिझवार सुजान धनी ॥२७७॥

कवित्त

याही आएँ आवन की आसा उर आय बसै
चाहै निरवाहै नित हित कुसलात कौ।
हैरी वह बैरी धैरी उघरयो निगोड़नि पै
ओछी जरि गयो गोवै कहा भेद बात को॥
मधुर सरूप याहि देखिए अनंदघन
पोपें जान प्यारे संग रंग मनजात को।
साँझ सही साथिनि सँजोगहि सजाइ देति
लाग्यो नित गोहन ही प्रात प्रानघात को॥२७८॥
मुख देखें गौहन लगेई फिरैं भौंर भौंर
छूटे बार हेरि कै पपीहा पुंज छावहीं।
गति रीझै चाइन सों पाइनि परस काजै
रस लोभी बिबस मराल जाल धावहीं॥
यातें मन होय प्रान संपुट में गोपि राखौं
ऐसेहूँ निगोड़े नैन कैसे चैन पावहीं।
सोचिये अनंदघन जान प्यारी जैसें जानौ
दुसह दसा की धातें बरनी न आवहीं॥२७९॥
अंग अंग आभा संग द्रवित अवित ह्वै कै
रचि सचि छीनी सौज रंगनि घनेरे की।

हँसनि लसनि आछी बोलनि चितौनि चाल
मूरति रसाल रोम रोम छबि ढेरे की ॥
लिखि राख्यो चित्र यों प्रवाह रूपो नैननि पें
लही न परति गति उलट अनेरे की ।
रूप को चरित्र है अनंदघन जान प्यारी
ए किधौ विचित्रताइ मो चित चितेरे की ॥२८०॥

सवैया

मीत सुजान मिले को महा सुख अंगनि भोय समोय रह्यो है ।
स्वाद जगे रस रंग पगे अति जानत वेई न जात कह्यो है ॥
द्वै उर एक भए घुरिकै घनआनँद सुद्ध समीप लह्यो है ।
रूप अनूप तरंगनि चाहि तक चित चाह प्रवाह बह्यो है॥२८१॥
अति रूप की रासि रसीलियै मूरति जोहौं जबै तब रीभ छकौं ।
घनआनँद जान चरित्र के रंगनि चित्र विचित्र दसा सों थकौं ॥
अनदेखें दई जु कछू गति देखियै जीवहि जानै न ब्योरि सकौं ।
यह नेह सदेह अदेह करै पचि हारि विचारि विचारि जकौं ।२८२।
स्याम घटा लपटी थिर बीज कि सोहै अमावस अंक उज्यारी ।
धूम के पुंज में ज्वाल की माल सी पै दृग सीतलता सुखकारी ॥
कै छबि छायो सिंगार निहारि सुजान तिया तन दीपति प्यारी ।
कैसी फबी घनआनँद चोपनि सो पहिरी चुनि साँवरी सारी॥२८३॥
कित जाउँ लै ज्ञान सजीवन प्रान को आन के लेखें न छाँहि घिजौ ।
इहि साल दहौं नितहौं दुखज्वाल एु सोचनि लोचन वारि भिजौं ॥

दुरि आप नपहू इती में मिली घनआनँद यों अनखानि छिजी।
वरडीठि केनीठिन देखि सकी सुअनोखियै रीझियै गीझिखिजी।२८३
तुम साँचो कहौ हित कै चित की कित भूल भरे इत आय परे।
कि कहूँ पहली परनाति मढ़े घनआनँद छाय सुभाय ढरे॥
चलि बैठो सुजान तौ का बरजै धरि पावनि पावन नैन करे।
थकि से जकि से निरखौं परखौं सुनिहौं जिहि रंगन रंग ढरे २८५
अधरासव पान के छाक छके कर थापि कपोल सवाद पगे।
घनआनँद भीजि रहे रिझवार पगे सब अंग अनंग दगे॥
करि खंडन गंडन मंडन दै निरखें तें असंडित लोभ लगे।
सुखदान सुजान समान महा सु कहा कहौं आरसी भाग जगे २८६
रिसि रूसनैं रूपियो ऊठ अनूठियै लागति जागति जोति महा।
अनबोलनि पै बलि कीजियै बानी सुबोलनि की कहिए धौं कहा॥
ननिहारनि हेरनि हारति डीठि औ पीठि दिएँ समुहात लहा।
घनआनँद प्यारी सुजान है कान अहा सुनिए हित बात इहा २८७

कवित्त

कौन को सुजस जोन्ह अमल अपूरब को
जग में उदोत देखियत दिन रैन है।
जाकी जोति जागै रस पागै हो चकोर नैन
बुध कवि मित्रन कौं पोषै मन चैन है॥
नेह निधि बाढ्यो घनआनँद गुननि सुनि
अविरज है न सो निहारी कहूँ मैं न है।

विरह विदारि श्री विदारि दुरातम कब
सोंचौगे श्रवन कहि सुधा सने बैन है ॥२८८॥
नीके नैन ऐन पाय चैन पाय लाजहू को
सोभा के समाज हेरें हिय सियरातु है ।
एरी मेरी सहज लडोली अरबीली सुनि
तेरो अंग संग लहे लाड़ी लड़कातु है ॥
रूप मद छाके तें गँवेली गरबीली ग्वारि
तोहि ताकें रूपौ उमगनि उमदातु है ।
आनँद के घन सों न कीजै मान जान प्यारी
दान दीजै पिय सों न मानै यों हीं जात है ॥२८९॥

सवैया

मीठे महा गरुवे गुनरासि ह्वै हूजतु क्यों करुवे गहि दोसनि ।
आपु न रयों तकिए सकिए कहि हाय हठीले न रूसिए रोसनि ॥
तासों इतौ अनखानि कहा घनआनँद जो भिजई सु भरोसनि ।
बारिए कोरिक प्रान सुजान हौ ए पर यों मरिएगो मसोसनि ॥२९०॥
घर आवति है अपनें कर ह्वै घर बेनी बिलास सों नीकै गसौं ।
अति दीन ह्वै नीचियै छोठि कियैं अनखौहैं सुभाव के त्रास त्रसौं ॥
घनआनँद यों बहु भाँतिन हौं सुखदान सुजान समीप बसौं ।
हित चाइनि नैं चित चाइनि च्वै नित पाइनि ऊपर सीस घसौं ।२९१।
जान प्रवीन के हाथ को बीन है सो चित राग भरयो नित राजै ।
सो सुर सांच कहूँ नहिं छावतु ज्यों हीं बजावै लिएँ मन बाजै ॥

भावती मीड़ मरोर दिएँ घनआनँद सौ गुने रंग सौं गाजै
प्यार सौं तार सु ऐंचि कै तोरत क्यों सुघराई पैं लाजत लाजै ।२

कवित्त

रसहि पिवाय प्यासे प्राननि जिवाय राखैं
लाज सों लपेटी लसै उघरि हितौन की ।
निपट नवेली नेह भेली लाड़ अलबेली
मोह दरदरी भरी विरह रितौन की ॥
लोने लोने कोने छ्वैं छबीली अँखियानि की
सु रंचकौ न चूकै घात औसर बितौन की ।
एरी घनआनँद बरसि मेरी जान तेरी
हियो सुख सींचै गति तिरछी चितौन की ॥२६३॥
तेरी अनमान नहीं मेरे मन मानि रही
लोचन निहारैं हेरि सौंहैं न निहारिबौ ।
कोरि कोरि आदर कौ करत निरादर है
सुधा तें मधुर महा झुकि झिझकारिबौ ॥
जीवन की ज्यारी घनआनँद सुजान प्यारी
जीव जीति लाहौ लहै तेरें हठि हारिबौ ।
रूखी रूखी बातनि हूँ सरसै सनेह सुठि
हिए तें टरै न ए अनखि कर टारिबौ ॥ २६४ ॥
ललित लसौहीं सुढरौंहीं नैक सौंहीं भएँ
त्यौंहीं रहि गहे गौहीं डोलति न डीठि है ।

हठ पटरानी प्रान पैठिये कौ फिरिवै वै
देखी बिन बोलिबे मैं रस की बसीठि है ॥
सुख सनमान देति मुरि दीनैं कीनैं मान
जान प्यारी बिरचैं हूँ रौंचनि मजीठि है ।
मनु दै मनाऊँ सो न पाऊँ घनआनँद पै
मोहिं यौं बिमन करै एरी तेरी पीठि है ॥२९५॥

रिस भरी भोर ताकी देखी सुनी प्रीति नीति
नायक रसीलौ बिनै बिनती महा करै।
चोप चाय दायनि सौं अमित उपायनि लौं
ज्यौंही घनै त्योंही लगि प्रापति लहा करै॥
मीन जलहीन लौं अधीन ह्वै अनंदघन
जान प्यारी पाँइनि पैं' कब को इहा करै।
दई नई टेक तोहिं टारें न टरति नैकौ
हारयो सब भाँति जो बिचारो सो कहा करै॥२९६॥

सीस लाय दृग छाय हियें पै बसाय राख्यौ
इते मान मन आवै प्राननि मैं लै धरौं ।
हेरि हेरि चूमि चूमि सोभा छवि घूमि घूमि
परसि कपोलनि सौं मंजन क्रिया करौं ॥
केलि कला कंदिर विलास निधि मंदिर ये
इनही के बल हौं मनोज सिंधु को तरौं ।
यातें घनआनँद सुजान प्यारी रीझि भीजि
उमगि उमगि बेर बेर तेरे पा परौं ॥२९७॥

इत काहू सों मेल रह्यो न कछू उत खेल सी ह्वै सब बात टरी ।
घनआनँद जान सयान को खानि भुराई हमारई पैंड़े परी ॥३०१॥
अब यों उर आवति है सजनी उन सों सपनेहूँ न बोलियैरी ।
अरु जौ लिखजै ह्वै मिलैं सो मिलौ मन सें गस गूँज न खोलियैरी ॥
दृग देखन कों कछु सौंह नहीं इन गोहन भूलि न डोलियैरी ।
घनआनँद जान महा कपटी चित काहैं परेखनि छोलियैरी ॥३०२॥
बारनि भौंर कुमार भजैं पुहुपावलि हास बिकासहि पूजति ।
पाठ कियौ करै आठहू जाम सुबोलनि सौरिन्रें कोकिल कूजति ॥
पै घनआनँद रीझि छए तकि तो छवि आन क्यों आँखिन छूजति ।
परी बसंत लजावन कंत सों जान ह्वै मान मई कित हूजति॥३०३॥

कवित्त

हमैं तुम्हैं आजलौं न अंतर हो प्रान प्यारे
कहाँ तें दुरयो सो बैरी आड़े आनि ह्वै भयौ ।
जियरा बिचारो इन सोचनि समाय जाय
हियरा उदेगनि उजार सम ह्वै गयौ ॥
रावरे हू रंचक बिचारि देखौ जानमनि
कौन कै सहाय आय महा दुख यो दयौ ।
मारि टारि दीजै ऐसो नीच बीच मनो माहि
बहै रस-भीनी घनआनँद रहै छयौ ॥३०४॥
अंतर गठीले मुख ढीले ढीले बैन बोलौ
सुंदर सुजान तऊ प्राननि लगैं लगी ।

इत काहू सों मेल रह्यो न कछू उत खेल सी ह्वै सब बात टरी।
घनआनँद जान सयान को खानि भुराई हमारई पैंड़े परी॥२०१॥

अब यों उर आवति है सजनी उन सों सपनेहूँ न बोलियैरी।
अरु जौ निलजै ह्वै मिलैं तो मिलौं मन तें गस गूँज न खोलियैरी॥
दृग देखन को कछु सौंह नहीं इन गोहन भूलि न डोलियैरी।
घनआनँद जान महा कपटी चित काहैं परेखनि छोलियैरी॥२०२॥

बानि धीर कुमार भजैं पुहुपावलि हास बिकासहि पूजति।
पाठ कियौ करै आठहू जाम सुबोलनि सौरियनैं कोकिल कूजति॥
वै घनआनँद रीझि छए तकि तौ छबि आन क्यों आँखिन छूजति।
एरी बसंत लजावन कंत सों जान ह्वै मान मई कित पूजति॥२०३॥

कवित्त

हमैं तुम्हैं आजलौं न अंतर हो प्रान प्यारे
कहाँ तें दुरयो सो बैरी आइ आनि है भयौ।
जियरा बिचारो इन सोचनि समाय जाय
हियरा उदेगनि उजार सम ह्वै गयौ॥
रावरे हू रंचक बिचारि देखौ जानमनि
कौन कै सहाय आय महा दुख या दयौ।
मारि टारि दीजै ऐसो नीच बीच अजौं नाहिं
बहै रस-भीनो घनआनँद रहै छयौ॥२०४॥

अंतर गठौले भुरा ढोले ढोले बैन बोलौ
सुंदर सुजान तऊ प्रानलि खरैं खगौ।

रैन द्यौस जागैं ऐसी लगीं जु कहूँ न लागैं
पन अनुरागैं पागैं चंचलता च्वै गईं ॥
हित की कनौड़ी लौंड़ी भईं ये घनंदघन
फिरैं क्यों पिछौड़ी नेह मग डग द्वै गईं ।
माधुरी निधान प्रान ज्यारी जान प्यारी तेरी
रूप रस धारैं धारैं मधुमाखी ह्वै गईं ॥३०८॥
चाखैं रूप रस धारैं धाहैं उर संचि राखैं
लोभ लागी लागैं अभिलाखैं निधरैं नहीं ।
तोहि जसी भाँति लगै बरनिवौ मन बसै
बानी गुन गसै मति गति विघकै तहाँ ॥
जानप्यारी सुधि हूँ अपुनपौ बिसरि जाय
माधुरी निधान तेरी नैसिक सुहाचहाँ ।
क्योंकरि घनंदघन लहिए सँजोग सुख
लालसानि भीजि रीझि धावैं न परैं कहाँ ॥३०९॥
जो कछू निहारैं नैन कैसें सो बखानै बैन
बिना देखी कहैं तौ कहा तिन्हैं प्रतीति है ।
रूप के सवाद भीने घापुरे अबोल कीने
बिधि बुधि हीने की अनैसी यह रीति है ॥
सुख दुख साथी मिलें बिछुरें घनंदघन
जान प्रान प्यारे सो नयेंनी इन्हैं प्रीति है ।
औरहि न चाहैं पन पूरौ निव लै निवाहैं
हारैं हँसि आपो जीति मानैं नेह नीति है ॥३१०॥

साखा कुल टूटै ह्वै रँगीली अभिलाषा भरी
परि ह्वै पखान बीच घसनि घनी सहै ।
सोव सूखी इते मान आनि कैं सलिल बूड़ै
घुरि जाय चाहनिहीं हाय गति को कहै ॥
तऊ दुखदाई देखौ छिदति सलाकनि सों
प्रेम की परख हैया कठिन महा अहै ।
पिय मनसा लौं वारी मिंहदी अनंदघन
एरी जान प्यारी नैक पाइन लग्यो चहै ॥३११॥
आरति के ऐन द्योस रैन राजैं नेही नैन
चढ़े चोप छाजैं साजैं डोठि ईठि वौ अचूक।
पूरे पन राचे छाकि पाकि चूरे मस काचे
ताचे साँच आँच के टरैं न टक सें अचूक ॥
रूप उजियारे जान प्यारे हैं निहारे जिन
भीजे घनआनँद कनौड पुंज लाज ऊक ।
नेमी अंध हाँस मरैं चाहैं तिन रीस करैं
ऐसे अरबरैं ज्यों चकोर होन कौं उलूक ॥३१२॥
प्रेम को महोदधि अपार हेरि कै बिचार
बापरो हहरि वार हीतें फिरि आयो है ।
ताही एकरस ह्वै बिबस अवगाहैं दोऊ
नेही हरि राधा जिन्हैं देखें सरसायो है ॥
ताको कोऊ तरल तरंग संग छूट्यो कन
पूरि लोक लोकनि उमगि उफनायो है ।

ई घनआनँद सुजान लागि हेत होत
ऐसे मथि मन पै सरूप ठहरायो है ।३१३॥

सवैया

लोइन लाल गुलाल भरे कि खरे अनुराग सों पागि जगाए ।
कै रस चाँचरि चौचँद मैं छतिया पर छैल नपच्छत छाए ॥
भीजि रहे श्रम नीर सुजान धरी डग ढीलिए ल गौ सुहाए ।
भोरहूँ ऐसी खिलारनि पै घनआनँद का छल छूटन गए ।।३१४॥
अंगनि पानिप ओप खरी निखरी नवजोवन की सुघराई ।
नैननि घैरति रूप के भौंर अचंभे भरी छतियाँ उघराई ॥
जान महा गरुवे गुन में घनआनँद हेरि रह्यो सुघराई ।
पैने कटाच्छिनि ओज मनोज के बानन बीच बिधी सुघराई ॥३१५॥
रस रैन जगो पिय प्रेम पगी अरसानि सों अंगनि मोरति है ।
मुख ओप अनूप बिराजि रह्यो ससि कोरिक बारने का रति है ॥
अँखियानि मैं छाकनि की अरुनाई हिएँ अनुराग लै बोरति है ।
घनआनँद प्यारी सुजान लखें हरि डीठि हितू तिन तोरति है।।३१६॥
मुख स्वेद कनी मुख चंद बनी बिथुरी अलकावलि भाँति भली ।
मद जोबन रूप छकीं अँखियाँ अवलोकनि आरस रंग रली ॥
घनआनँद ओपित ऊँचे उरोजनि चोज मनोज की ओज दली ।
गतिढोली लजीली रसीली सुजान मनोरथ बेलि फली सुफली३१७
हुलास भरी मुसक्यान लसै अधरानि तै आनि कपोलनि जागै ।
छूटीं अलकैं मृदु मंजु मिहीं श्रुति मूल छलानि अनी मुरि लागै ॥

सोई घनआनँद सुजान लागि हेत होत
ऐसे मथि मन पै सरूप ठहरायो है ।३१३॥

सवैया

लोइन लाल गुलाल भरे कि खरे अनुराग सों पागि जगाए ।
कै रस चाँचरि चौचँद मैं छतिया पर छैल नषच्छत छाए ॥
भींजि रहे श्रम नीर सुजान घरी छग ढीलिए ल गौ सुहाए ।
भोरहूँ ऐसी खिलारनि पै घनआनँद का छल छूटन गए ॥३१४॥
अंगनि पानिप ओप खरी निखरी नवजोबन की सुघराई ।
नैननि बैरति रूप के भौंर अचंभे भरी छतियाँ उथराई ॥
जान महा गरुवे गुन में घनआनँद हेरि रह्यो थुथराई ।
पैते कटाच्छिनि ओज मनोज के बानन बीच बिधी मुथराई ॥३१५॥
रस रैन जगो पिय प्रेम पगी अरसानि सों अंगनि मोरति है ।
सुख ओप अनूप बिराजि रही ससि कोरिक वारने का रति है ॥
अँखियानि मैं छाकनि की अरुनाई हिएँ अनुराग लै बोरति है ।
घनआनँद प्यारी सुजान लखें हरि डीठि हितू तिन तोरति है ॥३१६॥
सुख स्वेद कनी सुख चंद बनी बिथुरी अलकावली भाँति भली ।
मद जोबन रूप छकीं अँखियाँ अवलोकनि आरस रंग रली ॥
घनआनँद ओपित ऊँचे उरोजनि चोज मनोज की ओज दली ।
गतिढोली लजीली रसीली सुजान मनोरथ बेलि फलो सुफलो ३१७
हुलास भरी मुसक्यान लसै अधरानि तें आनि कपोलनि जागैं ।
छुटीं अलकैं मृदु मंजु मिहीं श्रुति मूल छलानि अनी मुरि लागैं ॥

बड़ी अँखियानि मैं अंजन रेख लजीली चितौनि हिएँ रस पागै।
सुहाग सो ओपित भाल दिपै घनआनँद जान पिया अनुरागै॥३१८॥
राधा नवेली सहेली समाज मैं होरी को साज सजें अति सोहै।
मोहन छैल खिलार तहाँ रस प्यास भरी अँखियानि सों जोहै॥
डीठि मिलें मुरि पीठि दई हिय हेत की बात सकै कहि को है।
सैननिहीं बरस्यो घन आनँद भीजनि पैं रँग रीझनि मोहै॥३१९॥
रस चौचँद चाचरि फागु मचो लखि रीझि बिकानि थकी जु चकी।
समुहाय चही हरि भामिनि त्यों पिचकी भरि ताक तकी झुकी॥
उत मूठी गुलाल उठे चकसे सु लगें पहिलें छवियाँ दुचकी।
घनआनँद घूमनि भूमि रहे गुल-चाइल लै अचकाँ उचकी॥३२०॥
वह माधुरियै सों भरी मुसक्यानि मिठास लहै क्यों बिचारो अमी।
अरु बंक बिसाल रँगीले रसाल बिलोचन मैं न कटाछ कमी॥
घनआनँद जान अनूपम रूप तें रीति नई जिय माँझ रमी।
न सुनी कबहूँ सुलखी चित वैरई लेति लुनाइए की लछमी॥३२१॥
मंजुल वंजुल पुंज निकुंज अछेह छबीलौ महा रस मेह तैं।
द्योस मैं रैन सो चैन को ऐन पै जोति पग्यो जगि दंपति देह तैं॥
हास बिकास बिलास प्रकास सुजान समान अदेह के तेह तैं।
भीजि रहे घनआनँद स्वेद समीर डुलै बिजना भरि नेह तैं ३२२

कवित्त

मद उनमद स्वाद मदन के मतवारे
केलि के अवारि लौं सँवारि सुख सोए हैं।

भुजनि उसीसौ धारि अंतर निवारि अंग
अंगनि सुधारि तन मन ज्यों समोए हैं ॥
सुपने सुरति पागैं महा चोप अनुरागैं
सोएँ हूँ सुजान जागैं ऐसे भाव भोए हैं।
छूटे बार टूटे हार आनन अपार सोभा
भरे रससार घनआनँद अहो ये हैं ॥३२३॥

सवैया

खंजन ऐसे कहा मन रंजन मीननि लेखौ कहा रस द्वार सौं।
कंजन लाज कौ लेस नहीं मृग रूपे सने ये सनेह के सार सौं॥
मोतिन कें यह पानिप जोतिन वानि जिवाई न जानत मार सौं।
मीत सुजान सिरावति मो दृग देखनि आनँद रंग अपार सौं३२४
पीठि दिएँ सब दीठि परे निसुहैं जग ईठिनि कौ न सकेरै।
दैरि थक्यो जितहीं तितहीं नितहीं चित यों न कहूँ हित हेरै॥
कागर मैन लै, आगर मौन दै बातवसौ पै सुजानहिं टेरै।
नैननि काननि सौहीं सदा घनआनँद औरनि सों मुख फेरै ३२५

कवित्त

नेही नैन आरत पपीहनि की चाह भरी
पानिप अपार धरें जोबन अदेह कौ।
उझ्यो काहू भाँति धीर औरनि अपूरव पै
इते मैं फुहीनि चैन प्रान मन देह कौ॥
दोऊ अदभुत देखौ रसिक सुजान क्यों न
लेहिं देहिं स्वाद सुख आनँद अछेह कौ।

मोहिं नीको लागतु री राधे तेरे लोने इन
अंग अंग अररातु रंग मेह नेह को ॥ ३२६ ॥

सवैया

बरसैं तरसैं सरसैं अरसैं न कहूँ दरसैं इहि छाक छई।
निरखैं परखैं करखैं हरखैं उपजीं अभिलाषनि लाख जई॥
घनआनँद ही उनए इनि मैं बहु भाँतिनि ये उन रंग रई।
रस मूरति स्यामहि देखतहीं सजनी अँखियाँ रस रासि भई ३२७

आयो महा रस पुंज भरयो घनआनँद रूप सिंगार के मौरैं।
सीचतु है हिय देस सुदेस अपूरब आँखिनि ठानत ठौरैं॥
मोहन बाँसुरिया सी बजैं मधुरैं गरजैं धुनि मैं मति बौरैं।
आज की मोरन की सजनी चित दै सुनि लै कछु बोलनि औरैं ३२८

कवित्त

रति सुख स्वेद ओप्यो आनन बिलोकि प्यारी
प्राननि सिहाय मोह मादक महा छकै।
पीत पट छोर लै लै ढोरत समीर धीर
चुंबन की चाड़नि लुभाय रहि ना सकै॥
परस सरस बिधि रुचिर चिबुक त्योंहीं
कंपित करन केलि भाव दावही तकै।
लाजनि लसौहीं चितवनि चाहि जान प्यारी
मोंचत अनँदघन हाँसी सों भरी न कै ॥३२६॥

पानिप अनूप रूप जल्ल को निहारि मन
गयो हो बिहार करिबे कौं चाइ ढरिकै।

परयो जाय रंगनि की तरल तरंगनि मैं
अलिहों अपार ताहि कैसें सकै तरिकै ॥
धीर तीर सूझत कहूँ न घनआनँद यों
बिवस बिचारो थक्यो बोचहि इहरिकै ।
लेस न सम्हार गहि केसनि मगन भयो
बूड़िबे तें बच्यो को सिवारि कों पकरि कै ॥३३०॥
नैक उर आएँ ही बहुरि दुख दूरि जात
ताप बिन ताहि आप चंदन कृपा करै ।
लगनि दै लागनि दै पाग अनुरागनि दै
जागनि जगाइ लै कै मदन कृपा करै ॥
बानी के बिलास बरसावै घनआनँद ह्वै
सूछ्हू प्रगट गूढ़ छंदनि कृपा करै ।
आरति निकंदन मिलावै नँदनंदन-
आनँदनि मेरी मति बंदन कृपा करै ॥३३१॥
अमल अपूरब उजागर अखंड नित
जाहि चाहि चंदहि चिताइबो कलंक है ।
तारनि प्रकासै मित्र मंडल मैं मंडन है
बन घन राजै रसनायक निसंक है ॥
आनँद अमृत कंद बंदनीय प्रानति कौ
सुखमा संपति हेरें काम कौन रंक है ।
चाह तें चकोरनि कौं चोंपनि सौं लखि भंत
कृपा चंद्रिका मैं नँदनंदन मयंक है ॥३३२॥

सवैया

दृग दीजिए दोसि परी जिनसों इन मोर-पखौवनि को भटकै ।
मनु दै फिरि लीजियै आपन ह्वाँ जु तहाँ अटकै न कहूँ भटकै ॥
करि बंदन दीन भनै सुनियै भ्रम फंदनि मैं कपलों लटकै ।
घनआनँद स्याम सुजान हरौ जिय चातक के हिय की खटकै २३३

क्यों हठ कै सठ साधन सोधतु होत कहा मन यों तरसें तें ।
हाथ चढ़ै जिहिं स्याम सुजान कहूँ तिहि पाइन रे परसे तें ॥
नीरस मानस हू रसरासि बिराजत नैकुक आ सरसे तें ।
ऊसर हूँ सर होत लरें घनआनँद रूप कृपा बरसे तें ॥२३४॥

साधन पुंज परे अनलेरे पै मैं अपने मन एको न लेख्यो ।
जे निरखे उरझे तिनमें किनहूँ बिन सोग कछू न बिसेख्यो ॥
तातें भये तजि स्याम सुजान सों साहस धीरें हिएँ अवरेख्यो ।
प्रान पपीहन को घनआनँद पोष रसीली कृपा कर देख्यो॥२३५॥

ज्यों परसै नहि स्याम सुजानतौ धूरि समान है अंगनि धोइबो ।
त्यों मन को तिनकें दरसें बिनु बाद बिचारनि बीच ढँढोइबो ॥
यै घनआनँद क्यों लहियै भ्रम के मद मार अपारहि ढोइबो ।
जागत भाग कृपा रस पागत हागत यो सहजै सुख सोइबो ॥२३६॥

आय सों बाय लौं भूरि भयै सुख जीवन भूरि सजहारन क्यों नहीं ।
ताहि महागति तोहि कहा गति पैठें बनीं बिचारन क्यों नहीं ॥
नैननि संग फिरै मरुथ्यौ पल मूँदि सरूप निहारन क्यों नहीं ।
स्याम सुजान कृपा घनआनँद प्रान पपीहन पारन क्यों नहीं २३७

बलकै भलकै मुख रंग रचै उघरै गुन गौरव सील ढकै।
मन बाढ़ चढ़ै अति ऊरध कों टक टेक सों स्याम सुजान तकै॥
जक एक न दूसरी बात कहूँ घनआनँद भोजिकै प्रेम पकै।
दृग देखि छकै उलकै कबहूँ न छबीली कृपा मधुपान छकै॥३३८॥

कवित्त

परे रहौ करम धरम सब धरे रहौ
डरे रहौ डर कौन गनै हानि लाहे कों।
लोक परलोक जो कछू हैं तो न छूहैं हम
छीलर रुचै न छोर मधु अवगाहे कों॥
महा घनआनँद घुमंडि पाइयत जहाँ
सोच सूखा परौ करौ कर्म दुखदाहे कों।
ऐसी रस रासि रुचि उलही रहत सदा
कृपा दिखवैया काहू दिस देखौ काहे कों॥३३९॥

सवैया

हरि के हिय मैं जिय मैं सु बसी महिमा फिरि और कहा कहियै।
दरसै नित नैननि बैननि ह्वै मुसक्यानि सों रंग महा लहियै॥
घनआनँद प्रान पपीहनि कों रस प्यावनि ज्यावनि है वहियै।
करि कोऊ अनेक उपाय मरौ हमैं जीवनि एक कृपा चहियै ३४०
स्याम सुजान हिएँ बसियै रहैं नैननि त्यौं लसियै भरि भाइनि।
बैननि बोध विलास करै मुसक्यान सखी सों रची चित चाइनि॥
है बस जाके सदा घनआनँद ऐसी रसाल महा सुख-दाइनि।
चेरी भई मति मेरी निहारि कैं सील सरूप कृपा ठकुराइनि॥३४१॥

चैन कृपा फि र मान कृपा दग दृष्ट कृपा कस्र माभि कृपाई।
ग्यान कृपा गुन न कृपा मन ध्यान कृपा हरै आधि कृपाई॥
लोक कृपा पर क कृपा लहिए सुख सम्पति साधि कृपाई।
यों सब ठाँ दरसै बरसै धनआनँद भीजि अराधि कृपाई ॥३४२॥

कवित्त

मंजु गुंज करै राग रचे सुर भरै प्रेम
पुंज छबि धरै हरै दरप मनोज कौ।
चाव मतवारौ भाव भाँवरीन लेतु रहै
दत नैन चैन ऐन चोपनि के चोज कौ॥
और फूल भूलि रीझ भीजि घनआनँद यों
बंसी भयो एक वाही गुनगन ओज कौ।
बानी रसरानी वा मधुव्रत को लह्यौ जिन
कृपा मकरंद स्याम हृदय सरोज कौ॥३४३॥

सवैया

फीके सवाद परे सब ही अब ऐसो कछू रस प्रान कृपा कौ।
नीरस मानी कहै न लहै गति मोहि मिल्यो मन मान कृपा कौ॥
रीझनि लै भिजयो हियरा घनआनँद स्याम सुजान कृपा कौ।
मोल लिया बिन मोल अमोल है प्रेम पदारथ दानकृपा कौ ३४४
नैम लियौं सब बातनि तें अब बैठी है साधि कैं ग्यान महाव्रप।
प्रेम थप्यो घनआनंद रूप मों देखि तप्यो जग बाह कें आवप॥
कैसें कहै कछु भाई सवाद मिलै बड़ो बेर सो याहि मिल्यौ टप।
मैनहूँ जाको पुकार करै गुनमाल गहें जपै एक कृपा जप। ३४५॥

कवित्त

यै न कछू जाकी चाह तासों फल पायो
यातें वाही धनि कैं सरूप नैन कीन्यो घरु।
जहाँ राधा फेलि बेलि कुच की छवनि छायो
लसत सदाई फूल कालिंदी सुदेस यरु ॥
महा घनआनँद फुहार सुख सार सींचे
हित उत सघनि लगाय रंग भरो मरु।
प्रेम रस मूल फूल मूरति विराजै मेरे
मन आलबाल कृष्ण कृपा को कलपतरु ॥३४६॥

सवैया

ाहे कों सोचि मरै जियरा परी तोहिं कहा विधि बातनि की है।
धनआनँद स्याम सुजान सम्हारि तू चातिक ज्यों सुख जी है॥
से रसामृत पुंजहिं पायकै को सठ साधन छीलर छीहै।
ाको कृपा नित छाय रही दुख तापतें बैरि बचायही ली है॥३४७॥

कवित्त

साँवरे सुजान रंग संग मति रंग भीजी
दरस परस पैज पूरन बसीठि है।
एक गुन-हीन नहीं सूझत सरूप जाकौ
कृपा मद अंध ... सपने न नीठि है॥
सदा ... चातकनि
... सुद्ध ईठि है।

साधन असाधन त्यों सनमुख होत कैसें
सब दिसि पीठि कृपा मन तन डीठि है ॥३४८

सवैया

चातक चित्त कृपा घनआनँद चोंच को सोध सु क्योंकरि धारौं
त्यों रतनाकर दान समै बुधि जीरन चीर कहा लै पसारौं।
पै गुन ताके अनेक लखौं निहचै उर आनिकै एक बिचारौं।
कूल चढ़ाय प्रवाह बढ़ै यों कृपा बल पाय कृपाहि सहारौं॥३४९॥

कवित्त

हरिहू को जैतिक सुभाव छग हेरि लहे
दानी बड़े पै न मागे बिन ढरैं दातुरी।
दीनता न आवै तौलौं बंधु करि कौन पावै
साँच सौं निकट दूरि भाजैं देखि चातुरी॥
गुननि बँधे हैं निरगुन हू आनँदघन
गति और यहै गति चाहैं और जातु री।
आतुर न ह्वै री अति चातुर बिचार यहौ
और सब होलैं कृपाही कैं एक आतुरी॥३५०॥

सवैया

है गुनरासि हरौ गुनहीं गुन-हीनन मैं सब दोष समानैं।
हाहा हुतौ जिन मानियै जू बिन जाचें कहौ किन दानि बखानैं॥
कीजै बड़ाइ तिहारी कहा करौ हैं हमहूँ कहूँ नीकि बिकानैं।
बूझौ कहूँ कहा एक कृपा कर रावरे सौं मन के मनमानैं॥३५१॥

कवित्त

रही ना कसरि कछू साधन के साधिबे की
श्रम तें बचाइ राखैं सुखनि सों सानि हैं।
लोक परलोक भ्रम भूलि गए सुधि आएँ
चरित अनेक एक एक रसखानि हैं॥
तापु बापुरेनि की सिरानी आय नैंक ही मैं
छाए घनआनँद सुबात बस आनि हैं।
अब पहिचानि हमैं चाहियै न काहू संग
बिन पहिचानि कृपा लीन्हें पहिचानि हैं॥३५२॥

सवैया

जल मैं थल मैं भरि पूरि रही सम कै दिखरावति है बिसमैं।
सम रूप सदा गुनहीननि सों निजु तेज तें त्रासति ताप तमैं॥
घनआनँद जीवनरासि महा बरसै सरसै अरसै न गमैं।
तिन प्राननि संगम रंग अभंग कृपा दरसी सब ठौर हमैं॥३५३॥
कोऊ कृपा बल दूबरी ह्वै करि क्यों नहिं साधन के सब साधौ।
लीन कै लोयन प्रान मनौ किन कोऊ समाधिहिं ऐंचि अराधौ॥
मेरे कृपा घनआनँद है रस भीजें सदा जिहिं राधिका माधौ।
ता बिन वे श्रम सूल से हैं भ्रम भूल लहै सु न एक न आधौ॥३५४॥

कवित्त

साधन जितेक ते असाधन के नेग लगौ
साधन को महा मतसार गहि ताहि तू।

सवैया

सुधि भूलि रही मिलि ज्यों जल पै अब यों मन क्योंकरि फूलिहै जू।
मिटिहै तबहीं तिहि ताप जबै सुधि आवन की सुधि भूलिहै जू॥
घनआनँद भूलनि की सुधि कौ मति बावरी ह्वै रही झूलिहै जू।
सुधि कौन करै इन बातन की कबहूँ तौ कृपा अनकूलिहै जू॥३५८॥

कवित्त

रसिक रँगीले भली भाँतिनि छबीले घन
आनँद रसीले भरे महा सुख-सार हैं।
कृपा घनधाम स्यामसुंदर सुजान मोद
मूरति सनेही बिना बूझे रिझवार हैं॥
चाह आलबाल औ अचाह के कलपतरु
कीरति मयंक प्रेम सागर अपार हैं।
नित हित संगी मनमोहन त्रिभंगी मेरे
प्राननि अधार नंदनंदन उदार हैं॥३५९॥

सवैया

हारे उपाय कहा करौं हाय भरौं किहि भाय मसोस यों मारै।
रोवनि आँसू न नैन न देखै ज्यों मीन मैं ब्याकुल प्रान पुकारै॥
ऐसी दसा जग छायो अँधेर बिना हित मूरति कौन सम्हारै।
है तिनहीं की कृपा घनआनँद हाथ गहै पिय पाइनि पारै॥३६०॥
जिहि पाय की धूरि लौं जाय न पौन करै इहि गौन सु कौन समै।
तिहिं दूरि किती कहि औधि बिचारी विचारि तू क्यों न कहूँ बिरमै॥

गति बूझि परी किन सूझत रे कहियो न छिपै किहि धासु गमै
घनआनँद आदि कृपा नियरी भजि लै रसमै तजि दै विमसै॥३६१
औगुनहीं गुन मानि महा अभिमान मरचो अति उत्तम नीच मैं।
नीरसता सरस्यो नित पै अरस्यो न कहूँ मनि आरस कीच मैं॥
ऐसो अचेत जु साँच कियो भ्रम जीवन को सुख साधत मीच मैं।
ज्वाल जरचो अब होत हरचो हरि नेंक कृपा घनआनँद सीच मैं ३६२

कवित्त

दीन्यो जग जनम जनाई जे जुगति आछी
कहा कहौं कृपा की ढरनि ढरहरे हौ।
आनँद पयोद ह्वै सरस सींचे रोम रोम
भाव निरभर लै सुभाव गहि भरे हौ॥
जीवन अधार प्यारे आँखिन मैं आइ छाइ
हाय हाय अंग अंग संग रस ररे हौ।
ऐसे क्यों सुखैए सोच तापनि हरी है हरी
जैसे या पपीहा दीठि नीठिहू न परे हौ॥३६३॥
डगमगी डगनि धरनि छविही के भार
ढरनि छबीले उर आछी बनमाल की।
सुंदर बदन पर कोटिन मदन वारौं
चित घुमी चितवनि लोचन बिसाल की॥
कालिंद इहि गली अली निकरयो अचानक ह्वै
कहा कहौं अटक भटक तिहिं काल की।

भिजई हौं रोम रोम आनँद के घन छाई
बसी मेरी आँखिन में आवनि गुपाल की। ३६४॥
नंद को नवेलो अलबेलो छैल रंग भरयो
कालिह मेरे द्वार ह्वै कै गावत इतै गयौ।
बड़े बाके नैन महा सोभा के सु ऐन आली
मृदु मुसुक्याय मुरि मो तन चितै गयौ॥
तब तें न मेरे चित चैन कहूँ रंचकहू
धीरज न धरै सो न जानै धौं कितै गयौ।
नैकुही में मेरो कछु मोपैं न रहन पायो
औचकही आइ मद्र लूट सी बितै गयौ॥३६५॥
जाके उर बसी रसमसी छवि साँवरे की
ताहि और बात नीकी कैसें करि लागिहैं।
चपनि चपक पूरि पियो जिन रूप-रस
कैसे सो तरस रानी सीरनि सों पागिहैं॥
आनँद को घन स्यामसुंदर सजल अंग
छाड़ि धूम धूँधरि सौं कैसे कोऊ रागिहै।
ये तो नैन याही को मदन देरें तोरें रोम
और बात आन की सब आगति ज्यौं आगि है॥३६६॥
दिलन अनोखी बयौं है पोर म परत मन
पीर पूरे हिय में धरक जागिहै रहै।
मिलेंहूँ मिलें को सुख पायो न पलक एकौ
निपट विकल

प्रेम सों लपेटी कोऊ निपट अनूठी तान
मो मन चिवाइ गाइ लोचन दुराइगी ।
तब तें रही है घूमि झूमि जकि बावरी ह्वै
सुर की तरंगनि में रंग बरसाइगी ॥३७१॥
छबि की निकाई कहो मोहन कन्हाई कछू
बरनी न जाई जो लुनाई दरसति है ।
बारिधि तरंग जैसे धुनि राग रंग जैसें
प्रति छिन अधिक उमंग सरसति है ॥
किधौं इन नैननि सराही प्रान प्यारे रूप
रेलहि सकेलें तऊ दीठि तरसति है ।
ज्यों ज्यों उत आनन पै आनँद सु ओप औरै
त्यों त्यों इत चाहनि में चाह बरसति है ॥३७२॥
सुंदर सरस लोनो ललित रँगीली मुख
जोबन झलक क्योंहूँ कही न परति है ।
लोचन चपल चितवनि चाइ चोम भरी
भृकुटी सु ठौन भेद भाइनि ढरति है ॥
नासिका रुचिर अधरनि लाली सहजही
दँसनि दमन जोति जिपरा हरति है ।
नखसिख आनँद उमंग की तरंग बड़ी
अंग अंग आछी छबि छलक्यो करति है ॥३७३॥
ऐसे है मदेंगो ललचेंचो कठ अंग अंग
कचुकी मनैग रंग ऐंठनु चलति तें

सहज छबीले दसननि मैं रची री बीरी
अधर तरंगनि सुधा से उफलतु है ॥
छके छुवे कानवारों कोटि तीखे बान ऐसे
नैननि बिहँसि हेरि मैन निदलतु है ।
कारी घुघरारी अलकनि के छलानि छैल
बानिन लुभाई फिर प्रानिन छलतु है ॥३७४॥
रूप गरबीलो अरबीलो नंदलाड़िलो सु
हग मग उतरयो परत आछौ उर मैं ।
काननि ह्वै प्राननि निकासि लेत एरी बीर
ऐसी कछू गावत मधुर बंसी सुर मैं ॥
डोरिए दरेरनि निदरि लाज देखिबे कों
पौरि पौरि याही रौरि माची ब्रज पुर मैं ।
कैसे करि जीजे बसि कीजै कहा महा सोच
धारयो भ्रोर चलत चबाव लघु गुर मैं ॥३७५॥
पीरे पीरे फूलनि की माला रचि हिए धारि
वारि वारि वाही कौं सफल करै काय कौं ।
ऐसे धीर काँचे पूरे प्रेम रंग राचे वीर
पीरे फल चाखैं अभिलाषैं नीके दाय कौं ॥
डोलैं बन बन बावरे ह्वै साँवरे सुजान
धाइ धाइ मेटैं भावतो ही दिस बाय कौं ।
उमगि उमगि घनआनँद मुरलिका मैं
गौरी गाइ हौरे सौं बुलावैं गोरी गाय कौं ॥३७६॥

तेरें हित हेली अनुराग बाग बेली करि
मुरली गरज झूमि झूमि सरसतु है।
लोने अंग रंग जानि चंचला छटा सी पट
पीत कौं उमगि लै लै हियें परसतु है॥
चाह के समीर की झकोरनि अधीर ह्वै ह्वै
उमड़ि घुमड़ि याही ओर दरसतु है।
लोचन सजल क्योंहूँ उघरैं न एकौ पल
ऐसें नेह नीर घनस्याम बरसतु है॥३७७॥
आई आन गावँ तैं नवेली पास पायसें सु
गुरुजन लाज के समाजनि मैं आवरी।
आनँद सरूप आली साँवरौ तक्यो तो कहूँ
डीठि के मिलत बढ़ि परयो चित चाव री॥
रीझि परबस पर बस न चलत कछू
ऐसे ही मैं हेरी को रँगीली बन्यो दाव री।
दिनही में तृन सम कानि के कपाट तोरि
घूँघरि अबीर की कौ मानति विभावरी॥३७८॥
गोरी बाल थोरी बैस लाल पै गुलाल मूठि
तानि कै चपल चली आनँद उठान सौं।
बायें पानि घूँघट की गहनि चहनि ओट
चोटनि करति अति तीखे नैन बान सौं॥
कोटि दामिनीनि के दलनि दल मलि पाय
दाय जीति आइ झुंड मिली है

मीड़िबे के लेखे कर मीड़िबोई हाथ लग्यो
सो न लगी हाथ रहे सकुचि सखान सौं ॥३७९॥
नीकी नई केसर को गारौहू गरब गारै
फीकी रारि गारि सो निहारैं रूप गोरी को।
चारु चुहचुही मैंजी एड़िनि ललाई लसैं
चपरि चलतु च्वै धरन भूकी चोरी को॥
हँसि घालैं कारिक कपूर सोंधे घारि ढारि
झारि झारि दीजै हो कलंक इन्हैं चोरी को।
प्यारे घनआनँद के राग भाग फाग देखौ
रस भीजे अंगनि अनूठो खेल होरी को ॥३८०॥

सवैया

प्रेम नई अनुराग-मई सु मई फिरै फागुन की मतवारी।
कौंवरे हाथ रचो मेंहँदी अरु नीके बनाइ हरे हियरा री॥
साँवरे भौर के भाय भरी घनआनँद रीति मैं दोसति न्यारी।
कान ह्वै पावति प्रानप्रियै सुख अंबुज ज्वै मकरंद सी गारी॥३८१॥
प्रिय के अनुराग सुहाग भरी रति हेरै न पावत रूप रफै।
रिझवारि महा रसरासि रिसवारि गनावलि गारि बनाइ बकै॥
अनिहौ मुकुतारि अंजनि मार भरे मधुरी हग छौंक छकै।
लपटै घनआनँद घायल ह्वै हग घायल ज्यौं गुजरी गुजकै ॥३८२॥

कवित्त

नई लहलई भई सुख आली अगनई
सरद सुधाधर अंशत आभा रद की।

अंग अति लोनी लसै ललित तिलोनी सारी
भाग भरे भाल दिपै वेंदी मृगमद की ॥
बोलै हो हो होरी घनआनँद उमंग बोरी
छैल मति छकै छवि देरैं रदछद की ।
रोरी भरि उठी गोरी भुज उठी सोहै मनौ
पराग सौं रली भली कली कोकनद की ॥३८३॥

सवैया

घूँघट ओट तकै तिरछी घनआनँद चोट सुघात बनावै ।
बाँह पसारि सुधारि बराबर और बराबरि ढूकति आवै ॥
कौंधि अचानक चौंध भरै पग औक सु चौकति छाइ न छ्वावै ।
वाल अनूठियै ऊठ गुलाल की मूठि मैं लालहि मूठि चलावै ॥३८४॥
दाँव तकै रस रूप छकै थिथकै गति पै अति चोपनि धावै ।
चौकि चलै ठठि छैल छलै सु छबीलो छराव लौं छाँह न छ्वावै ॥
घूँघट ओट चितै घनआनँद चोट विना अँगुठाहिं दिखावै ।
भावती गो वस ह्वै रसिया हिय हाँसनि सौं सनि आँखि अँजावै ३८५
पिय नेह अछेह भरी दुति देह दिपै वदनाई के वेह हुली ।
अविही गति धीर समीर लगें मृदु हेमलता जिम आव डुली ॥
घनआनँद खेल अलेल दँसै विलसैं सु लसै लट/भूमि भुली ।
सुठि सुंदर भाल पै भौंहनि बीच गुलाल की कैसी सुखी टिकुली ३८६
आछी तिलोनी लसै अँगिया गसि चोवा की वेलि विराजति सोहन ।
साँवरी पोति छरा छलकै छवि गोरी अँगेट लसैं सम कोइ न ॥

राग रचौ अनुराग जचौ सुनि है घनआनँद बाँसुरी बाजी।
मैन महीप बसंत समीप मतौ करि कानन सैन है साजी ॥३६०॥

कवित्त

पट्टी तें सिखा लौं है अनूठिए अँगेट आछी
रोम रोम नेह की निकाई मैं रही रसनि।
सहज सु छबि हेरें दबि जाहिं सबै थाम
बिनही सिंगार औरे आनिक बिराजै बनि ॥
गति लै चलत लखें मतिगति पंगु होति
दरसति अंग रंग माधुरी बसन छनि।
हँसनि लसनि घनआनँद जुन्हाई छाई
लागी चौंध चेटक अमेट ओपी औहें तनि ॥३६१॥

सवैया

पातरे गात किए नवसात निकाई सों नाक चढ़ाएई बोलै।
रांचे महावर पायनि त्यों तकि चायनि आइ गरजोरेई (१) डोलै ॥
स्यामहिं चाहि चलै तिरछी मनु रोलै खिझारि न घूँघट खोलै।
आली सों आनँद बालनि लागि मचावति धावनि घामरि घोलै ॥३६२॥
हरि नेह छकी तरुनाई के बेह सु गेह में लाज सों काज करै।
मिस ठानि चलै रसिया रहठानि* त्यों आनि मट्ट भैंखियानि भरै॥
घनआनँद रूप गरूर भरी धरनी पर सूधें न पाय परै।
पिय को हिय ताहि लखें अभिलाखनि लाखनि लाखनि भाँति भरै ३६३

---

* रहठानि = रहने का स्थान।

कवित्त

रही मिलि भीति पै समीति लोक लाज भरी
रीझो कहूँ स्यामै देखि दसा वाकी को कहै।
फंद की मृगी लौं छंद छूटिवे को नैको नाहिं
पारयो घोर कोरि कोरि भाँतिन सों रोक है॥
मोहन को बोल सुनें धुनै सीस मन ही में
धुनै सोच भारी गुनै गहि बूझै सो कहै।
उघरै न वास गुरुजन आसपास घन-
आनँद विनास कहा ब्रहा नेह झोक है॥३९४॥
तरुनाई वारुनी छकनि मतवारे मारे
झुकि धुकि धाइ रीझि उरझि गिरत हैं।
सम्हरि उठत घनआनँद मनोज ओज
निफरत बावरे न लाजनि घिरत हैं॥
सुघराई सान सों सुधारि मसि असि कसि
कर ही में लिए निस वासर फिरत हैं।
तेरे नैन सुभट चुटट चोट लागें वीर
गिरधर धीरता के किरचा करत हैं॥३९५॥

सवैया

चाल निकाई लखें बिनसै पचि पंगु मरालनिमाल बिसूरति।
पाय परै न परै मति पाय सचो तरसै घरसै न कछू रति॥
घूँघट बीच मरीचिनि की रुचि कोटिक चंदन को मद चूरति।
लाजन सों लपटी घनआनँद लाजन के हिय मैं हित पूरति॥३९६॥

कवित्त

सिसुताई निसि सियराई बाल ख्यालनि मैं,
जोबन बिभाकर उदोत आभा है रली।
गमागम बस भयो रस को सुभागमही
आगें तें अधिक अब लागन लगी भली॥
सकुच बिकच दसा देखैं मन आई मनौ
चाहत कमल होन कौन रूप की कली।
बड़भागी रागी चलि ऐहै अलि आनँद सों
आँखिनि सिरैहै रस लैहै भावतो अली॥३८७॥

अलप अनूप लटपटी सु लपेटी रूप
अलग लगी सी तामें केती सुध बाँक है।
कोटिक निकाई मृदुताई की अवधि सोधैं
कैसें कै रची है जामैं विधि बुधि राँक है॥
दीठि नीठि आवै कोऊ कहि क्यों बतावै जहाँ
भावहूँ के बोझ हिय होत नमि साँक है।
चलि चित चोरै मुरि मनहि मरोरै मुठि
सुभग सुदेस अलबेली तेरी लाँक है॥३८८॥

लाली अधरान की रुचिर मुसक्यान समै
सब सुख भोरही सिंदूरा की सी फैल है।
जोबन गरूर गरुवाई सों भरे बिसाल
लोचन रसाल चितवनि बंक छैल है॥

सुंदर सलोने लोने अंगनि की दुति आगें
मन मुरझानो मंद मैन को सो मैल है।
दुहूँ हाथ अंसनि तें पीरो पट ओढ़े लखि
ठाढ़ो सिंहपौरि रौरि परि थाकी गैल है ॥३९९॥

मंजु मोर चंद्रिका सहित सीस साँवरे के
कैसी आछी फबी छबि पाग पँचरंग की।
दारिम कुसुम के बरन झोने नीमा मधि
दीपति दिपति सु लक्षित लोने अंग की॥
मंजन करत तहाँ मन बनितान के निहारि
मोती मालहि बिचारि धार गंग की।
आनँदनि भरो खरो मुरली बजावै मीठी
धुनि उपजावै राग रागनी तरंग की ॥४००॥

सवैया

नैन के सैन में कोटिक मैन लजै रु भजै तजि के सर पाँचनि।
आनँदमैं मुसक्यानि लखैं पथिन्योई परै चित चाह की आँचनि॥
तापिय के हिय कौं हँसि हेरि लई जु ठई सु नई गति नाचनि।
नूपुर बीन सौं लीन कै प्यारी प्रबीन अधीन किए सुर साँचनि॥४०१॥

आव नए नए नेह के भार बिंधे बर ओर घनी बरुनी के।
आनँद मैं मुसक्यान उदोत मैं हेत है रोम समोत अमी (?) के॥
मोर की भावनि प्रान अँकोर किए तिनही बलि आए जही के।
हारियै जु तून तोरि कै लालन और दिनान तें लागत नीके॥४०२॥

नैन किए तरजो* दिन रैन रती वल कंचन रूपहिं तौलैं ।
बारह बानि बनी ठनी षोड़स प्यारी के प्रेम छकी नित डोलैं ॥
श्रीबनरानी के छत्र की छाँह करें सुख वारिधि माहिं कलोलैं ।
चाड़न काहू की लाड़ लड़ी इम यों री गरूर भरी नहिं बोलैं ॥४०३॥
पूरन चंद के चूरन कों तटधूरि हँसै सु कपूर कियो पति ।
जौ मघवा मणि को सत सोधि बयें तो कहा परसै पय की मति ॥
स्याम के संग पगी सब अंग लसै रसरंग तरंगनि की गति ।
आनँद मंजन आँखिन अंजन होत लखें सावता दुहिता अति ॥४०४॥
छैल नए नित रोकत गैल सु फैलत काँपैं अरैल भए हौ ।
लै लकुटी हँसि नैन नचावत बैन रचावत मैन तए हौ ॥
लाज अँचै बिन काज खगी तिनहीं सों पगी जिन रंग रए हौ ।
ऐंड़ सबै निकसैगी अबै घनआनँद आनि कहा उनए हौ ॥४०५॥
हैं उनए सुनए न कछू उघटै कत ऐंड़ अमेंड़ अमानी ।
मैन बड़े बड़े नैननि के बल बोलति क्यों है इती इतरानी ॥
दान दिएँ बिन जान न पाइहै आइहै जो चलि खोरि बिरानी ।
आगें अछूती गई सु गई घनआनँद आज भई मनमानी ॥४०६॥
जाइ करौ उहि माइ पै लाड़ बढ़ाइ चढ़ाइ किए इतने जिन ।
भीत की दौरनि खोरनि है सठता हठ बोरनि सो समझै बिन ॥
दान न कान सुन्यो कबहूँ कहूँ काहे को कौन दियो सु लयो किन ।
टोड़िक† है घनआनँद छोटव काटत क्यों नहीं दीनता सो दिन ॥४०७॥

---

* तरजो = तराजू ।
† टोड़िक = तुंदिक = भिखमंगा । भुक्खड़ । पेटू ।

सुंदर सलोने लोने अंगनि की दुति आगें
मन मुरझानो मंद मैन को सो मैल है।
दुहूँ हाथ अंसनि तें पीरो पट ओढ़े लखि
ठाढ़ो सिंहपौरि रौरि परि धाको गैल है ॥३९९॥
मंजु मोर चंद्रिका सहित सीस साँवरे के
कैसी आछी फबी छवि पाग पँचरंग की।
दारिम कुसुम के बरन झीने नीमा मधि
दीपति दिपति सु लखित लोने अंग की॥
मंजन करत तहाँ मन बनितान के निहारि
मोती मालहि बिचारि धार गंग की।
आनँदनि भरो खरो मुरली बजावै मीठी
धुनि उपजावै राग रागनी तरंग की ॥४००॥

सवैया

नैन के सैन में कोटिक मैन लजै रु भजै तजि कै सर पाँचनि।
आनँद मैं मुसक्यानि लखें पघिल्योई परै चित चाह की आँचनि॥
तापिय के हिय कों हँसि हेरि लई जु ठई सु नई गति नाचनि।
नूपुर धीन सों लीन कै प्यारी प्रबीन अधीन किए सुर साँचनि॥४०१॥
जात नए नए नेह के भार विंधे उर ओर घनी बरुनी के।
आनँद मैं मुसक्यान उदोत मैं होत है रोल बमोल अमी (?) के॥
भोर की आवनि प्रान अँकोर किए तितही चलि आए जहीं के।
हारियै जु तृन तोरि कै लालन और दिनान तें लागत नीके॥४०२॥

नैन किए तरजो* दिन रैन रती बल कंचन रूपहिं तौलैं ।
बारह बानि बनी ठनी षोड़स प्यारी के प्रेम छकी नित डोलैं ॥
श्रीधनरानी के छत्र की छाँह करें सुख बारिधि माहिं कलोलैं ।
बाड़न काहू की लाड़ लड़ी हम यों री गरूर भरी नहिं बोलैं ॥४०३॥
पूरन चंद के चूरन को तटधूरि हँसै सु कपूर किती पति ।
जौ मघवा मथि कों सब सोधि बयें तौ कहा परसै पय की मति ॥
स्याम के संग पगी सब अंग लसै रसरंग तरंगनि की गति ।
आनँद मंजन आँखिन अंजन होत लखें सावता दुहिता अति ॥४०४॥
छैल नए नित रोकत गैल सु फैलत काँपै अरैल भए हौ ।
लै लकुटी हँसि नैन नचावत बैन रचावत मैन तए हौ ॥
लाज अँचै बिन काज खगौ तिनहीं सों पगौ जिन रंग रए हौ ।
ऐंड़ सबै निकसैगी अबै घनआनँद आनि कहा बनए हौ ॥४०५॥
हैं बनए सुनए न कछू उघटै कत ऐंड़ अमैड़ अमानी ।
बैन बड़े बड़े नैननि के बल बोलति क्यों हौ इती इतरानी ॥
दान दिएँ बिन जान न पाइहै आइहै जो चलि खोरि बिरानी ।
आगें अछूती गईं सु गईं घनआनँद आज भई मनमानी ॥४०६॥
जाइ करौ उहि माइ पै लाड़ बढ़ाइ बढ़ाइ किए इतने जिन ।
भौंह की दौरनि खोरनि है सठता हठ ओरनि सों समझें बिन ॥
दान न कान सुन्यो कबहूँ कहूँ काहे को कौन दियो सु लयो किन ।
टोड़िक† है घनआनँद डाँटत काटत क्यों नहीं दीनता सो दिन ॥४०७॥

---

* तरजी = तराजू ।

† टोड़िक = तुंदिक = भिखमंगा । भुक्खड़ । पेटू ।

सुंदर सलोने लोने अंगनि की दुति आगें
मन मुरझानो मंद मैन को सो मैल है।
दुहूँ हाथ अंसनि तें पीरो पट ओढ़े लखि
ठाढ़ो सिंहपौरि रौरि परि थाकी गैल है ॥३९९॥
मंजु मोर चंद्रिका सहित सीस साँवरे के
कैसी आछी फबी छबि पाग पँचरंग की।
दारिम कुसुम के बरन झीने जीमा मधि
दीपति दिपति सु ललित लोने अंग की॥
मंजन करत तहाँ मन बनितान के निहारि
मोती मालहि बिथारि धार गंग की।
आनँदनि भरो खरो मुरली बजावै मीठी
धुनि उपजावै राग रागनी तरंग की ॥४००॥

सवैया

गैन के गैन में कोटिक मैन लजै न भजै तजि कै सर पाँचनि।
आनँद मैं मुसक्यानि लसैं पथिन्योंई परै चित चाह की आँचनि॥
रावरिय के हिय को हँसि हेरि गई जु ठई सु नई गति मांचनि।
नूपुर धीन सो लीन कै प्यारी प्रवीन अधीन किए सुर सांचनि॥४०१॥
जात नए नए नेह के मार छिपे पर पीर घनी बदनी के।
आनँद मैं मुसक्यान चँदात मैं होत है रोम तमोल घमी (?) के॥
मोर की आवनि प्रान धँकार किए तिनही पखि आग [illegible] कै।
हारियै जु तन हारि कै लाजन भीर [illegible]

घनआनँद ओठ उमेठ किए कहिए कहा पै अब पैयत है।
रिझवारन पै गुन गाय रिझावहु देहि लली को निछावरि है॥४१३॥
स्याम सुजान सबै गुनखानि बजावत बैन महा सुर साचनि।
अंग त्रिभंग अनंग भरे दृग भौंह नचाइ नचावत नाचनि॥
कीरतिदा कुल मंडन ज्यौं निरखें भरि नैन बढ़ै सुखमाचनि।
दानहू दै चुकी है घनआनँद रीझ न ही रुकिहै हित आँचनि॥४१४॥
आवौ सखी चलि कुंज मैं बैठि लखें घनआनँद की सुघराई।
पैठन देहिं न एक सखै अकिलै इन्हें छेकि करैं मन-भाई॥
भावती टेक रही बहु भाँति किए न बनै अति ही कठिनाई।
लेति हौं राधे बलाय कहौ करि आज मनौ इतनी हम पाई॥४१५॥
राजदुलार भरी इकसार सुभाय मथें मन हारति पी कौ।
कुंज चली सुखपुंज अली सँग भाल बिराजत लाज को टीकौ॥
लोचन कोरनि छोरनि छ्वै मुसक्यानि मैं ह्वै दरसै हित ही कौ।
बोलनि बापुरी हारियै वारि लसैं घनआनँद रूप लली कौ॥४१६॥
रंग रह्यो सु न जात कह्यो उमह्यो सुखसागर कुंज मैं आएँ।
केलि परयो रस को झगरो अतिहीं अगरो निबरै न चुकाएँ॥
काहू सम्हारि रही न भटू तनकौ मन मैं घनआनँद छाएँ।
प्रेम पगे रिझवारन के तहाँ रीझि कै रीझहिं लेत बलाएँ॥४१७॥
आँखि हौं मेरी पै चेरी भईं लखि फेरि फिरैं न सुजान की घेरी।
रूप छकीं तितही बिथकीं अब ऐसी अनेरी पत्याति न मेरी॥
प्रान लै साथ परीं पर हाथ बिकानि की बानि पै कानि बगेरी।
पायनि पारि लई घनआनँद चाइनि बावरी प्रीति की बेरी॥४१८॥

रूपनिधान सुजान लखै बिन आँखिन दीठि को पीठि दई है।
ऊपलि ज्यों खरकै पुतरीन मैं सूल की मूल सलाक भई है॥
ठौर कहूँ न लहै ठहरानि की मूँदें सदा अकुलानि मई है।
बूड़त ज्यों घनआनँद सोच दई विधि व्याधि असाध नई है॥४१९॥
रसमूरति स्याम सुजान लखे जिय जो गति होति सुकासों कहौं।
चित चुंबक लोह लों चायनि च्वै चुहँटैं उहँटैं नहिं जेतो गहौं॥
बिन काज या लाज समाज के साजनि क्यों घनआनँद देह दहौं।
वर आवति यों छबि छाँह ज्यों हौं ब्रज छैल की गैल सदाई रहौं॥४२०॥
मुख हेरि न हेरत रंक मयंक सु पंकज छीवति हायन हौं।
जिहिं बानक आयो अचानक ही घनआनँद बात सुकासो कहौं॥
अब तौ सपने निधि लौं न लहौं अपने चित चेटक आँच दहौं।
वर आवत यौं छबि छाँह ज्यौं हौं ब्रजछैल की गैल सदाई रहौं॥४२१॥
रस सागर नागर स्याम लखें अभिलाषनि धार मझार बहौं।
सुन सूझत धीर को तीर कहूँ पचि हारि कै लाज सिवार गहौं॥
घनआनँद एक अचंभो बड़ो गुन हाथहूँ बूड़त कासों कहौं।
उर आवत यों छबि छाँह ज्यों हौं ब्रज छैल की गैल सदाई रहौं॥४२२॥
सजनी रजनी दिन देखें बिना दुख पागि उदेग की आगि दहौं।
अँसुवा हिय पै पिय धार परै बहि स्याम भरै सुठि आग गहौं॥
घनआनँद नीर समीर बिना बुझिबे को न और उपाय लहौं।
उर आवत यों छबि छाँह ज्यों हौं ब्रज छैल की गैल सदाई रहौं॥४२३॥
मन पारद कूप लौं रूप चहैं उमहै सु रहै नहिं जेतो गहौं।
गुन गाढ़नि आइ परै अकुलाइ मनोज के ओजनि सूल सहौं॥

आनँद चेटक धूप में प्रान घुटैं न छुटैं गति कासो कहीं।
भावत यों छवि छाँह ज्यों हीं ब्रज छैल की गैल सदाई गहीं ।४२४।

कवित्त

तरसि तरसि प्रान जान मन दरस कों
उमहि उमहि आनि आँखिनि बसत हैं।
विषम विरह कें विसिषि हिये घायल ह्वै
गहवर घूमि घूमि सोचनि सहत हैं ॥
सुमिरि सुमिरि घनआनँद मिलन सुख
करन सों आसापट कर लै कसत हैं।
निसि दिन लालसा लपेटें ही रहत लोभी
मुरझि अनोखी उरझनि में गसत हैं ॥४२५॥

मेरी मत बावरी ह्वै जाइ जान राय प्यारे
रावरे सुभाय के रसीले गुन गाय गाय।
देखन के चाय प्रान आँखन में झाँकै आय
राखी परचाय पै निगोड़े चलें धाय धाय ॥
बिरह विषाद छाय आँसुन की झरी लाय
मारै मुरझाय मैन
ऐसे घनआनँद

मधुर बिनोद श्रम जलकन मकर
मलय समीर सोई मोहनु दुगार है ॥
घन की घनक देखि कठिन बनी है आनि
घनमाली दूर आली सुने को पुकार है ।
बिन घनआनँद सुजान अँग पीरे परि
फूलत बसंत हमैं होत पतझार है ॥४२७॥

सवैया

रूपनिधान सुजान सखी जब तें इन नैननि नीके निहारे ।
डाठि थकी अनुराग छकी मति लाज के साज समाज बिसारे ॥
एक अचंभो भयो घनआनँद हैं नितही पल पाट उघारे ।
टारें टरैं नहीं तारे कहूँ सुलगे मनमोहन मोह के तारे ॥४२८॥
मेरोई जीव जो मारत मोहिं तो प्यारे कहा तुमसों कहनो है ।
आँखिनहूँ पहिचान तजी कछु ऐसोही भागनि को लहनो है ॥
आस तिहारियै हौं घनआनँद कैसें उदास भएँ रहनो है ।
जान है होत इतै पै अजान जो तौ बिन पावकहीं दहनो है ॥४२९॥
आस लगाय उदास भए सु करी जग मैं उपहास कहानी ।
एक बिसास की टेक गहाय कहा बस जो अब और ही ठानी ॥
ए हो सुजान सनेही कहाय दई किन बोरत हौ बिन पानी ।
यों उघरे घनआनँद छाय सुहाय परी पहिचानि पुरानी ॥४३०॥
अँगुरीन लौं जाइ भुलाइ तहीं फिरि आय भुलाइ रहै तरवा ।
थरि पायनि पूर ह्वै पैंड़नि ह्वै थरि धाय छकै छबि छाइ छरा॥

घनआनँद यों रस रीझनि भीजि कहूँ बिसराम बिलोक्यो न वा।
अलबेली सुजान के पायन पानि परचो न टरचो मन मेरो भवा ॥४३१॥
गुन बाँधि लियो हिय हेरतहीं फिर खेल कियो अतिहीं उरझै।
गसिगो कसि प्रीति के फंदनि मैं घनआनँद फंदनि क्यों सुरझै ॥
सुधि लेत न भूलिहूँ ताकी सुजान सुजानि सकौं न दुरी गुरझै ॥
अब याहीं परेखें उदेग भरचो दुख ज्वाल जरचो जुरझै मुरझै॥४३२॥

कवित्त

निरखि सुजान प्यारे रावरो रुचिर रूप
बावरो भयो है मन मेरो न सिखैं सुनै।
मति अति छाकी गति थाकी रतिरस भीजि
रीझ की उझलि घनआनँद रह्यौ उनै ॥
नैन बैन चित चैन है न मेरे बस मेरी
दसा अचिरज देखैा घूडति गहे गुनै।
नेह लाइ कैसे अब रूखे हूजियतु हाय
चंदही के चाय च्वै चकोर चिनगी चुनै ॥४३३॥
काहू कंजमुखी के मधुप है लुभाने जानैं
फूले रस भूले घनआनँद अनतहीं।
कैसें सुधि आवै बिसरें हूँ हो हमारी उन्हैं
नए नेह पागे अनुराग्यो है मन तहीं ॥
कहा करौं जी तैं निकसति न निगोड़ी आस
कौनै समुझी हो ऐसी बनिहै बनतहीं।

सुंदर सुजान बिन दिन दीन तम सम
बीतै तमी तारनि कतारनि गनतहीं ॥ ४३४ ॥

सवैया

जा मुख हाँसी लसी घनआनँद कैसें सुहाति बसी तहाँ नासी ।
जो हिय तें हतियै न हितू हँसि बोलन की कत कीजत हाँसी ।
पोपि रसै जिय सोखत क्यों गुन बाँधिहूँ डारत दोस की फाँसी ।
हाहा सुजान अचंभो अयान ज्यों भेद कै गाँस हि वेधत गाँसी ॥४३५॥
आड़ न मानति चाड़ भरी उघरीही रहै अति लाग लपेटी ।
ढोठि भई मिलि ईठ सुजान न देहि क्यों पीठ जु ढोठि सहेटी ।
मेरी है मोहि कुचैन करै घनआनँद रोगिनि लौं रहै लेटी ।
ओछी बड़ी इतराति लगी मुँह नेकौ अघाति न आँखि निपेटी ॥४३६॥
चाह बढ़्यो चितचाक चढ़्यो सो फिरै तितही इत नेकु न धीजै ।
नैन थकै छबि पान छकै घनआनँद लाज ल्यों रीझनि भीजै ॥
मोह मैं आवरी है सुधि बावरी सीख सुनै न दसा दुख छीजै ।
देह दहै न रहै सुधि गेह की भूलिहू नेह को नाँव न लीजै ॥४३७॥
रूप लुभाइ लगी तब तौ अब लागति नाहिं सुभाइ निमेखौ ।
जो रसरंग अभंग लह्यो सुरह्यो नहीं पेखियै लालनि लेखौ ॥
हौ घनआनँद एहो सुजान तऊ ये दहै दुखदाई परेखौ ।
आँखिनि आपनी आँखिनि देख्यो कियो अपनो सपनेऊ न देखौ ४३८
फैलि रही घर अंबर पूरि मरीचिनि बीचिनि संग हिलोरति ।
मौंर भरी उफनात खरी सु उपाव की नाव तरेरनि तोरति ॥

क्यों बचियै भजिहूँ घनआनँद पैठि रहैं पर पैठि ढढोरवि ।
जोन्ह अलै के पयोनिधि ज्यों बढ़ि बैरनि आज वियोगिनि बोरवि।४३९।
प्रान पखेरू परे तरफैं लखि रूप चुगौ जु फँदे गुन गाथन ।
क्यों हुविए हितपालि सुजान दया बिन ब्याध वियोग के हाथन ।।
घालत बान समान हियें सुलहै घनआनँद ज सुख साथन ।
हेहु दिखाइ दई मुखचंद लग्यो अब औधि दिवाकर आथन* ।४४०।

कवित्त

जल बूड़ि जरैं डीठि पाइहूँ न सूझि परै
अमो पिएँ मरैं मोहिं अचिरज अति है ।
चाँर सौं न हकैं बानी बिन बिया बकैं
दौरि परैं न निगोड़ी थकैं बड़ी भूतागति है ।।
लगें तारे खुलैं आँखैं प्यारी त्यों न लगै पिय
नींद भरी जगैं इन्हैं अनोखियै रति है ।
गुन बँधें कुल छूटैं आपौ दै उदेग लूटैं
उत जुरें इत टूटैं आनँद बिपति है ।।४४१।।
अंजन गंजत डीठि भंजन मलीन करै
रंजन समाज साज सजै उर पीर को ।
भूषन दगत गुन दूषन लगत गात
पूषन† मुकुर अंग सोखै संग पीर को ।।
जीवौ विषज्वालजीतै बीतै घनआनँद यौं
बन भौन कौन है धरैया अब धीर को ।

---

* आथन = अथवना, अस्त होना । † पूषन = सूर्य ।

रंग रस परस सुजान के हरस बिन
तीर तें सरस यहै परस समीर को ॥४४२
बहुत दिनानि की अवधि आस पास परे
खरे अरबरनि भरे हैं बढ़ि जान कौं।
कहि कहि आवन सँदेसौ मनभावन कौ
गहि गहि राखत हीं दै दै सनमान कौं ॥
झूठी बतियान के पत्यान तें उदास ह्वै कै
अब न घिरत घनआनँद निदान कौं।
अधर लगे हैं आनि करिकै पयान प्रान
चाहत चलन ये सँदेसौ लै सुजान कौं ॥४४३॥

सवैया

जोरि कै कोरिक प्राननि भावते संग लिए अँखियान मैं आवत।
भीजे कटाच्छनि सों घनआनँद छाइ महारस को बरसावत॥
ओट भएँ फिर या जिय की गति जानत जीवनै ह्वै जु जनावत।
मीत सुजान अनूठियै रीति जिवाइ कै मारत मारि जिवावत।४४४।
लाखनि भाँति भरे अभिलाखनि कै पल पाँवड़े पंथ निहारैं।
लाड़िली चावनि लालसा लागि न लागत हैं मन मैं पन धारैं॥
यों रस भीजे रहैं घनआनद रीझे सुजान सुरूप निहारैं।
चायनि बावरे नैन कबै अँसुवानि सों रावरे पाय पखारैं ॥४४५॥
भाग जगे सजनी दिन कोटिक या रजनी पर वारे।

सौतिन ह्वै पिय पाइ इकांसैं भरे भुज सोच सकोच निवारे।
बैरिनि डीठि जरौ घनआनँद यौं जिय लै पल पाट उघारे ॥४४६॥
ह्वै निसवाद लजात रसौ मनु तेरें सुभाव मिठासहि पागैं।
भान न जान कहौं तुव आनन लागि न आन सों लोयन लागैं॥
चैन मैं सैन करे सब ओर तें भावते भाग जौ तो मिलि जागैं।
रंग रचै सुठि संग सचै घनआनँद अंगनि क्योंकरि त्यागैं॥४४७॥

कवित्त

दरसन लालसा ललक छलकनि पूरि
पलक न लागैं लगि आवनि अरबरीं।
सुंदर सुजान मुखचंद को उदै बिलोकें
लोचन चकोर सेवैं आनँद परब री॥
अंग अंग अंबर उमंग रंग भरि भारी
बाढ़ी चोप चुहल की हिय मैं हरबरी।
बूड़ि बूड़ि तरैं औधि थाह घनआनँद यौं
जीव सूक्यौ जाइ ज्यौं ज्यौं भीजत सरबरी॥४४८॥
देखें घनईखनि प्रतीति पेखियति प्यारे
नीठि न परत जानि डीठि किधौं छल है।
दीपति समीप की बिछोह माहिं पोहियति
आरसि दरस लौं परस ध्यान जल है॥
निपट अटपटी दसा सों चटपटी बीच
बूड़त बिचारौ जीव थाह क्योंहूँ न लहै।

कहा कहौं श्रानँद के घन जान राय हौ जू
मिलेहूँ तिहारे श्रनमिले की कुसल है ॥४४६॥
तूही गति मेरे मति नीछावरि करौ तेरे
रूप हेरे चोप कूप गिरो लेजु लाज की।
सुनिहौ सुजान श्रान तेरीयै पखेरू प्रान
परे प्रीति पास श्रास तोहित जिहाज(?) की॥
कीजै मन भाई इती कही मैं जताई तेरे
हाथही बड़ाई घनश्रानँद सुकाज की।
हा हा दीन जानि याकी वीनती ये लीजै मानि
दीजै श्रानि श्रौषधि वियोग रोगराज की ॥४५०॥
सबसों चिन्हारिहिं बिसारि पल टारे नाहिं
एक टक जोहिबे की जक जागियै रहै।
देखि देखि सुख भोइ हँसि परै रोइ रोइ
चौंकै चकि चाहनि मैं चिंता पागियै रहै॥
तोरि लाज साँकरैं घिरैहै सोभा साँकरैं
सु क्योंहूँ न निकाल श्रासपास लागियै रहै।
ऐसो कछू बानि चाह बावरे दृगनि श्राली
दरस मुकुंद लालसाई लागियै रहै ॥४५१॥
हित कै हँकारौ तौ हुलासनि सहनि धावै
श्रनपि बिडारैा तो बिचारौ न कछू कहै।
पाल्यो प्यार को तिहारौ नीकैं तुमही बिचारौ
हाहा जनि टारौ याहि द्वारौ दूसरौ न है॥

आनँद के घन हौ सुजान मान दियें कहीं
मान दै न कीजै मान दान दीजियै यहै ।
देखें रूप रावरो भयो है जीव बावरो
उमंगनि उतावरो ह्वै अंगनि स्यों ददै ॥४५२॥

सवैया

नीर की भीर अधीर भईं अँखिया दुखिया उमगीं झरना लौं ।
रोकि रही उर मैं सबही इन टेक यही जु गही सु दही हौं ॥
भीजि बरै पिय धार परें हिय आँसुनि यों पजरै बिरहा दौं ।
आनँद के घन मीत सुजान ह्वै प्रीति मैं कीनी अनीति कहा गौं ॥४५३॥

कवित्त

बिरह दवागिनि उठी है तन बन बीच
जवन सलिल कै सु कैसें नीचियै परै ।
अन्तर पुढ़ाई कटै चटकत साँस बाँस
आस लाँबी लवाह्न उदेग झर सों झरै ॥
दुख धूम धूँधरि मैं घिरे घुटें प्रान खग
अब लौं बचे हैं जो सुजान तन कौ ढरै ।
बरसि दरस घनआनँद अरस छाड़ि
सरस परस दै दहनि सबहौं दरै ॥४५४॥
रावरे गुननि बाँधि लियो हियो जानप्यारे
इते पै अचंभो छोरि दीनी जु सुरति है ।
बधरि नचाइ आपु चाय मैं रचाइ हाय
क्यों करि बचाइ छोठि यों करि दुरति है॥

तुमहूँ तें न्यारी है तिहारी प्रीति रीति जानी
ढोलेहूँ परें पै हिएँ गाँठि सी घुरति है ।
कैसें घनआनँद अदोसनि लगैयै खोरि
लेखनि लिखार की परेखनि मुरति है ॥४५५॥

सवैया

आपुन अंगनिअंग को रंग भरो रिस आनि कैं अंग पजारतु ।
रावरे चैन को ऐन हियो है सु रैन दिना यह मैन उजारतु ॥
और अनीति कहाँ लौं कहौं घनआनँद जो कछु आपदा पारतु ।
कैसे सुहाति सुजान तुम्हैं हितु मानि दई कोऊ ऐसें बिसारतु ।४५६।
हित भूलि न आवत है सुधि क्योंहूँ सु योंहूँ हमैं सुधि कीजतु है ।
चित भूलतौ भूलत नाहिं सुजान ज्यों चंचल ज्यों कछु धीजतु है ॥
दृढ़ आस की पासनि कंठ तैं फेरि कै घेरि उसासनि लीजतु है ।
अब देखियै कौलौं घिरै घनआनँद आव की दाव सो दीजतु है॥४५७॥
सुख चाहनि चाह उमाहन की घनआनँद लागी रहैं झरै ।
मनभावन मीत सुजान सँजोग बनै बिन कैसें बियोग टरै ॥
कबहूँ जो दईगति सों सपनौ सो लखौ तौ मनोरथ मोज भरै ।
मिलिहूँ न मिलाप मिलै तन कौ उर की गति क्यों करि ब्योरि परै।४५८
दुख धूम की धूंधरि मैं घनआनँद औ यह जीव घिरो घुटिहै ।
मनभावन मीत सुजान सों नातौ लग्यो तनकौ न तऊ टुटिहै ॥
तन जीवनप्रान कौ ध्यान रहै इक छोभ बच्यौ न तौऊ छुटिहै ।
रि प्यास की पास उसास गरें जु परी सु मरेंहूँ कहा छुटिहै ॥४५९॥

ए मन मेरे कहा करी तैं तजि दीन चल्यो जु प्रवीन है तो सौ ।
ल्यायो न काहू पै आँखि तरैं हौं कहूँ कबहूँ करि तेरौ भरोसौ ॥
मीत सुजान मिल्यो सु भली अब बावरे मोसो भरयो कित रोसौ ।
सोचत हौ अपने जिय मैं सपनेन लहौ घनआनँद दोसौ॥४६०॥
रीझि बिकाइ निकाइ पै रीझि थकी गति हेरत हेरन की गति ।
जोवन घूमरे नैन लखें मतवारी भई मति वारि कै भौ मति ॥
बानी बिलानी सुबोलनि मैं अनचाहनी चाह जिवावति है द्युति ।
जान के जीवन जानि परै घनआनँद याहू तै होति कहा अति॥४६१॥

कवित्त

कोऊ सुख मोरौ जोरौ कोरिक चवाव क्यों न
तोरौ सब कोऊ करि तोरो मेरें को सुनै ।
नेहरस हीन दीन अंतर मलीन लीन
दोसही मैं रहैं गहैं कौन भाँति वे गुनै ॥
रूप उजियारे जान प्यारे पर प्रान वारे
आँखिन के तारे न्यारे कैसे धौं करौं चुनै ।
टरै नहीं टेक एक यही घनआनँद जो
निंदक अनेक सीस रोसनि परे धुनै ॥४६२॥

सवैया

रावरे रूप की रीति नई यह जोहन रावरु लै गहि गोहन ।
जान न देत कहूँ कबहूँ तिन लेत है दै करि ठोढी को दोहन?॥
सूझ खये जु टरै घनआनँद बूझि परै न महा मति मोहन ।
देखे कहा जो न दोसौ इतै पर हाहा सुजान तिहारियै सौंहन ॥४६३॥

रीझि बिहारी न बूझि परै श्रहै। बूझति हूँ कहा रीझत काहैं।
बूझि कै रीझत है। जु सुजान किधौं बिन बूझि को रीझ सराहै॥
रीझन बूझौ तऊ मन रीझत बूझि न रीझै हू श्रौर निबाहै।
सोचनि जूझत मूझतु ज्यों घनश्रानँद रीझ श्रौ बूझहिं चाहै।४६४।

कवित्त

लहकि लहकि श्रावै ज्यों ज्यों पुरवाई पौन
दहकि दहकि त्यों त्यों तन ताँवरे तचै।
बहकि बहकि जात बदरा बिलोकें हियो
गहकि गहकि गहबरनि हिएँ मचै॥
चहकि चहकि डारैं चपला चखनि चाहैं
कैसे घनश्रानँद सुजान बिन ज्यो बचै।
महकि महकि मारै पावस प्रसूनबास
श्रासनि उसास दैया कौ लौं रहियै श्रँचै॥४६५॥

सवैया

लहौं जान पिया लखि लाखन प्रान पै वारिबे को श्रभिलाष मरौं।
सु कहौ केहि भांति श्रनोखियै पीर श्रधीर ह्वै नैननि नीर भरौं॥
घनश्रानँद कीजै बिचार कहा महा रंक लौं सोच सकोच ररौं।
चित चौंपन चाह के चौचँद मैं हहराइ हिराइ कै हारि परौं॥४६६।
घूँटे घटा चहुँघां घिरिकै गहि काढ़े करेजे। कलापिनि कूकैं।
सीरो समीर सरीर दहै चमकै चपला चख लै करि ऊकैं॥
एहो सुजान तुम्हें लगे प्रान सुपावस यों तजि प्यावस सूकैं।
ह्वै घनश्रानँद जीवनमूल धरौ चित मैं कित चातिक चूकैं।४६७।

मो दृग तारनि जो पै तिहारो निहारिबोई है महासुख लाहो ।
तो पै कहा हो हठीले सुजान ये चाहैं परे तुम नेकौ न चाहो॥
रावरी बानि अनोखियै जानि कै प्रान रचे तेहि रंग सराहो ।
कै बिपरीत मिलौ घनआनँद या बिधि आपनी रीति निबाहौ॥४६८॥

कवित्त

ऊतर सँदेसौ मिलै मेल मानि लीजतु है
ताहूको अँदेसौ अब रह्यो चर पूरि कै ।
उठी है उदेग आगि जीजै कौन आस लागि
रोम रोम पोर पागि डारी चिंता चूरि कै ॥
निपट कठोर कियो हियो मोह मेटि दियो
जान प्यारे नेरे आइ मारौ कित दूरि कै ।
धरकौं बिसूरि कै बियान दरै मूरिकै
उड़ायहौ सरीरै घनआनँद यों धूरि कै ॥४६९॥
मोहि डोठि कारन हौ दुख तम टारन हौ
प्रीति पन पारन हौ कहाँ लों कहौं जसैं ।
लोचननि तारे अचरज भारे जान प्यारे
तुमही तें पियत तिहारे रूप के रसैं ॥
बात अटपटी बड़ी चाह चटपटी रहै
भटभटो* लागै जोपै पाँच घरनी बसैं ।
लैलै प्रान वारौं इकटक धरौं यों बिचारौं
हा हा घनआनँद निहारौ दीन को दसैं ॥४७०॥

* भटभटी लगना = दिखलाई न पड़ना ।

मयथि सिराएँ साप सानें हूँ कलमलाय
आपु चाय थावरे उमहि उफनात हैं।
दरस दुखारे चैन वंचित बिचारे हारे
आँखिन के मारे आइ वहीं मड़रात हैं॥
इते पै अमोही घनआनँद रुखाई हर
सोचनि समाइ कै थहरि ठहरात हैं।
जानि मनसौहीं यानि लाड़िले सुजान को
सुफरिहू पयान प्रान फेरि फिरि जातु हैं॥४७१॥
माहस सयान ज्ञान ताकत तुम्हें सुजान
तबही सबनि तज्यो अब हौ कहा तजौं।
रावरेई राखे प्रान रहे पै दहै निदान
यौंही इन काज लाज बिन हौं खरो लजौं॥
ऐसी कै बिसारी गौं तिहारी न बिचारी परै
आनँद के घन हौ अमोही जो ढरौ अजौं।
कौन विध कीजै कैसे जीजै सो बताइ दीजै
हा हा हो बिसासी दूरि भाजत तऊ भजौं॥४७२॥
घेरयो घट आय अंतराय पट निपट पै
तामधि उजारे प्यारे पानुस के दीप हौ।
लोचन पतंग संग तजै न तऊ सुजान
प्रान हंस राखिबे कों धरे ध्यान सीप हौ॥
ऐसे कहीं कैसे घनआनँद बताऊँ दूरि
मन सिंहासन बैठे सुरत महीप हौ।

डीठि आगे डोलौ जो न बोलौ कहा बसु लागै
मोहि तो वियोग हू मैं दीसत समीप हौ ॥४७३॥

सवैया

हित भूलनि पै कित भूलि रहे अहो भूलहू नीके न जानत हौ।
इहि सूलनि संग लगी सुधि है जु सुजान सदा उर आनत हौ॥
घनआनँद सोऊ न भूलतक्योंजो पै भूलि ही कों ठिक ठानत हौ।
तब भूलिकै लैहौ कछू सुधि तौ चितदै इतनौ किन मानत हौ।४७४।

कवित्त

अलग भयो है लगि तुम्हें और ठौरनि तें
सुलग्यो करतु ऐसी गति लागी मो हिए।
क्यों हूँ न परत गह्यो रह्यो गहि एक टेक
आनँद के घन आप अधिक असोहिए॥
खरक दुहेली हो असूझ रूप रावरे की
डीठि पाइ काँटौ कहौ कौन बिध टोहिए।
जब तें, सुजान प्रान प्यारे पुतरीनि तारे
आँखिन बसे हौ सब सूनो जग जोहिए॥४७५॥
जब ते निहारे इन आँखिन सुजान प्यारे
तबते गही है उर आन देखिबे की आन।
रस भीजे बैननि लुभाइ कै रचे हैं तहाँ
मधु मकरंद सुधा नावो न सुनत कान॥
प्रान प्यारी ज्यारी घनआनँद गुननि कथा
रसना रसीली निसिबासर करत गान।

अंग अंग मेरे उनही के संग रंग रँगे
मन सिंघासन पै बिराजे तिनही को ध्यान॥४७६॥

सवैया

ढिग बैठे हू पैठि रहै उर मैं घर कै दुख दोहन दोहतु है।
दृग आगे तें बैरी टरै न कहूँ जगि जोहन अंतर जोहतु है॥
घनआनँद मीत सुजान मिलै बसि बीच तऊ मन मोहतु है।
यह कैसी सजोग न बूझि परै जु वियोग न क्योंहू बिछोहतु है॥४७७॥

कवित्त

गहे एक टेक टारि दीने हैं बिबेक सब
कौन प्यार पीर पूरे नीरहि रितौत हैं।
कैसें कही जाय हेली इनकी दुहेली दसा
जैसे ये वियोग निसि बासर बितौत हैं॥
कहिबे को मेरे पै अनेरे येरे जाहिं नाहिं
अतिही अमोही मोहि नैको न हितौत हैं।
जबतें निहारे घनआनँद सुजान प्यारे
तबतें अनोखे दृग कहि न चितौत हैं॥ ४७८॥

बेध्यो लै बिसासी मोह गाँसी नेकु हाँसी ही मैं
घूमि घूमि मेरो घनो मरम महा पिराय।
होत न लखाय क्योंहूँ हाय हाय कहा करौं
जरौं विषज्वाल पै न काल कैसेंहूँ निराय॥
जीवन की मूरि जाहि मान्यो तिन चूरि करी
खरी विपरीति दई हेरि हियरो हिराय।

हैरी घनआनँद सुजान वैरी पैंड़े परयो
हैरी अब ऊतर यों धीरहू चल्यो घिराय॥४७६॥

सवैया

जिनही बरुनीन सों बेध्यो हियो तिनही दृग हाथ सिवावत हो।
बिषबोए कटाछन ही हँसि दै जु सुजान सुधाही पिवावत हो॥
मनबोले रहो जू अनोखे अजी रस मैं अब रोस दिखावत हो।
घनआनँदचूकौनदावकहूँ फिरि मारनचाव जिवावत हो॥४८०॥

कवित्त

मोहिं दुख दोष सौंपै पोषै सुख तोहि मोहिं
चिंता चित्त चूरि तोहि राखै निधरक है।
रोय के जगावे मोहि बिहँसावे स्वावै तोहिं
तेरें भूल भरै मोहि सालै ज्यों करक है॥
तोहि चैन चाँदनी मैं सरसै हरष सुधा
मोहिं जारैं मारै है बिषाद को अरक है।
कहूँ घनआनँद घुमंड उघरत कहूँ
नेह की विषमता सुजान अंतरक है॥४८१॥
लालसा ललित मुख सुखमा निहारिबे की
बरनी परै न ज्यों भरी है नैन छाय कै।
ठौर के सँकोच ढोठिहूँ कों अति सोच बाढ़यो,
बिना तुम्हैं कहौ और कहाँ रहैं जाय कै॥
बानिक निकाई नीके हेरिए सुजान हौजू
कीजिए कहाधौं सोऽब दीजिए बताय कै।

एक ठाँव दुहुनि बसीए सुख दुख कैसें
छाहा घनआनँद सुरस बरसाय कै ॥४८२॥
सोभा लोभ लागि अंग रंग संग प्रीति पागि
जागि जागि नेकौ न निमेख टेक सों टरी।
बोलनि चितौनि चारु डोलनि कलोलनि सों
चाहि चाहि रंक लों सु संपति हिए घरी॥
ऐसे ही में असह बिरह कितहूँ तें आय
बावरे सुभाय बस कुटिलाई है करी।
अब घनआनँद सुजान प्रान दान भेटौं
बिधि बुधि आगर पैं जाँचत वहै घरी॥४८३॥

* इति *

घनानंद जी की यथालब्ध पद-रचना

शृंगार वर्णन चौताला

मंजन करि कंचन चौकी पर बैठीं बाँधत केसन जूरो।
रुचिर* भुजनि की उचनि अनूपम ललित करनि बिच झलकत चूरो॥
लाल जटित लस† भाल सु बेंदी अरु सोहै‡ सुचि माँग सिंदूरो।
आनँदघन प्यारी मुख ऊपर वारों कोटि शरद शशि पूरो॥१॥

खंडिता

लाल तुम कहाँ तें आए जगे।
अंजन अधरन भाल महाउर चरन धरत डगमगे॥
अलसी अँखियाँ नैन घुमावत बोलत बोल न लगे।
आनँदघन पिय वहईं जाउ तुम जहाँ तुम्हारे सगे॥ २॥

लगन

स्याम सुजान के बिन देखें अटपटाय कहुँ ना लागै मन।
नैकहुँ कै न्यारे भए नीर भरि आवैं मेरे नैननि लीने हैं री पन॥
कहा करौं मन परवस परि गयो इनहिं दुख छिन छिन छीजत तन।
आनँदघन पिय सों कहा कहिए उनकी हाँसी और को मरन॥ ३॥

राग मालकोश

लहकन लागे री बसंत बहार मानो बनवारी लग्यो महकन।
ना जानौं अब कहा करैंगे लागे हैं पलास द्रुम दहकन॥

पाठांतर—* नैसिये। † रुचि। ‡ कहुक रह्यो फबि।

मदन भरत केकी कूक काढ़त परन परन द्रुम पुष्प लागे महक
आनँदघन तुम कित हो विरम रहे इत कोकिला लागे कुहकन ॥

धमार । राग कान्हरो

मो सौं होरी खेलन आयो ।
लटपटी पाग अटपटे पेचन नैनन बीच सुहायो ॥
डगर डगर में घगर घगर में सबहिन के मन भायो ।
आनँदघन प्रभु कर दग मीड़त हँसि हँसि कंठ लगायो ॥ ५ ॥

राग रामकली

होरी के मद माते आए लागं हो मोहन मोहि सुहाए
चतुर खेलारिन बस करि पाए खेलि खेलि सब रैनि जगाए
दग अनुराग गुलाल भराए अंग अंग बहुरंग रचाए ।
अबिर कुंकुमा केसरि लैकैं चोवा की बहु कीच मचाए ॥
जिहि जाने तिहिं पकरि नचाए सर्वस फगुवा दे मुकराए ।
आनँदघन रस बरसि सिराए भली करी हमही पैं छाए ॥ ६

राग सारंग

सो थांकै डफ बाजे हैं री, नंदनँदन रसिया के ।
अबकी होरी धूम मचैगी गलिन गलिन अरु नाके नाके ॥
कोउ काहू की कानि न मानत ग्वाल फिरैं मद छाके छाके ।
आनँदघन सों उघरि मिलैगी अब न चलै मुँह ढाँके ढाँके ॥ ७ ।

राग काफी

मन मैं तुम्हरे कौन बात है सोई क्यों न कहौ।
कहिहौं जाइ आज जसुमति सों नाहक मग न गहौ॥
आनँदघन तापैं नहिं मानत लरिका ह्वै नियहौ॥ ८॥

भाजि न जाइ आज यह मोहन सब मिलि घेरो री।
अंजन आँजि माहि मुख मरवट फिर मुख हेरो री॥
गारी गाय गवाइ लाल कूँ करि लो चेरो री।
आनँदघन बदलौ जिन चूकौ अँसुवा टेरो री॥ ९॥